कुरुक्षेत्र

ग्रामीण विकास को समर्पित

वर्ष 68 अंक : 1 पृष्ठ : 52 नवंबर 2021 मूल्य : ₹ 22

ग्रामीण भारत में खेल

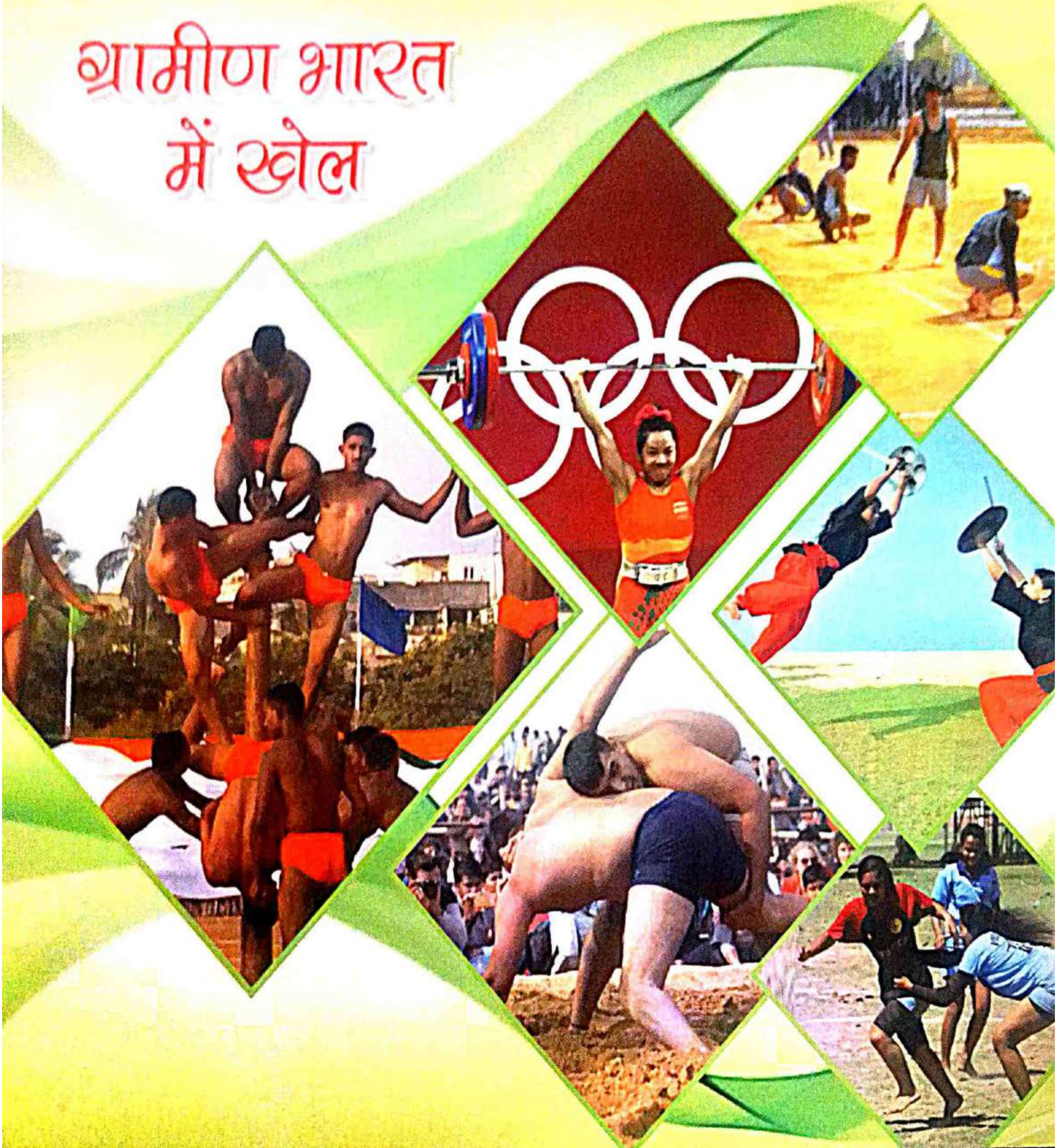

हमारे नए प्रकाशन

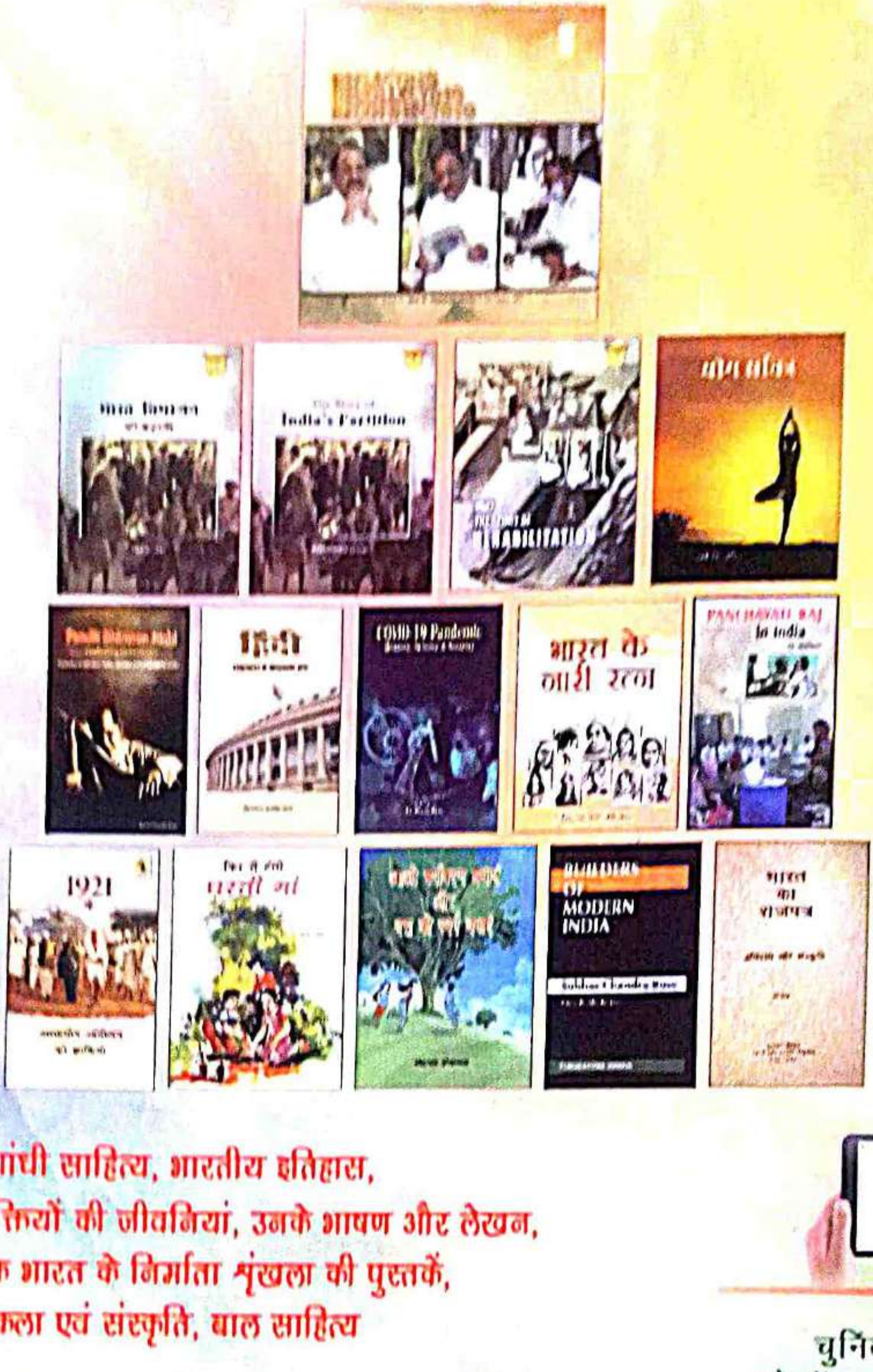

गांधी साहित्य, भारतीय इतिहास,
जाने-माने व्यक्तियों की जीवनियां, उनके भाषण और लेखन,
आधुनिक भारत के निर्माता शृंखला की पुस्तकें,
कला एवं संस्कृति, बाल साहित्य

चुनिंदा ई-बुक
एमेज़ॉन और गूगल प्ले
पर उपलब्ध

प्रकाशन विभाग
सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार

हमारी पुस्तकें ऑनलाइन खरीदने के लिए कृपया www.bharatkosh.gov.in पर जाएं।
ऑर्डर के लिए कृपया संपर्क करें : फोन : 011-24365609, ई-मेल : businesswng@gmail.com
वेबसाइट : www.publicationsdivision.nic.in

/dpd_india @DPD_India /publicationsdivision

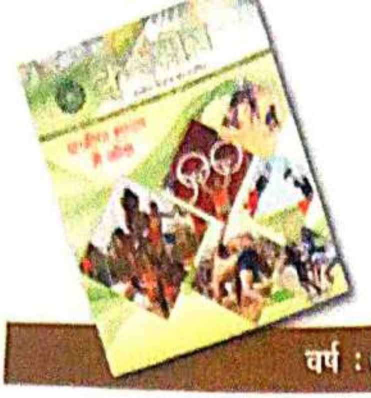

कुरुक्षेत्र

इस अंक में

वर्ष : 68 ★ मासिक अंक : 1 ★ पृष्ठ : 52 ★ कार्तिक-अग्रहायण 1943 ★ नवंबर 2021

वरिष्ठ संपादक : ललिता खुराना

उत्पादन अधिकारी : डी.के.सी. हृदयनाथ

आवरण : राजिन्द्र कुमार

सज्जा : मनोज कुमार

संपादकीय कार्यालय
कमरा नं. 655, प्रकाशन विभाग, सूचना भवन,
सी.जी.ओ. काम्प्लेक्स, लोधी रोड,
नई दिल्ली-110 003
ई-मेल : kuru.hindi@gmail.com

वेबसाइट : publicationsdivision.nic.in

@publicationsdivision

@DPD_India

@dpd_India

कुरुक्षेत्र सदस्यता शुल्क

पत्रिका ऑनलाइन खरीदने के लिए bharatkash.gov.in/product पर तथा ई-पुस्तकों के लिए Google play, Kobo या Amazon पर लॉग-इन करें।

वार्षिक : ₹ 230, द्विवार्षिक : ₹ 430, त्रिवार्षिक : ₹ 610

कुरुक्षेत्र की सदस्यता की जानकारी लेने, एजेंसी संबंधी सूचना तथा विज्ञापन छपवाने के लिए संपर्क करें–

अभिषेक चतुर्वेदी, संपादक, पत्रिका एकांश
प्रकाशन विभाग, कमरा सं. 779, सातवां तल,
सूचना भवन, सीजीओ परिसर,
लोधी रोड, नयी दिल्ली–110003

सदस्यता शुल्क जमा करने के बाद पत्रिका प्राप्त होने में कम से कम 8 सप्ताह का समय लगता है।

पत्रिका न मिलने की शिकायत हेतु इस पर मेल करें ई–मेल : pdjucir@gmail.com या दूरभाषः 011–24367453 पर संपर्क करें।

कुरुक्षेत्र में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। यह आवश्यक नहीं कि सरकारी दृष्टिकोण भी वही हो। पाठकों से आग्रह है कि कैरियर मार्गदर्शक किताबों/संस्थानों के बारे में विज्ञापनों में किए गए दावों की जांच कर लें। पत्रिका में प्रकाशित विज्ञापनों की विषय-वस्तु के लिए 'कुरुक्षेत्र' उत्तरदायी नहीं है।

भारत को 'खेल राष्ट्र' बनाने का लक्ष्य — 5
–डॉ. प्रेम सिंह, पीयूष प्रकाश

भारत में खेलों को प्रोत्साहन की दिशा में पहल — 11
-डॉ. नीलेश तिवारी

ग्रामीण क्षेत्रों में खेलों का विकास — 20
–राकेश थपलियाल

भारत में खेलों में तकनीकी क्रांति — 27
–कनिका वर्मा, मिशिका नय्यर

ग्रामीण महिलाओं की खेलों में बढ़ती भागीदारी — 31
–डॉ. श्रद्धा वशिष्ठ

खेलों में ग्रामीण भारत ने जगाई उम्मीद — 36
–इरतीफ मेहराज लोन

देश में खेलों के लिए आधारभूत ढांचा — 40
–राजेश राय

'चंदन की खेती एवं उसका स्वास्थ्य प्रबंधन' पर प्रशिक्षण कार्यक्रम — 44

'अतिथि देवो भव' : भारतीय पर्यटन क्षेत्र का विकास — 45
–डॉ. अमिय कुमार महापात्रा और डॉ. नंदीश वी. हिरेमठ

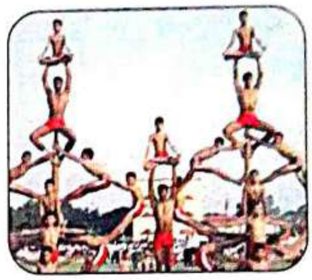

प्रकाशन विभाग के विक्रय केंद्र

नई दिल्ली	पुस्तक दीर्घा, सूचना भवन, सीजीओ कॉम्प्लेक्स, लोधी रोड	110003	011–24367260
दिल्ली	हाल सं. 196, पुराना सचिवालय	110054	011–23890205
नवी मुंबई	701, सी-विंग, सातवीं मंज़िल, केंद्रीय सदन, बेलापुर	400614	022-27570686
कोलकाता	8, एसप्लानेड ईस्ट	700069	033–22488030
चेन्नई	'ए विंग, राजाजी भवन, वसंत नगर	600090	044-24917673
तिरुअनंतपुरम	प्रेस रोड, नई गवर्नमेंट प्रेस के निकट	695001	0471-2330650
हैदराबाद	कमरा सं. 204, दूसरा तल, सीजीओ टावर, कवाडिगुड़ा सिकंदराबाद	500080	040-27535383
बैंगलुरु	फर्स्ट फ्लोर, 'एफ विंग, केंद्रीय सदर, कोरामंगला	560034	080-25537244
पटना	बिहार राज्य कोऑपरेटिव बैंक भवन, अशोक राजपथ	800004	0612-2683407
लखनऊ	हॉल सं-1, दूसरा तल, केंद्रीय भवन, क्षेत्र-ए, अलीगंज	226024	0522-2325455
अहमदाबाद	4–सी, नैप्च्युन टॉवर, चौथी मंज़िल, एचपी पेट्रोल पंप के निकट, नेहरू ब्रिज कार्नर, आश्रम रोड, अहमदाबाद	380009	079-26588669

संपादकीय

भारत में खेल सदियों से आम जनजीवन का हिस्सा रहे हैं। भारत में उमंग और उल्लासपूर्ण खेल गतिविधियों के होने के कई प्रमाण मौजूद हैं। रामायण और महाभारत जैसे हमारे महाकाव्य तीरंदाज़ी, कुश्ती, घुड़सवारी, रथदौड़ आदि जैसे खेलों की घटनाओं से पटे हुए हैं। उदाहरण के लिए महाभारत काल में कुश्ती एक अत्यधिक लोकप्रिय खेल रहा है। और आज भी भारत को कुश्ती में अंतर्राष्ट्रीय मंचों जैसे राष्ट्रमंडल खेल, विश्व चैंपियनशिप और ओलंपिक में प्राप्त कई उत्कृष्ट उपलब्धियों के कारण इस खेल में एक 'महाशक्ति' के रूप में जाना जाता है।

भारतीय ग्रामीण संस्कृति में खेलों को बहुत महत्व दिया जाता रहा है। शारीरिक सौष्ठव, आपसी प्रेम, मनोरंजन और समय का सही उपयोग खेलों के माध्यम से ही सीखा जाता है। इसलिए भारत के हर एक राज्य में ग्रामीण खेल विकसित हुए। इनमें कुछ खेल ऐसे हैं, जो क्षेत्रीय पहचान वाले है, जबकि अधिकांश खेल ऐसे ही हैं जो छोटे–मोटे बदलाव के साथ पूरे देश में प्रचलित हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में अधिकांश खेल बचपन, किशोरावस्था और युवावस्था के लिए हैं। इनमें शारीरिक क्षमता, कौशल, लगन और बुद्धिमत्ता–सब की परीक्षा होती है। कुश्ती, मुक्केबाज़ी, निशानेबाज़ी सहित खो–खो, क्रिकेट और फुटबॉल जैसे खेल भी भारत के तक़रीबन हर गांव में खेले जाते हैं।

टोक्यो ओलंपिक कई मायनों में भारत के लिए ऐतिहासिक रहा है। भारत ने कई 'स्वर्ण' हासिल किए, और पदकों का अकाल समाप्त हो गया। पैरालम्पिक खिलाड़ियों का प्रदर्शन भी ऐतिहासिक रहा। ओलंपिक में भारत ने आज तक के सर्वाधिक कुल सात पदक हासिल किए, वहीं पैरालम्पिक खिलाड़ियों ने भारत को कुल 19 पदक दिलाए। निसंदेह टोक्यो ओलम्पिक में हासिल हुई सफलता से देश के लाखों–करोड़ों युवाओं को प्रेरणा और हिम्मत मिली है और इस सफलता से भारत में 'खेल के एक नए युग' की शुरुआत हुई है।

टोक्यो ओलम्पिक में अधिकतर पदक विजेता ग्रामीण पृष्ठभूमि से संबद्ध हैं जो काफी संघर्ष करके यह मुकाम हासिल कर पाए हैं। उनकी ग्रामीण पृष्ठभूमि इस बात का प्रमाण है कि ग्रामीण भारत असाधारण प्रतिभाओं से पटा हुआ है। ज़रूरत है तो उन्हें 'तलाशने' और 'तराशने' की। सरकार तो इस दिशा में प्रयासरत है ही; साथ ही, नई शिक्षा नीति, जिसमें खेल को पाठ्यक्रम का अपरिहार्य हिस्सा बनाने का प्रावधान है, आने वाले समय में इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी।

ग्रामीण भारत में विभिन्न प्रकार के अनेक खेल आयोजन देखने को मिलते हैं जो प्रत्येक राज्य के स्थानीय और अनूठे हैं। पंजाब में किला रायपुर खेल उत्सव का आयोजन किया जाता है, जो 'ग्रामीण ओलंपिक' के तौर पर मशहूर है। इसी तरह, केरल का 'कलारीपयट्टू' प्राचीन मार्शल आर्ट का स्वरूप है। मार्शल आर्ट के इस स्वरूप में शरीर और मन के बीच संतुलन स्थापित करने पर फोकस किया जाता है। पूर्वोत्तर राज्य मणिपुर में रग्बी की तरह का एक खेल है, जिसे 'युबी लकपी' कहा जाता है। हिमाचल प्रदेश 'थोडा' जैसे खेल का ठिकाना रहा है। यह खेल पेंटबॉल और तीरंदाजी का मिला–जुला रूप है। मध्य भारत में तरह–तरह के कसरत–व्यायाम (जिमनास्टिक) की शुरुआत हुई जिसे 'मल्लखम्ब' के नाम से जाना जाता है। मलखम्ब की अंतर्राष्ट्रीय–स्तर पर प्रतियोगिताएं आयोजित की जाती हैं और मध्य प्रदेश का तो यह राज्य खेल है। टोक्यो ओलम्पिक में मलखम्ब का प्रदर्शन किया जाना तय था लेकिन प्रतिबंधित दिशानिर्देशों के चलते यह संभव नहीं हो पाया।

उल्लेखनीय है कि एथेंस में 1896 में हुए पहले आधुनिक ओलम्पिक खेलों में एक भी महिला ने शिरकत नहीं की थी। ऐसा माना जाता था कि महिलाओं को शामिल करना अव्यावहारिक होगा। महिलाओं ने पहली बार साल 1900 में आयोजित दूसरे पेरिस ओलंपिक में हिस्सा लिया था। भारत में भी महिलाओं के खेलों में भाग लेने को लेकर सकारात्मक माहौल नहीं रहा है। पहलवानी में तो महिलाओं का दूर–दूर तक नामोनिशान तक नहीं था लेकिन ओलंपिक में पदक जीतने वाली पहली भारतीय महिला पहलवान साक्षी मलिक जैसी महिला खेल पहलवानों की एक नई पीढ़ी का उदय हुआ है जिन्होंने राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर असाधारण प्रदर्शन किया है और महिलाओं की 'कोमल' छवि को बदला है।

अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र में पिछले कई वर्षों में भारत कुछ खेलों में एक बड़ी ताकत के रूप में उभरा है। लेकिन खेल संस्कृति देश के कुछ हिस्सों तक ही सीमित है। भारत दुनिया के उभरते हुए देशों में शामिल है और यहां खेल से जुड़े कई कारोबारी अवसर भी मौजूद हैं। क्रिकेट और हॉकी में शहरी भारत के लोगों की काफी दिलचस्पी है, जबकि गांवों और शहरों में अभी भी पारंपरिक खेलों का प्रचलन जारी है।

खेलों की दुनिया का संबंध पहले सिर्फ मनोरंजन से था और अब इसका दायरा काफी व्यापक हो गया है, जिसमें अलग–अलग पक्ष शामिल हैं। अत्याधुनिक तकनीक के आगमन के साथ ही खेल उद्योग में भी बदलाव हो रहे हैं। टोक्यो ओलंपिक में भारत की सफलता का श्रेय काफी हद तक खेलों से जुड़ी आधारभूत संरचना और तकनीक में निवेश को भी जाता है। इसी के मद्देनज़र सरकार तकनीक के क्षेत्र में बड़े पैमाने पर निवेश कर रही है और निजी क्षेत्र को इस ओर आकर्षित करने के पुरज़ोर प्रयास किए जा रहे हैं।

संक्षेप में, खेल न केवल आज विश्व–स्तर पर एक बड़े कारोबार के रूप में उभरा है बल्कि खेल हमारे शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के लिए भी बहुत ज़रूरी हैं। केंद्र सरकार की 'फिट इंडिया' मुहिम इसी दिशा में एक सार्थक पहल है। भारत सरकार ने हाल के वर्षों में भारत को एक 'खेल राष्ट्र' के रूप में स्थापित करने के लिए कई पहल की हैं जैसे कि खेलो इंडिया, टॉप्स (टारगेट ओलंपिक पोडियम योजना) आदि जिनमें ग्रामीण क्षेत्रों पर अधिक बल दिया जा रहा है। हालांकि ये पहलें प्रशंसनीय हैं परन्तु भारत के ग्रामीण और शहरी दोनों ही क्षेत्रों में एक सक्रिय खेल संस्कृति की स्थापना के लिए अभी एक लंबा सफ़र तय करना है। निसंदेह केंद्र सरकार पूरे प्रयास कर रही है लेकिन चूंकि 'खेल' राज्यों का विषय है इसीलिए इस दिशा में राज्यों का भी पूर्ण सहयोग वांछनीय है।

भारत को 'खेल राष्ट्र' बनाने का लक्ष्य

–डॉ. प्रेम सिंह, पीयूष प्रकाश

हाल ही में संपन्न हुए ओलंपिक खेलों में भारत की सफलता एक सराहनीय उपलब्धि है। भारत को इस बार कई खेलों में तो पहली बार पदक हासिल हुए हैं। ग्रामीण भारत के एथलीट इस प्रशंसनीय सफलता के नायक हैं। इनमें से कई खेलों की जड़ें खेलों की प्राचीन भारतीय परंपरा में मौजूद हैं। हालिया समय में भारत सरकार और राज्य सरकारों ने पेशेवर खेलों के लिए एथलीटों को तैयार करने के लिए कई पहल की हैं। लेकिन सही मायने में भारत के एक 'खेल राष्ट्र' के रूप में उभरने में अभी काफी समय है। खेल को बच्चों के विकासक्रम का एक हिस्सा बनाना होगा। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 स्कूलों और कॉलेजों में खेल को पाठ्यक्रम के अपरिहार्य भाग के रूप में एकीकृत करने का अवसर प्रदान करती है। स्कूलों और कॉलेजों का नेटवर्क खेल को हर घर तक पहुंचाने के लिए एक आदर्श प्लेटफार्म बनाता है। लेखक के विचार में 'एक राज्य एक खेल' जैसी पहल से खिलाड़ियों का स्तर बढ़ाने के साथ भावी चैंपियन तैयार किए जा सकते हैं।

टोक्यो ओलम्पिक भारत के लिए ऐतिहासिक रहा है– एक ऐसा आयोजन जिसे हमेशा याद रखा जाएगा। कई 'प्रथम' हासिल किए गए, और पदकों का अकाल समाप्त हो गया– भारत ने आज तक के सर्वाधिक सात पदक हासिल किए। नीरज चोपड़ा ने पुरुषों की भाला फेंक प्रतियोगिता में भारत को अपना पहला एथलेटिक्स स्वर्ण पदक दिलाया। भारत ने हॉकी में कांस्य पदक जीतकर 41 साल का पदक का सूखा समाप्त किया। मीराबाई चानू ने ओलंपिक में रजत पदक जीत एक अरब भारतीय लोगों की उम्मीदें जगाई और साथ ही उन्होंने ओलम्पिक में भारत को पहली बार 'ओपनिंग डे' पदक भी दिलाया। रवि दहिया, बजरंग पूनिया और लवलीना बोरगोहेन ने टोक्यो ओलम्पिक में कुश्ती और बॉक्सिंग में भारत के लिए एक रजत और दो कांस्य पदकों का योगदान दिया। अपनी उत्कृष्ट प्रतिभा और राष्ट्रसेवा की भावना के अलावा एक सामान्य सूत्र जो इन एथलीटों को जोड़ता है, वह है इनकी ग्रामीण पृष्ठभूमि। यह इस बात का प्रमाण है कि ग्रामीण भारत असाधारण प्रतिभा का पॉवरहाउस है। ग्रामीण भारत में विभिन्न प्रकार के अनेक खेल आयोजन देखने को मिलते हैं जो प्रत्येक राज्य के स्थानीय और अनूठे आयोजन होते हैं। इन खेलों ने कई उद्देश्यों की पूर्ति की है– लोगों को फिट रखना, सद्भाव बनाए रखना, रचनात्मक क्षेत्रों में युवाओं की ऊर्जा का उपयोग करना, उन्हें मादक पदार्थों के सेवन से दूर रखना और कई अन्य लाभ जिनमें युवा वर्ग को गरीबी की गिरफ्त से बाहर निकालना शामिल है।

भारत सरकार ने हाल के वर्षों में भारत को एक 'खेल राष्ट्र' के रूप में स्थापित करने के लिए कई पहल की हैं जैसे कि खेलो इंडिया, टॉप्स (टारगेट ओलंपिक पोडियम योजना) आदि जिनमें ग्रामीण क्षेत्रों में अधिक बल दिया जा रहा है। हालांकि ये पहलें प्रशंसनीय हैं परन्तु भारत के ग्रामीण और शहरी दोनों ही क्षेत्रों में

टोक्यो ओलम्पिक के सितारे

एक सक्रिय खेल संस्कृति की स्थापना के लिए अभी लंबा सफर तय करना है। इस लेख में भारत में खेल की प्रगति के मार्ग (ग्रामीण खेलों और ग्रामीण भारत पर फोकस करते हुए), खेलों के मूलभूत और बाह्य मूल्यों, केंद्र सरकार और राज्यों द्वारा किए गए पथ प्रदर्शक सुधार, राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 के परिप्रेक्ष्य में शिक्षा और खेलों में संयोजन और नीतिगत उपायों के माध्यम से ग्रामीण खेलों को फिर से जीवंत और संस्थागत बनाने के लिए कुछ उपाय सुझाए गए हैं।

भारत में ग्रामीण खेल : प्राचीन से आधुनिक काल तक

भारत में खेल सदियों से आम जनजीवन का हिस्सा रहे हैं। भारत में उमंगपूर्ण खेल गतिविधियों के मौजूद होने के कई प्रमाण हैं। रामायण और महाभारत जैसे हमारे महाकाव्य तीरंदाज़ी, कुश्ती, घुड़सवारी, रथ दौड़ आदि जैसे खेलों की घटनाओं से पटे हुए हैं। उदाहरण के लिए महाभारत काल में भी कुश्ती एक अत्यधिक लोकप्रिय खेल रहा है। मल्ल युद्ध के रूप में प्रचलित इस खेल में भीम, बलराम और जरासंध जैसे महान पात्रों के भाग लेने का वर्णन है–जिनका उल्लेख महाकाव्य में महानतम मल्ल योद्धाओं (पहलवानों) के रूप में किया गया है। आज भारत को कुश्ती में अंतर्राष्ट्रीय मंचों जैसे राष्ट्रमंडल खेल, विश्व चैंपियनशिप और ओलंपिक में प्राप्त कई उत्कृष्ट उपलब्धियों के कारण इस खेल में एक महाशक्ति के रूप में जाना जाता है।

कुश्ती जगत की महानतम घटनाक्रमों में से एक महिला कुश्ती की उन्नति और विकास है। इस एक बदलाव ने महिलाओं के लिए प्रयुक्त 'फेयरर सेक्स' की अवधारणा को समाप्त कर दिया है जिसे अक्सर महिलाओं के कोमल और शारीरिक रूप से कमज़ोर होने के लिए प्रयोग किया जाता है और इस प्रकार महिलाओं की लैंगिक भूमिका और व्यवसाय को चुनौती दी है। ग्रामीण भारत की युवतियों और महिलाओं के अपने रोल मॉडल हैं–जो उनके जैसे हैं, समान पृष्ठभूमि से आते हैं और सफल होने के लिए चुनौतियों का सामना करते हैं। फोगाट बहनों की असाधारण उपलब्धियों ने पुरुष प्रधान समाज के दृष्टिकोण को बदल दिया है। अब कई लैंगिक समानता के पक्षधर बन गए हैं और खेलों में लड़कियों को बढ़ावा देने लगे हैं। यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि साक्षी मलिक (ओलंपिक में पदक जीतने वाली पहली भारतीय महिला पहलवान) जैसी महिला खेल पहलवानों की एक नई पीढ़ी का उदय हुआ है जिन्होंने राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर असाधारण प्रदर्शन किया है। प्राचीनकाल से आज तक कुश्ती युवाओं को रोमांचित करती रही है और आधुनिक खेल जगत में भारत के बेहतर प्रदर्शन के पीछे इनका बड़ा योगदान है।

यह एक बड़ी उपलब्धि है कि इनमें से कई खेल अभी भी भारत में न केवल जीवित हैं बल्कि फल–फूल रहे हैं। कुछ अन्य प्राचीन ग्रामीण खेल, जो समय के उतार–चढ़ाव को झेल चुके हैं और ग्रामीण क्षेत्रों के युवाओं को आकर्षित करते आ रहे हैं, उनकी चर्चा यहां की जा रही है।

अ) मल्लखम्ब : अल्ट्रा जिम्नास्टिक्स

मल्लखम्ब जिम्नास्टिक्स का एक प्राचीन भारतीय संस्करण है जहां एक खिलाड़ी लकड़ी के एक उर्ध्व खम्भे के ऊपर या उसके साथ हवाई योग और जिमनास्टिक मुद्रा का प्रदर्शन करता है। यह खेल मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र के ग्रामीण इलाकों में बेहद लोकप्रिय है और इसका प्रदर्शन करने के लिए अत्यधिक सहनशक्ति, अभ्यास और अनुशासन की आवश्यकता होती है। मल्लखम्ब के सबसे पुराने लिखित विवरणों में से एक सातवीं शताब्दी ई. के चीनी यात्री ह्वेन सांग के संस्मरणों में पाया जा सकता है। उन्होंने प्रयागराज को एक ऐसा स्थान बताया जहां हिंदू तपस्वी योग अभ्यास के रूप में खम्बों पर चढ़ा करते थे। उनका कहना है कि हिंदू तपस्वी प्रयागराज में स्थित खम्बों के शीर्ष पर चढ़ गए थे, उनके एक हाथ और एक पैर उससे चिपके हुए थे जबकि दूसरा हाथ और पैर हवा में फैले हुए थे और इस मुद्रा में उन्होंने अपने सिरों को दायीं ओर मोड़ कर सूर्यास्त होते हुए देखा जो एक सूर्य अनुष्ठान को इंगित करता है[1]। आधुनिक समय में मल्लखम्ब के खेल को औपचारिक रूप से वर्ष 1958 में संस्थागत रूप दिया गया था जब इसे राष्ट्रीय जिम्नास्टिक चैम्पियनशिप में एक खेल के रूप में प्रस्तुत किया गया। इसके बाद 1962 में ग्वालियर, मध्य प्रदेश में पहली राष्ट्रीय मल्लखम्ब चैम्पियनशिप हुई। उसके बाद से खेल अपनी पहुंच और आकर्षण में इतना बढ़ चुका है कि मध्य प्रदेश की राज्य सरकार ने 2013 में 'मल्लखम्ब' को 'राज्य' खेल घोषित कर दिया। मुंबई में आयोजित मल्लखम्ब विश्व चैम्पियनशिप 2019 में अमेरिका, इंग्लैंड, जर्मनी, फ्रांस, जापान, सिंगापुर, इटली सहित 15 देशों के प्रतिभागियों ने भाग लिया। मल्लखम्ब की लोकप्रियता इतनी है कि भारत के शीर्ष कलाकारों को टोक्यो ओलंपिक में मल्लखम्ब प्रदर्शन करना था लेकिन प्रतिबंधित दिशानिर्देशों के कारण ऐसा नहीं कर सके। ओलंपिक में इसका प्रथम प्रदर्शन 1936 में हुआ था।

ब) कलारीपयट्टू : प्राचीन भारतीय मार्शल आर्ट

'कलारीपयट्टू' जिसे केवल 'कलारी' के नाम से भी जाना जाता है, एक प्राचीन भारतीय मार्शल आर्ट शैली है जिसका वर्णन दक्षिण भारत के संगम काल में मिलता है। यह एक वैज्ञानिक खेल है जिसमें भाले, ढाल, या तलवार आदि से हमला और रक्षा करते समय पैर से आघात करना और छलांगों का प्रयोग करने में मन–शरीर के बेहतरीन समन्वय और फुर्ती की आवश्यकता होती है। यह मार्शल आर्ट का प्रशिक्षण है जिसका उपयोग प्राचीनकाल में योद्धाओं को तैयार करने के लिए किया जाता था। लेकिन आज यह एक प्रतिस्पर्धी खेल के रूप में प्रचलित है और मुख्य रूप से केरल के युवाओं को आकर्षित करता है। यह एक गुरु–शिष्य परंपरा का अनुसरण करता है जहां छात्र (शिष्य) प्रशिक्षण केंद्रों

1. Irwin, John (1983)- "The Ancient Pillar-Cult at Prayāga: Its Pre-Aśokan Origins"- Journal of the Royal Asiatic Society of Great Britain and Ireland- 115 (2): 253–280

(जिन्हें 'कलारी' कहा जाता है) में एक गुरु से प्रशिक्षण लेते हैं। 1936 तक कलारी प्रशिक्षण एक मौखिक निर्देश (वैथारिस) के रूप में जारी रहा और फिर इसे लिखित रूप में पुस्तक के रूप में और वर्णनात्मक लेखन के रूप में संहितावद्ध किया गया और 1953 तक बड़े पैमाने पर इस खेल की प्रस्तुतियां की गईं जिससे इस खेल को लोकप्रियता मिली। केरल सरकार ने 2021 में कलारीपयट्टू अकादमी की स्थापना की है जो इस उद्देश्य के लिए तैयार किए गए एक विशेष पाठ्यक्रम के माध्यम से औपचारिक रूप से कलारी का प्रशिक्षण प्रदान करेगी।

स) भारत का ग्रामीण ओलंपिक – किला रायपुर खेल महोत्सव

किला रायपुर खेल महोत्सव जो भारत के 'ग्रामीण ओलंपिक' के रूप में जाना जाता है, एक वार्षिक खेल आयोजन है। यह महोत्सव पंजाब के लुधियाना ज़िले में प्रतियोगिताओं के माध्यम से स्थानीय ग्रामीण खेलों को बढ़ावा देता है। इंद्रजीत सिंह ग्रेवाल के दिमाग की उपज किला रायपुर खेल महोत्सव पहली बार 1933 में लोगों को एक साथ लाने और खेलों के माध्यम से सद्भाव को बढ़ावा देने के लिए आयोजित किया गया था। खेल उत्सव पेशेवर खेलों के साथ–साथ ग्रामीण खेलों का एक सही अनूठा मिश्रण प्रस्तुत करता है जो केवल मनोरंजन के लिए खेले जाते हैं। एथलेटिक स्पर्धाओं में शॉट पुट (गोला फेंक), हॉकी, कबड्डी, ट्रैक रेस शामिल हैं। अन्य खेलों में रस्साकशी, घुड़दौड़, घोड़े की कलाबाज़ी आदि शामिल हैं। महोत्सव का उद्देश्य पेशेवर खेलों में नवोदित प्रतिभाओं के लिए एक मंच प्रदान करना और साथ ही क्षेत्र में एक खेल संस्कृति का निर्माण करना है। महोत्सव क्षेत्र की संस्कृति से जुड़ा हुआ है– लोकगीत, भांगड़ा, स्थानीय भोजन आदि का आयोजन के दौरान पुरज़ोर प्रदर्शन होता है। यह एकीकरण के माध्यम के रूप में कार्य करता है और लोगों को उनकी जड़ों से जोड़ता है। खेलों के इन सहायक साधनों का महत्त्व अमूर्त है चूंकि अक्सर पेशेवर खेलों की धूमधाम में ये कोई पहचान स्थापित नहीं कर पाते हैं।

प्राचीन भारतीय खेलों के अलावा, आधुनिक भारत ने कई अन्य पेशेवर खेलों में वैश्विक–स्तर पर भारतीय खिलाड़ियों का उदय देखा है जो मुख्य रूप से देश के ग्रामीण हिस्सों में खेले जाते हैं– चाहे वह कबड्डी हो या हॉकी या फिर तीरंदाजी। ग्रामीण भारत में खेल प्रतिभाओं का पोषण करने के लिए विभिन्न राज्य सरकारों और भारत सरकार द्वारा कई उत्कृष्ट पहल की गई हैं जिनकी चर्चा आगे की गई है।

ग्रामीण क्षेत्रों में खेलों के सशक्तीकरण की पहल : एक पल्स चेक

भारत सरकार ने ओलंपिक खेलों में सर्वोच्च परिणाम हासिल करने के लिए एक लक्षित योजना 'टॉप्स' शुरू करके एक ऐतिहासिक कदम उठाया है। लक्ष्य ओलंपिक पोडियम योजना या टॉप्स को 2014 में युवा मामले और खेल मंत्रालय, भारत सरकार के तत्वावधान में ओलंपिक और अन्य अंतर्राष्ट्रीय खेल आयोजनों में पदक हासिल करने के लिए एथलीटों को वित्तीय मदद और अन्य सहायता प्रदान करने के लिए शुरू किया गया था। इस योजना के तहत तीरंदाजी, बैडमिंटन, मुक्केबाज़ी, हॉकी, निशानेबाज़ी और कुश्ती जैसे खेलों को 'उच्च प्राथमिकता' वाली योजनाओं के रूप में मान्यता दी गई है।

सर्वोत्तम प्रदर्शन करने वाले एथलीटों का चयन एक समिति द्वारा किया जाता है जिन्हें आधुनिक और सुसज्जित खेल सुविधाओं और संस्थानों में शीर्ष प्रशिक्षकों के साथ विशिष्ट प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है। अंतर्राष्ट्रीय मंच पर पदक तालिका में 'टॉप्स' योजना का योगदान किसी बड़ी सफलता से कम नहीं है। रियो 2016 ओलंपिक में 'टॉप्स' योजना से लाभांवित पीवी सिंधु और साक्षी मलिक ने भारत के लिए क्रमशः रजत और कांस्य पदक जीते। 'टॉप्स' योजना के लाभार्थी पैरालिंपियनों ने रियो में दो स्वर्ण

चित्र–1

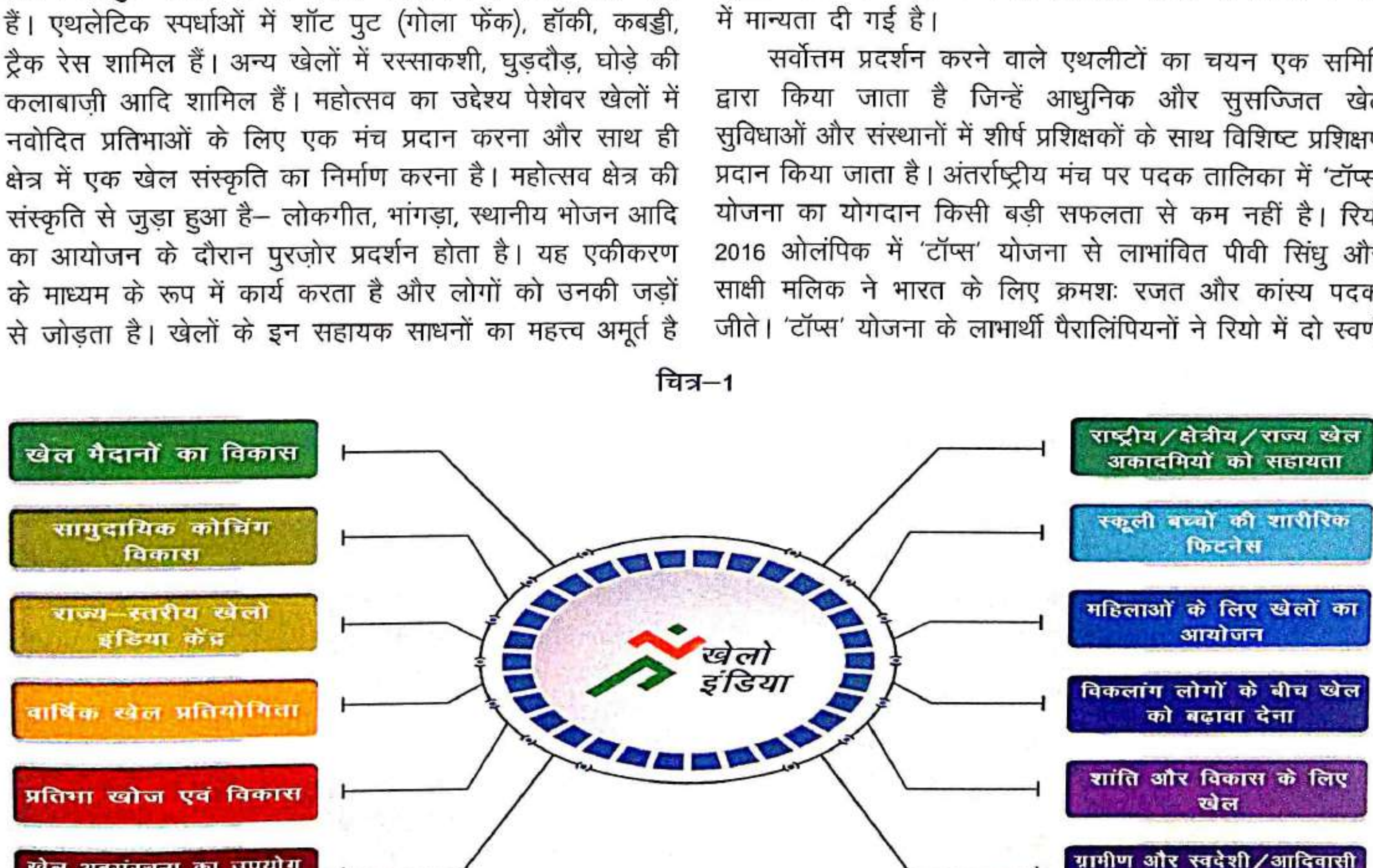

स्रोत: https://kheloindia.gov.in/about

पदक सहित चार पदक जीते। 'टॉप्स' योजना का प्रभाव 2018 के राष्ट्रमंडल खेलों में सबसे अधिक देखा गया था जहां भारत द्वारा जीते गए 70 में से 47 पदक 'टॉप्स' योजना के लाभार्थी एथलीटों द्वारा प्राप्त किए गए थे।

पदकों के मामले में टोक्यो ओलंपिक भारत के लिए सबसे बड़ा ओलंपिक रहा है। मानो या न मानो, पैरालम्पियनों सहित सभी एथलीटों को 'टॉप्स' योजना के तहत कवर किया गया था। सर्वश्रेष्ठ कोचिंग और उपकरणों के अलावा प्रत्येक एथलीट को 50,000 रुपये मासिक फुटकर (ऑउट ऑफ पाकेट) खर्च के लिए दिया जाता था जिसे उनके आहार या प्रशिक्षण या एथलीट की इच्छा के अनुसार किसी अन्य तरीके से खर्च किया जा सकता था। भारत सरकार ने पैरालम्पियनों के दल का समर्थन करने के लिए अतिरिक्त प्रयास किया। दोहरे पदक की विजेता अवनी लेखरा को घर पर अभ्यास करने के लिए एक कम्प्यूटरीकृत डिजिटल लक्ष्य और एक महंगी एयर राइफल प्रदान की गई जबकि रजत पदक विजेता भावना पटेल को एक ओटोबॉक व्हीलचेयर और एक टेबल टेनिस रोबोट 'बटरफ्लाई– एमिकस प्राइम' से लैस किया गया था। कोई आश्चर्य नहीं 47 सदस्यीय पैरालंपिक दल ने 'टॉप्स' योजना के तहत प्रदान किए गए अवसर को स्वर्ण, रजत और कांस्य में बदल दिया– टोक्यो पैरालम्पिक में भारत को कुल 19 पदक प्राप्त हुए।

एक ओर 'टॉप्स' योजना का उद्देश्य मौजूदा प्रतिभाओं को उच्च परिणामों के लिए परिष्कृत करना है तो दूसरी ओर, भारत सरकार ने 'खेलो इंडिया' योजना के माध्यम से देश के दूरस्थ भागों में खोजी गई प्रतिभाओं का एक पूल विकसित करने के लिए एक भविष्योन्मुखी योजना तैयार की है। राष्ट्रीय विकास, आर्थिक विकास, सामुदायिक विकास और व्यक्तिगत विकास के माध्यम के रूप में खेलों को मुख्यधारा में लाने के लक्ष्य से 2018 में 'खेलो इंडिया' योजना 12 वर्टिकलों के साथ शुरू की गई।

खेलो इंडिया योजना के तहत ज़मीनी–स्तर पर दो श्रेणियों में प्रतिभा की खोज शुरू की गई है– अ) खेलों की संभावित प्रतिभा की पहचान और ब) सिद्ध प्रतिभा की पहचान। संभावित और सिद्ध खिलाड़ियों का चुनाव करने के लिए देश के हर कोने तक पहुंचने के लिए कई ग्रासरूट ज़ोनल टैलेंट आइडेंटिफिकेशन कमेटी का गठन किया गया है। 8 से 14 आयु वर्ग में उन 20 खेल विधाओं में प्रतिभा की पहचान की जाती है जिनमें देश की अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर उत्तम परिणाम प्राप्त करने की क्षमता/श्रेष्ठता होती है। 'खेलो इंडिया' योजना के 'प्रतिभा खोज और विकास' वर्टिकल के अंतर्गत इस योजना के तहत पहचाने और चुने गए खेलो इंडिया खिलाड़ियों को प्रति खिलाड़ी प्रति वर्ष 6.28 लाख रुपये की वार्षिक वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है, जिसमें 1.20 लाख रुपये प्रति वर्ष फुटकर खर्च के लिए भत्ते के रूप में दिया जाता है और कोचिंग, खेल विज्ञान सहायता, आहार, उपकरण, उपभोज्य, बीमा शुल्क आदि जैसी अन्य सुविधाओं के लिए 5.08 लाख रुपये दिए जाते हैं। इसके अलावा, विभिन्न राज्यों/केंद्रशासित प्रदेशों में ज़िला–स्तर पर योजना के तहत अधिसूचित प्रत्येक खेलो इंडिया केंद्र प्रति खेल पांच लाख रुपये का एक बार मिलने वाला अनुदान और प्रति खेल पांच लाख रुपये का आवर्ती अनुदान प्राप्त करने के लिए पात्र है[2]।

इस योजना के तहत स्कूल और विश्वविद्यालय स्तर पर नवोदित प्रतिभाओं को एक मंच प्रदान करने के लिए 'खेलो इंडिया' गेम्स का आयोजन किया जाता है। अब तक इस तरह के तीन खेलों का आयोजन किया जा चुका है और चौथा, हरियाणा में आयोजित होने जा रहा है। योजना के प्रारंभिक प्रभाव को देखते हुए भारत सरकार ने 8750 करोड़ रुपये के अनुमानित बजट के साथ योजना को 2021–22 से 2025–26 तक विस्तारित करने के लिए एक व्यय वित्त समिति (ईएफसी) ज्ञापन प्रस्तुत किया है। जहां केंद्र सरकार ने भारत को एक 'खेल राष्ट्र' में बदलने के लिए सुधार मार्ग अपनाया है वहीं खेल संस्कृति को पोषित करने में राज्यों की भूमिका समान रूप से महत्वपूर्ण है।

> खेल एक वैज्ञानिक शिक्षा शैली है और भावी प्रतिभाओं को विकसित करने और भारत में खेल संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए एक युक्तिपूर्ण रोडमैप की आवश्यकता है। 'एक राज्य एक खेल' नाम से एक अभियान शुरू करना उपयोगी हो सकता है जिसमें प्रत्येक राज्य सरकार एक प्रमुख खेल की पहचान करेगी जिसमें उसे अन्य खेलों की तुलना में अधिक प्रतिस्पर्धात्मक लाभ हासिल हो जबकि अन्य खेलों को थोड़ी कम प्राथमिकता दी जा सकती है।

केस स्टडी : हरियाणा – ग्रामीण भारत के स्टार खिलाड़ियों का इन्क्यूबेटर (पोषण स्थल)

हाल ही में संपन्न हुए टोक्यो ओलंपिक में हरियाणा ने भारतीय दल में अधिकतम ओलंपियन भेजे– 31 एथलीट जो कुल दल का लगभग 25 प्रतिशत हैं। उनमें से तीन क्रमशः स्वर्ण, रजत और कांस्य पदक लाए और कई विजयी भारतीय हॉकी टीम का हिस्सा थे। हरियाणा की सफलता के बीज 1980 के दशक में बोए गए जब हरियाणा ने राज्य भर में विभिन्न खेलों के लिए प्रशिक्षकों को नियुक्त किया। हालांकि इस दिशा में प्रगति अवश्य हुई पर वास्तविक प्रभाव 2006 में खेल नीति के बनने से पड़ा। इस नीति ने राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय आयोजनों के लिए राज्य से प्रतिभाओं को खोजने, पोषण करने और परिष्कृत करने में हरियाणा की सफलता की नींव रखी।

आज हरियाणा में एक औपचारिक संस्थागत तंत्र है जिसे 'प्ले फॉर इंडिया' कहा जाता है जिसके तहत स्कूल में प्रत्येक छात्र को खेलों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। 'कैच देम यंग कैच देम राइट' यानी किशोरावस्था में प्रतिभा को

2. केंद्रीय युवा मामले और खेल मंत्री श्री अनुराग ठाकुर द्वारा 02.08.21 को राज्यसभा में एक प्रश्न का लिखित उत्तर

*Sports & physical Exercise Evaluation & Development Test

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने 09 सितंबर, 2021 को नई दिल्ली स्थित अपने आवास पर टोक्यो 2020 पैरालंपिक खेलों में भाग लेने वाले भारतीय दल की मेज़बानी की।

तलाशने और तराशने के मूलमंत्र का पालन करते हुए हरियाणा 8–19 आयु वर्गों में उच्च क्षमता वाले एथलीटों की पहचान करने के लिए राज्य भर के सभी स्कूलों में खेल और शारीरिक योग्यता परीक्षण (एसपीएटी) आयोजित करता है। प्रतिभागियों को तीन राउंड में अनेक मानकीकृत परीक्षणों से गुज़रना होता है और उनको उत्तीर्ण करने वाले खेल और शारीरिक व्यायाम मूल्यांकन और विकास (SPEED*) टेस्ट नामक अंतिम दौर में प्रवेश करते हैं जहां वे अपनी योग्यता और परामर्श के आधार पर एक खास खेल का चयन करते हैं। स्पीड टेस्ट उत्तीर्ण करने वालों को स्पोर्ट्स एंड फिज़िकल एप्टीट्यूड कंटीन्यूअस एवेल्यूएशन (एसपीएसीई) में प्रवेश दिया जाता है, जहां उन्हें खेल अकादमियों में प्रशिक्षित किया जाता है[3]। 8–14 और 15–19 आयु वर्ग के छात्रों को प्रति माह क्रमशः 1500 रुपये और 2000 रुपये का मासिक वज़ीफा दिया जाता है। इसके अलावा, हरियाणा सरकार द्वारा सफल एथलीटों– राष्ट्रीय चैंपियन से लेकर ओलंपियन तक को नकद पुरस्कार दिए जाते हैं। स्कूल–स्तर पर हरियाणा का खेलों के साथ किया जाने वाला यह प्रयास विश्वस्तरीय क्षमता के अत्यधिक प्रतिभाशाली खिलाड़ियों की निरंतर आपूर्ति के साथ–साथ खेल संस्कृति को बड़े पैमाने पर बढ़ावा देने के लिए एक आदर्श प्रयोग है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारत को एक 'खेल राष्ट्र' में बदलने का अवसर

दूसरे 'खेलो इंडिया' शीतकालीन खेलों में अपने उद्घाटन भाषण में प्रधानमंत्री ने कहा कि हाल ही में राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी 2020) में खेलों को गौरवपूर्ण स्थान दिया गया है। खेल जो एक पाठ्येत्तर गतिविधि है, स्कूल और कॉलेज के पाठ्यक्रम का एक अभिन्न अंग होगा और खेलों में ग्रेडिंग बच्चों की शिक्षा में गिनी जाएगी।

भारत में स्कूली शिक्षा प्रणाली ग्रामीण भारत में 18 करोड़ विद्यार्थियों की भर्तियों के साथ 15 लाख स्कूलों के नेटवर्क के माध्यम से लगभग 26 करोड़ विद्यार्थियों को शिक्षा प्रदान करती है और इस प्रकार देश भर में खेलों को बढ़ावा देने का मार्ग प्रशस्त करती है। भारत सरकार की मौजूदा योजनाओं जैसे समग्र शिक्षा, एकलव्य मॉडल आवासीय विद्यालय, कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय, आदि में देश के सुदूर भागों में खेलों को बढ़ावा देने पर विशेष बल दिया गया है। भारत में स्कूली शिक्षा की प्रमुख योजना समग्र शिक्षा में ऐसे घटक हैं जो विशेष रूप से स्कूलों को खेल उपकरण प्रदान करने और खेलो इंडिया योजना को बढ़ावा देने पर केंद्रित हैं।

कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय योजना के तहत भारत के प्रत्येक शैक्षिक रूप से पिछड़े ब्लॉक में कम से कम एक आवासीय बालिका विद्यालय स्थापित किया गया है। यह योजना आवासीय पद्धति में कक्षा VI-XII तक उपेक्षित समुदायों–अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, अन्य पिछड़ा वर्ग, गरीबी रेखा के नीचे जीवनयापन करने वाले (बीपीएल) और अल्पसंख्यकों की लड़कियों को उच्च गुणवत्तायुक्त समग्र शिक्षा प्रदान करती है। योजना का एक बहुत ही महत्वपूर्ण घटक 'खेल' हैं और इन विद्यालयों में हॉकी, कबड्डी, खो–खो, बैडमिंटन, वॉलीबॉल आदि खेलों की सुविधाएं विकसित की गई हैं। लड़कियों को खेलों में उत्कृष्टता

3. Haryana Sports & Physical Fitness Policy 2015

प्राप्त करने के लिए खेलकूद प्रतियोगिताओं (स्पोर्ट्स मीट) के आयोजन द्वारा एक मंच प्रदान किया जाता है।

सरकार का लक्ष्य देश के आदिवासी क्षेत्रों में अनुसूचित जनजाति वर्ग के छात्रों को समग्र शिक्षा प्रदान करना है। इन स्कूलों में खेलों पर खासा ध्यान दिया जाता है। खेलों के लिए उत्कृष्टता केंद्र (सीओई) की योजना बनाई गई है और इसे सभी एकलव्य मॉडल आवासीय विद्यालयों में लागू किया गया है। प्रत्येक राज्य में स्थापित इस उत्कृष्टता केंद्र में एक निर्धारित व्यक्तिगत खेल और एक समूह खेल के लिए विशेष अत्याधुनिक सुविधाएं होंगी जो वैज्ञानिक बैकअप के साथ विशिष्ट प्रशिक्षण, बोर्डिंग और लॉजिंग सुविधाएं, खेल किट, खेल उपकरण, प्रतियोगिता अनुभव, बीमा, चिकित्सा व्यय, आदि भारतीय खेल प्राधिकरण के मानदंडों के अनुसार मुहैया करवाई जाएंगी।

इस बात पर बल दिया जाना चाहिए कि खेल एक वैज्ञानिक शिक्षा शैली है और भावी प्रतिभाओं को विकसित करने और भारत में खेल संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए एक युक्तिपूर्ण रोडमैप की आवश्यकता है। कुछ ऐसे खेल हैं जहां भारतीयों को उनकी आनुवांशिक संरचना या कुछ खेलों के साथ लंबे समय तक समावेशन के कारण तुलनात्मक लाभ मिलता है। 'एक राज्य एक खेल' नाम से एक अभियान शुरू करना उपयोगी हो सकता है जिसमें प्रत्येक राज्य सरकार एक प्रमुख खेल की पहचान करेगी जिसमें उसे अन्य खेलों की तुलना में अधिक प्रतिस्पर्धात्मक लाभ हासिल हो जबकि अन्य खेलों को थोड़ी कम प्राथमिकता दी जा सकती है।

निष्कर्ष

खेल की परंपरा कुछ सहस्राब्दियों पूर्व की भारतीय संस्कृति में गहरी जड़ जमाए हुए है। अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र में पिछले कई वर्षों में भारत कुछ खेलों में एक बड़ी ताकत के रूप में उभरा है। लेकिन खेल संस्कृति देश के कुछ हिस्सों तक सीमित है जो भारत में एथलीटों का पोषण स्थल भी हैं। हाल ही में भारत सरकार ने टॉप्स, खेलो इंडिया, फिट इंडिया आदि जैसी कई पहल की हैं जिनमें भारत के खेल परिदृश्य को बदलने की क्षमता है। ओलंपिक, राष्ट्रमंडल खेलों और विश्व चैंपियनशिप में हाल की सफलताएं बेहद उत्साहजनक रही हैं। देश में खेल को आजीविका के रूप में देखने वाले अभिभावकों और युवाओं की संख्या बढ़ती जा रही है। भारत में अभी हम एक जीवंत खेल संस्कृति के संक्रमण बिंदु पर हैं जो भारत सरकार द्वारा दिए गए प्रोत्साहन और पारिस्थितिकी तंत्र के निर्माण के कारण तेज़ी से विकसित होगी।

(डॉ. प्रेम सिंह नीति आयोग में एडवाइज़र (शिक्षा, युवा मामले एवं खेल) हैं; पीयूष प्रकाश सीनियर एसोसिएट, नीति आयोग हैं। लेख में व्यक्त विचार निजी हैं।)

ई–मेल : **prem.bogzi@ias.nic.in, piyush.prakash90@gov.in**

ग्रामीण विकास मंत्रालय
भारत सरकार

Azadi Ka Amrit Mahotsav

आइए, परंपरा और तकनीक को एक साथ लाएं
भीड़भाड़ से बचें=सुरक्षित रहें

भारत में खेलों को प्रोत्साहन की दिशा में पहल

–डॉ. नीलेश तिवारी

खेल गतिविधियां एक स्वस्थ समाज के निर्माण में अमूल्य योगदान देने के साथ–साथ जनचेतना, सामाजिक समरसता एवं आर्थिक–सांस्कृतिक विकास को भी उत्प्रेरित करती हैं। अतः हमें समाज में खेलों को 'शिक्षा के समतुल्य' माने जाने वाली सोच को जन–सामान्य में विकसित करने की ओर प्रयास करना चाहिए, तभी हम एक बेहतर, समावेशी एवं विकसित राष्ट्र के लक्ष्य को प्राप्त कर सकेंगे।

खेल गतिविधियों का व्यक्ति के बेहतर स्वास्थ्य एवं जीवन में अमूल्य योगदान होता है। खेल गतिविधियां व्यक्ति के सर्वांगीण विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। खेल गतिविधियां बेहतर शारीरिक स्वास्थ्य व मनोरंजन के साथ–साथ व्यक्तियों में स्वस्थ प्रतिस्पर्धा की भावना को भी विकसित करती हैं। खेल किसी भी राष्ट्र के सामाजिक–आर्थिक–सांस्कृतिक विकास के एक महत्त्वपूर्ण घटक एवं परिचायक के रूप में उत्प्रेरक की भूमिका निभाते हैं।

वहीं दूसरी ओर, खेल गतिविधियों के नियमित आयोजन एवं उनमें सहभागिता से न केवल खिलाड़ियों में उत्साह की भावना विकसित होती है, अपितु दो या दो से अधिक राज्यों व राष्ट्रों के मध्य सद्भावना के साथ–साथ अंतर्राष्ट्रीय–स्तर पर बेहतर संबंध स्थापित होते हैं यानी खेल अंतर्राष्ट्रीय–स्तर पर कूटनीतिक मध्यस्थता की भूमिका भी निभाते हैं।

खेल गतिविधियां न केवल व्यक्तियों, युवाओं एवं समुदायों के बीच स्वस्थ जीवनशैली के विकास में बल्कि कई दृष्टिकोणों से व्यक्ति, समाज और देश के विकास में मददगार होती हैं–

- सकारात्मक सोच एवं रचनात्मकता विकसित करने में सहायक;
- टीम भावना, रणनीतिक एवं विश्लेषणात्मक सोच का विकास;
- लक्ष्य निर्धारण, जोखिम लेने एवं नेतृत्व कौशल का विकास;
- बेहतर समय प्रबंधन, लैंगिक समानता एवं महिला सशक्तीकरण;
- समावेशी समाज के निर्माण में सहायक;
- ग्रामीण पर्यटन एवं अर्थव्यवस्था में सकारात्मक योगदान;
- युवाओं व खिलाड़ियों के बेहतर भविष्य के अवसर सृजन में सहायक;
- खेल शिक्षा व शोध कार्य से आजीविका के अवसर के रूप में;
- खेल वस्तुओं के उत्पादन, निर्यात एवं व्यापार के क्षेत्र में रोज़गार सृजन में सहायक इत्यादि।

... भारतीय हॉकी टीम ने कांस्य पदक जीता। भारत को 41 सालों के बाद ओलम्पिक में हॉकी में पदक हासिल हुआ।

इस प्रकार हम समझ सकते हैं कि खेल गतिविधियां एक स्वस्थ समाज के साथ–साथ सामाजिक–आर्थिक–सांस्कृतिक सम्पन्नता को सभी के साथ साझा करने में बहुमूल्य योगदान देती हैं।

टीबीआरसी की रिपोर्ट के अनुसार वैश्विक खेल उद्योग बाज़ार वर्ष 2020 में कोरोना महामारी के बावजूद 388.28 बिलियन अमेरिकी डॉलर रहा जो 2021 में 13.5 प्रतिशत के चक्रवृद्धि वार्षिक वृद्धि दर (सीएजीआर) से बढ़कर 440.77 बिलियन अमेरिकी डॉलर तक पहुंचने की उम्मीद है। और 2025 तक 8 प्रतिशत की सीएजीआर से 599.9 बिलियन अमेरिकी डॉलर तक अनुमानित है।

विश्व के सर्वाधिक जनसंख्या वाले विकासशील भारत वर्ष में खेलों व खिलाड़ियों को विकसित तथा पोषित करने की ज़िम्मेदारी सरकारों की रही है। वहीं दूसरी ओर, भारत में खेलों व खिलाड़ियों को विकसित एवं प्रोत्साहित करने की दिशा में निजी क्षेत्र की भूमिका सीमित रही है।

भारत में विभिन्न खेलों व खिलाड़ियों को प्रोत्साहित करने के साथ–साथ खेलों के संपूर्ण प्रबंधन को निम्नलिखित दो बिंदुओं के माध्यम से समझा जा सकता है–

1.नीतिगत पहल

2.संस्थागत पहल

भारत में खेलों के महत्त्व को देखते हुए नौवें एशियाई खेलों की शुरुआत से पहले, 1982 में, राष्ट्रीय–स्तर पर खेल विभाग की अलग से स्थापना की गई। इसके बाद राष्ट्रीय–स्तर पर भारत में खेलों को संगठित व व्यवस्थित ढांचागत स्वरूप के माध्यम से विकसित व प्रोत्साहन देने हेतु राष्ट्रीय खेल नीति 1984 पहली महत्त्वपूर्ण पहल थी। उसके बाद, वर्ष 2001 में राष्ट्रीय खेल नीति व वर्ष 2014 में राष्ट्रीय युवा नीति के अंतर्गत भारत में विभिन्न खेलों व खिलाड़ियों को प्रोत्साहित करने की दिशा में नीतिगत प्रयास किए गए। राष्ट्रीय युवा नीति 2014 में व्यक्तियों, विशेषकर युवाओं को खेलों से जोड़ने की दिशा में विशेष ध्यान दिया गया है।

राष्ट्रीय–स्तर पर भारत में विभिन्न खेलों को प्रोत्साहन व खेलों के प्रबंधन में सुशासन को विभिन्न नीतिगत पहलों, कार्यक्रमों व योजनाओं के माध्यम से समझा जा सकता है। ये नीतिगत पहल अंतर्राष्ट्रीय खेल आयोजनों जैसे ओलंपिक इत्यादि के खेल–सुशासन में मौलिक सार्वभौमिक सिद्धांतों पर आधारित हैं। साथ ही, खेल मानव संसाधन विकास का एक महत्त्वपूर्ण साधन है।

स्वतंत्रता पूर्व, वर्ष 1927 में भारतीय ओलंपिक संघ की स्थापना सर दोराबजी टाटा जी की अध्यक्षता में की गई जिसमें डॉ. ए.जी. नोहरन महासचिव थे। यह देश में खेल प्रशासन और एथलीटों के कल्याण की दिशा में एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण संस्थागत पहल थी।

भारत में विभिन्न खेलों के प्रोत्साहन हेतु नीतिगत पहलों को आरेख–1 के माध्यम से समझा जा सकता है।

भारत में खेलों के प्रबंधन हेतु संस्थागत पहल

भारत में विभिन्न खेलों व खिलाड़ियों के संपूर्ण प्रबंधन हेतु भारत सरकार द्वारा समय–समय पर संस्थागत पहल की जाती रही है।

युवा मामले और खेल मंत्रालय, भारत सरकार देशभर में खेल संस्कृति को बढ़ावा देने के साथ–साथ खेलों में उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए अग्रसर एवं कार्यरत है ।

आरेख–1: भारत में खेलों के प्रोत्साहन हेतु नीतिगत एवं संस्थागत प्रयास

स्रोतः लेखक का विश्लेषण

*1982 में नई दिल्ली में एशियन गेम्स के आयोजन के दौरान खेल विभाग की स्थापना की गई। वर्ष 1985 में अंतर्राष्ट्रीय युवा दिवस के अवसर पर इसका नाम युवा मामले और खेल विभाग कर दिया गया। 27 मई, 2000 को इसे मंत्रालय का दर्जा दिया गया।

तालिका–1: भारत में खेल प्रबंधन हेतु संस्थागत पहल

संस्थाएं	प्रमुख कार्य
युवा मामले और खेल मंत्रालय, भारत सरकार	खेलों के प्रोत्साहन एवं विकास तथा खिलाड़ियों को तैयार करने की दिशा में बुनियादी ढांचे का निर्माण और क्षमता विकास को बढ़ावा देना
भारतीय खेल प्राधिकरण (SAI) (1984 में खेल विभाग, भारत सरकार के अंतर्गत स्थापित)	भारत में रणनीतिक तौर पर खेलों को प्रोत्साहन के साथ–साथ • युवा प्रतिभाओं की खोज व विशिष्ट एथलीटों को प्रशिक्षण • प्रशिक्षण व अंतर्राष्ट्रीय अनावृत्ति (एक्सपोज़र), • खेल अधोसंरचना का विकास व रखरखाव, • व्यापक आधार वाले खेलों हेतु विभिन्न क्षेत्रों में उच्च क्षमता वाले प्रशिक्षकों और शारीरिक शिक्षाविदों को तैयार करना, • युवा मामले और खेल मंत्रालय की विभिन्न योजनाओं, जैसे खेलो इंडिया, फिट इंडिया; इत्यादि को लागू करना है।
भारतीय ओलंपिक संघ (IOA)	वर्ष 1927 में सर दोराबजी टाटा की अध्यक्षता में भारतीय ओलंपिक संघ की स्थापना की गई जिसमें डॉ. ए.जी. नोहरन महासचिव थे। देश में खेल प्रशासन और एथलीटों के कल्याण की दिशा में यह एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण संस्थागत पहल थी।
राष्ट्रीय खेल संघ	राष्ट्रीय–स्तर पर विभिन्न खेलों के आयोजन व प्रोत्साहन हेतु महत्त्वपूर्ण स्वायत्तशासी संघ हैं जिन्हें खेल मंत्रालय, भारत सरकार से मान्यता प्राप्त है। वर्ष 2020–2021 के दौरान भारत में इनकी संख्या 61 थी।
राष्ट्रीय खेल विश्वविद्यालय	वर्ष 2018 में मणिपुर में स्थापित भारत का एकमात्र केंद्रीय खेल विश्वविद्यालय है जिसका उद्देश्य खेलों से संबंधित शिक्षा जैसे खेल विज्ञान, खेल प्रौद्योगिकी, खेल प्रबंधन व खेल कोचिंग इत्यादि को बढ़ावा देना है। यह विश्वविद्यालय में खेल विज्ञान व खेल चिकित्सा, खेल प्रबंधन व प्रौद्योगिकी, खेल शिक्षा के साथ–साथ अंतर्विषयक अध्ययन पर ज़ोर के अलावा सर्वोत्तम अंतर्राष्ट्रीय अभ्यासों को अपनाते हुए तथा अंतर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालयों के साथ समझौता ज्ञापन (एमओयू) के माध्यम से चयनित खेल विषयों में राष्ट्रीय प्रशिक्षण केंद्र के रूप में भी कार्य करेगा।

भारतीय खेल प्राधिकरण (SAI)

विभिन्न खेलों में राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर उत्कृष्टता हेतु विभिन्न आयु वर्ग के प्रतिभाशाली खिलाड़ियों की खोज और उनके पोषण के उद्देश्य से भारतीय खेल प्राधिकरण (साई) की विभिन्न योजनाएं क्रियान्वित की जाती हैं। भारतीय खेल प्राधिकरण की छह महत्त्वपूर्ण योजनाओं को तालिका–2 के माध्यम से समझा जा सकता है।

राष्ट्रीय उत्कृष्टता केंद्र (NCOE); भारतीय खेल प्राधिकरण प्रशिक्षण केंद्र (STCs), विस्तार केंद्र– STC@SAGs, राष्ट्रीय खेल प्रतिभा प्रतियोगिता NSTC नियमित स्कूल, स्वदेशी खेल और मार्शल आर्ट (IGMAs), अखाड़े

भारत में विभिन्न खेलों एवं खिलाड़ियों को प्रोत्साहन देने की दिशा में भारतीय खेल प्राधिकरण की महत्त्वपूर्ण योजनाएं निम्नलिखित हैं–

1. खेलों हेतु उत्कृष्टता के राष्ट्रीय केंद्र (एनसीओई)

ओलंपिक और अन्य अंतर्राष्ट्रीय खेल आयोजनों में उत्कृष्टता के साथ बेहतर प्रदर्शन हेतु खिलाड़ियों/एथलीटों को प्रशिक्षित करने, उन्हें अत्याधुनिक बुनियादी ढांचे, खेल सुविधाएं व विशेष प्रशिक्षण प्रदान करने की दिशा में भारतीय खेल प्राधिकरण के अंतर्गत सम्पूर्ण देश में राष्ट्रीय उत्कृष्टता केंद्रों (एनसीओई) की स्थापना की गई है।

एनसीओई में 14 प्राथमिकता वाले खेलों के साथ–साथ 11 अन्य क्षेत्रों को भी चिन्हित किया गया है जिनमें भारतीय खिलाड़ी/एथलीट अच्छा प्रदर्शन कर रहे हैं और वे विभिन्न

आरेख–2: भारतीय खेल प्राधिकरण द्वारा खेल प्रतिभाओं की खोज

स्रोत: भारतीय खेल प्राधिकरण

अंतर्राष्ट्रीय कार्यक्रमों/चैम्पियनशिप/खेलों इत्यादि में पदक जीतने की संभावना रखते हैं।

2. भारतीय खेल प्राधिकरण के प्रशिक्षण केंद्र (एसटीसी): एसटीसी योजना का उद्देश्य 10–18 आयु वर्ग के प्रतिभाशाली खिलाड़ियों की खोज कर उन्हें विभिन्न खेलों हेतु तैयार करना है। वर्तमान में देशभर में 67 एसटीसी केंद्र हैं जिनमें कुल 4800 से अधिक प्रशिक्षु खिलाड़ी हैं। ये खिलाड़ी एसटीसी केंद्र में विभिन्न खेलों जैसे तीरंदाज़ी, एथलेटिक्स, बैडमिंटन, बास्केटबॉल, बॉक्सिंग, साइकिलिंग, तलवारबाज़ी, फुटबॉल, जिमनास्टिक, हैंडबॉल, हॉकी, जूडो, कबड्डी, कराटे, कयाकिंग और कैनोइंग, खो–खो, रोइंग, शूटिंग, सॉफ्टबॉल, तैराकी, टेबल टेनिस, ताइकांडो, वॉलीबॉल, भारोत्तोलन, कुश्ती और वुशु इत्यादि में प्रशिक्षण लेते हैं।

3. भारतीय खेल प्राधिकरण के प्रशिक्षण केंद्र (एसटीसी) विस्तार केंद्र योजना : इस योजना के अंतर्गत 10–18 आयु वर्ग के खिलाड़ी प्रशिक्षुओं का चयन गैर–आवासीय आधार पर किया जाता है। यह योजना 17 क्षेत्रों में शुरू की गई थी ताकि स्कूलों और कॉलेजों में खेल के मानक विकसित कर खिलाड़ियों को भविष्य के लिए तैयार किया जा सके।

4. राष्ट्रीय खेल प्रतिभा प्रतियोगिता (NSTC) योजना : स्कूलों से 8–14 आयु वर्ग के प्रतिभाशाली खिलाड़ियों की खोज कर, उन्हें वैज्ञानिक प्रशिक्षण द्वारा भविष्य में पदक विजेताओं के रूप में तैयार करना है।

भारत में खेलों के प्रोत्साहन हेतु प्रमुख योजनाएं

युवा मामले और खेल मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा देश भर में खेल संस्कृति को बढ़ावा देने के साथ–साथ खेलों में उत्कृष्टता हेतु विभिन्न योजनाओं का संचालन किया जा रहा है।

(i) खेलो इंडिया योजना;

(ii) राष्ट्रीय खेल संघों को सहायता;

आरेख–3: भारतीय खेल प्राधिकरण की योजनाओं का विवरण

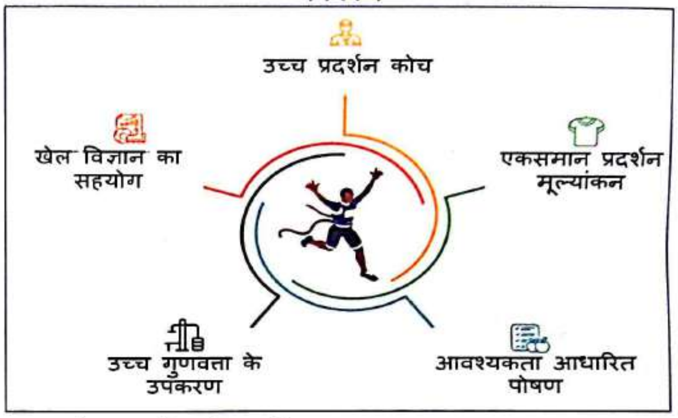

स्रोतः भारतीय खेल प्राधिकरण

(iii) अंतर्राष्ट्रीय खेल आयोजनों में विजेताओं और उनके प्रशिक्षकों को विशेष पुरस्कार;

(iv) राष्ट्रीय खेल पुरस्कार, मेधावी खिलाड़ियों को पेंशन;

(v) पंडित दीनदयाल उपाध्याय राष्ट्रीय खेल कल्याण कोष;

(vi) राष्ट्रीय खेल विकास कोष; और

(vii) भारतीय खेल प्राधिकरण के माध्यम से चलाए जा रहे खेल प्रशिक्षण केंद्र

'खेलो इंडिया' योजना

खेल मंत्रालय, भारत सरकार की 'खेलो इंडिया' योजना एवं 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' (ईबीएसबी) कार्यक्रम के माध्यम से ग्रामीण व स्वदेशी/आदिवासी खेलों को प्रोत्साहित किया जा रहा है। हमारे देश में खेले जाने वाले सभी खेलों हेतु एक मज़बूत ढांचा तैयार करने व भारत को एक महान खेल राष्ट्र के रूप में स्थापित करने के साथ–साथ ज़मीनी–स्तर पर भारत में खेल संस्कृति को

तालिका–2: भारतीय खेल प्राधिकरण की योजनाओं का विवरण

क्र. सं.	योजनाएं	केंद्रों की संख्या	आवासीय			गैर–आवासीय			कुल योग
			लड़के	लड़कियां	कुल	लड़के	लड़कियां	कुल	कुल योग
1	राष्ट्रीय उत्कृष्टता केंद्र (NCOE)	23	1,372	1,255	2,627	94	67	161	2,788
2	भारतीय खेल प्राधिकरण प्रशिक्षण केंद्र (STCs)	67	2,665	1,294	3,959	368	492	860	4,819
3	विस्तार केंद्र– STC@SAGs	30	0	0	0	1,086	692	1,778	1,778
4	राष्ट्रीय खेल प्रतिभा प्रतियोगिता NSTC नियमित स्कूल	10	0	0	0	223	50	273	273
5	स्वदेशी खेल और मार्शल आर्ट (IGMAs)	10	0	0	0	76	57	246	133
6	अखाड़े	49	0	0	0	551	119	670	670
	कुल	189	4,037	2,549	6,586	1,644	995	2,639	9,225

14 प्राथमिकता वाले चिन्हित खेल	अन्य 11 चिन्हित खेल
तीरंदाज़ी, एथलेटिक्स, बैडमिंटन, मुक्केबाजी, साइकिल चलाना, तलवारबाज़ी, हॉकी, जूडो, नौकायन, तैराकी, निशानेबाज़ी, टेबल टेनिस, कुश्ती और भारोत्तोलन	फुटबॉल, जिमनास्टिक, बास्केटबॉल, हैंडबॉल, कबड्डी, खो–खो, कयाकिंग और कैनोइंग, पैरा स्पोर्ट्स, ताइकांडो, वॉलीबॉल, वुशु

स्रोतः भारतीय खेल प्राधिकरण

पुनर्जीवित करने के उद्देश्य से 'खेलो इंडिया' कार्यक्रम की शुरुआत की गई है।

इन उद्देश्यों की पूर्ति हेतु 12 प्रमुखता वाले कार्यक्षेत्रों को चिन्हित किया गया है। साथ ही, भारत सरकार का खेल मंत्रालय खेलों को शहरी के साथ–साथ ग्रामीण, आदिवासी तथा पिछड़े क्षेत्रों में भी प्रोत्साहित करने की दिशा में कार्यरत है।

'खेलो इंडिया' योजना की 'स्पोर्ट्स फॉर वीमेन' योजना के अंतर्गत, विशेष रूप से महिलाओं को विभिन्न खेलों हेतु प्रोत्साहित किया जा रहा है। साथ ही, इस योजना के तहत ज़मीनी–स्तर पर दो श्रेणियों में खेल प्रतिभाओं की पहचान शुरू की गई है–

- संभावित प्रतिभाशाली खिलाड़ियों की पहचान
- सिद्ध प्रतिभा की पहचान

इसके अलावा, प्रतिभा की पहचान करने के लिए भारत को उत्तर, पूर्व, पश्चिम, दक्षिण और उत्तर–पूर्व पांच क्षेत्रों में बांटा गया है। संभावित और सिद्ध खिलाड़ियों को शॉर्टलिस्ट करने के लिए देश के हर कोने तक पहुंचने के लिए कई ग्रासरूट ज़ोनल टैलेंट आइडेंटिफिकेशन कमेटियों का गठन किया गया है। 8 से 14 आयु वर्ग में उन 20 खेल विधाओं में प्रतिभाओं की पहचान की जाती है, जो अंतर्राष्ट्रीय–स्तर पर विभिन्न खेलों में उत्कृष्ट प्रदर्शन की क्षमता रखते हैं।

'खेलो इंडिया' योजना के 'प्रतिभा खोज और विकास' कार्यक्रम के तहत, इस योजना के तहत पहचाने एवं चुने गए खिलाड़ियों को प्रति खिलाड़ी प्रतिवर्ष 6.28 लाख रुपये की वार्षिक वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है जिसमें 1.20 लाख रुपये प्रति वर्ष पॉकेट मनी (भत्ता) के रूप में दिया जाता है तथा कोचिंग, खेल विज्ञान सहायता, आहार, उपकरण, उपभोज्य, बीमा शुल्क आदि जैसी अन्य सुविधाओं हेतु 5.08 लाख रुपये दिए जाते हैं।

विभिन्न राज्यों/केंद्रशासित प्रदेशों में ज़िला–स्तर पर योजना के तहत अधिसूचित प्रत्येक खेलो इंडिया केंद्र प्रति खेल पांच लाख रुपये का एक बार मिलने वाला अनुदान और प्रति खेल पांच लाख रुपये का आवर्ती अनुदान प्राप्त करने के लिए पात्र है।

खेलो इंडिया योजना की "राष्ट्रीय/क्षेत्रीय/राज्य खेल अकादमियों को समर्थन" वर्टिकल के तहत, 'खेलो इंडिया' खिलाड़ियों के प्रशिक्षण के लिए खेल अकादमियों को मान्यता दी जाती है। अकादमियों को मान्यता देना एक सतत प्रक्रिया है और खेल अकादमियों को खेलो इंडिया योजना के तहत नियत प्रक्रिया का पालन करने के बाद राज्य/केंद्रशासित क्षेत्र की सरकारों से रुचि की अभिव्यक्ति प्राप्त होने पर मान्यता दी जाती है।

देशभर में अब तक ऐसी 236 खेल अकादमियों को मान्यता मिल चुकी है। इसके अलावा, खेलो इंडिया योजना के "राज्य–स्तरीय खेलो इंडिया केंद्र" वर्टिकल के तहत इस मंत्रालय ने देश भर में 1,000 खेलो इंडिया केंद्र स्थापित करने का फैसला किया है, जिनमें से 360 खेलो इंडिया केंद्र पहले ही अधिसूचित किए जा चुके हैं।

नेहरू युवा केंद्र संगठन

ग्रामीण युवाओं में खेल संस्कृति को प्रोत्साहन देने के साथ–साथ ब्लॉक एवं ज़िला–स्तर पर युवा क्लबों को खेल के विभिन्न सामान/उपकरण उपलब्ध कराने हेतु वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है। साथ ही, ग्रामीण क्षेत्रों में अंतर युवा क्लब खेल प्रतियोगिता के आयोजन के माध्यम से युवा खिलाड़ियों को प्रोत्साहित किया जाता है।

अन्य महत्त्वपूर्ण योजनाएं

भारत सरकार ने ओलंपिक और एशियाई खेलों जैसे अंतर्राष्ट्रीय खेल आयोजनों में भारत के प्रदर्शन को बेहतर करने के लिए कई कदम उठाए हैं :

- 24 'खेलो इंडिया राज्य उत्कृष्टता केंद्रों' की देशभर में शुरुआत;
- राष्ट्रीय खेल महासंघ हेतु सहायता की योजना;
- अंतर्राष्ट्रीय आयोजनों हेतु खिलाड़ियों को प्रशिक्षण एवं प्रतिस्पर्धात्मक अवसर प्रदान करना;
- टारगेट ओलंपिक पोडियम स्कीम (टॉप्स) के तहत ओलंपिक

राष्ट्रीय खेल प्रतिभा प्रतियोगिता योजना के अंतर्गत चिन्हित खेल

नियमित स्कूल जाने वाले खिलाड़ियों हेतु चिन्हित 10 खेल	स्वदेशी खेल और मार्शल आर्ट (09 चिन्हित खेल)
एथलेटिक्स, बास्केटबॉल, फुटबॉल, जिम्नास्टिक, हॉकी, खो–खो, तैराकी, टेबल टेनिस, वॉलीबॉल और कुश्ती	तीरंदाज़ी, गतका, कबड्डी, कलारीपयट्टू, मुकना, मलखम्ब, थांग–ता, सिलंबम, खोमलैनै
अखाड़े के अंतर्गत कुश्ती	

स्रोतः भारतीय खेल प्राधिकरण

तालिका–3 : खेल प्रोत्साहन हेतु चयनित राज्यों में नीतिगत पहल

क्र. सं.	राज्यों की खेल नीतियां	खेलों के प्रोत्साहन व प्रबंधन हेतु महत्वपूर्ण नीतिगत पहल
1	मेघालय राज्य खेल नीति 2019	• मेघालय की संस्कृति, लोकाचार और जीवनशैली के साथ–साथ खेलों व शारीरिक गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी को बढ़ावा देने के साथ–साथ गुणवत्तापूर्ण जीवन, सामाजिक सद्भाव व आर्थिक गतिविधियों को भी प्रोत्साहन देने की दिशा में पहल • खेलों में जनसामान्य की भागीदारी से खेल संस्कृति व खेल वातावरण का निर्माण • बच्चों के शुरुआती जीवन (0–6 वर्ष) में शारीरिक साक्षरता पर ज़ोर • संस्थागत पहल के अंतर्गत प्रत्येक ज़िले में एक खेल विद्यालय (स्कूल); • खेल प्रशिक्षकों को अंतर्राष्ट्रीय एक्सपोज़र, ताकि, वे अंतर्राष्ट्रीय खिलाड़ियों/चैंपियनों को तैयार करने हेतु आवश्यक तकनीकों, रणनीतियों, वैज्ञानिक व तकनीकी सहायता सिखाने में निपुण हो सकें; • प्रतिभाशाली खिलाड़ियों को विकसित करने में कोच/प्रशिक्षकों की जवाबदेही सुनिश्चित करना; • एक करियर विकल्प के रूप में खेलों को विकसित करने की पहल के साथ–साथ पर्यटन में उद्यमिता व आतिथ्य तथा साहसिक खेलों को बढ़ावा देने की दिशा में योजनाएं; • सरकारी नौकरियों में खेल कोटा (प्रथम श्रेणी के अधिकारियों तक) • सरकारी नौकरियों वाले खिलाड़ियों के राष्ट्रीय खेलों, चैंपियनशिप व अंतर्राष्ट्रीय खेलों में पदक लाने पर प्रदर्शन–आधारित अतिरिक्त वेतन वृद्धि; • खेलों में असाधारण योगदान हेतु प्रत्येक वर्ष एक खिलाड़ी को लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड; • एथलीटों के बेहतर खेल प्रदर्शन हेतु डेटाबेस प्रबंधन प्रणाली
2	हरियाणा खेल और शारीरिक स्वास्थ्य नीति 2015	• गतिशील और अभिनव संस्कृति जो खेलों में भागीदारी व उत्कृष्टता को बढ़ावा दे • खेलों के प्रोत्साहन हेतु "फिटनेस का अधिकार" एवं "खेलने का अधिकार" • शारीरिक साक्षरता पर विशेष ज़ोर • गैर–सरकारी संगठनों के सहयोग से खेलों को प्रोत्साहन • स्वदेशी खेलों जैसे गतका, बैलगाड़ी दौड़, कबड्डी, इत्यादि को बढ़ावा • योग को खेलों से जोड़ना • ग्राम पंचायत, ब्लॉक पंचायत व ज़िला–स्तर पर खेल की सुविधाएं • खेल के बुनियादी ढांचे के विकास हेतु सरकारी–निजी क्षेत्र भागीदारी (PPP) • सूचना प्रौद्योगिकी का उपयोग व खेल डेटाबेस • दिव्यांग व्यक्तियों को खेलों में भाग लेने हेतु प्रोत्साहन • अंतर्राष्ट्रीय खेलों में पदक विजेता खिलाड़ियों को नकद पुरस्कार एवं सरकारी नौकरियों के प्रावधान के माध्यम से प्रोत्साहन
3	पंजाब खेल नीति 2018	• खेलों को प्रोत्साहन के माध्यम से चरित्र निर्माण, मानव संसाधन विकास के साथ–साथ समावेशी विकास; • खेलों को जनसामान्य से जोड़ना • निजी क्षेत्र, गैर–सरकारी संस्थाओं व विदेशों में रहने वाले प्रवासी भारतीयों के सहयोग से खेलों को प्रोत्साहन
4	असम एकीकृत खेल नीति : 2017–18	• भारत में गुवाहाटी को खेलों की राष्ट्रीय राजधानी के रूप में विकसित करना • खेलों के माध्यम से सामाजिक परिवर्तन • खेल व शारीरिक गतिविधियों के माध्यम से गैर–संचारी रोग जैसे मोटापा, हाइपर टेंशन, मधुमेह इत्यादि को दूर कर गुणवत्तापूर्ण जीवन हेतु लोगों को प्रोत्साहित करना • निजी क्षेत्र के सहयोग से खेलों को प्रोत्साहन • गांव, ज़िला व राज्य–स्तर पर खेलों को प्रोत्साहन • स्वदेशी खेलों को प्रोत्साहन • दिव्यांग व्यक्तियों को खेलने हेतु प्रोत्साहन • खेलों को अन्य सरकारी विभागों से जोड़ना जैसे खेल एवं शिक्षा, खेल एवं स्वास्थ्य, खेल एवं पर्यटन
5	राजस्थान खेल नीति प्रारूपः 2019–20	• ग्राम पंचायत से लेकर संभाग स्तर तक खेलों को जनसामान्य तक जोड़ना • निजी क्षेत्र की सहभागिता से खेलों को बढ़ावा • "पे एंड. ले" योजना के अंतर्गत खेल के मैदानों/स्टेडियम को सभी के लिए उपलब्ध कराना • नर्सरी स्कीम के अंतर्गत 8–14 आयु वर्ग के खिलाड़ियों को विभिन्न खेलों के प्रति प्रोत्साहित करना • अन्तर्राष्ट्रीय पदक विजेताओं को राजस्थान रोडवेज़ की बसों में निःशुल्क यात्रा की सुविधा • चयनित अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पदक प्राप्त खिलाड़ियों को सरकारी विभागों में आउट ऑफ़ टर्न नौकरी का प्रावधान • राजस्थान के परम्परागत खेलों को प्रोत्साहन
6	छत्तीसगढ़ खेल नीति 2017	• समावेशी व स्वस्थ समाज हेतु खेल अनुकूल वातावरण एवं जागरूकता पर विशेष ध्यान • खेलों को शिक्षा के समतुल्य बनाना • छत्तीसगढ़ को खेलों के अग्रणी राज्यों में लाना • निजी क्षेत्र, सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम, गैर–सरकारी संस्थाओं, जनप्रतिनिधियों, प्रसिद्ध व्यक्तियों (सेलिब्रिटीज) को एक खिलाड़ी या खेल गोद लेने हेतु प्रोत्साहन • खेलों व खिलाड़ियों को योग से जोड़ना • खेल डेटा बैंक व सूचना प्रौद्योगिकी का खेलों एवं खिलाड़ियों के विकास हेतु सहयोग लेना • महिला खिलाड़ियों एवं वरिष्ठ नागरिकों में खेल गतिविधियों को प्रोत्साहन • खेल उद्योग को प्रोत्साहन • खेल विश्वविद्यालय की स्थापना के माध्यम से खेलों में शिक्षा, शोधकार्य या प्रशिक्षण को बढ़ावा
7	उत्तराखंड खेल नीति प्रारूप 2020	• सभी के बेहतर स्वास्थ्य हेतु खेल संस्कृति को प्रोत्साहन • खेलों में उत्कृष्टता के साथ–साथ खेल पर्यटन को बढ़ावा • वैज्ञानिक प्रणाली की सहायता से खिलाड़ियों को बेहतर प्रशिक्षण • खेलों के क्षेत्र में रोज़गार को प्रोत्साहन देने के अंतर्गत प्रशिक्षण • ग्रामीण क्षेत्रों के सर्वाधिक लोकप्रिय दो परम्परागत खेलों को राज्य–स्तरीय खेलों में सम्मिलित कर, "एक भारत श्रेष्ठ भारत" के अंतर्गत राष्ट्रीय–स्तर पर प्रोत्साहन • विभिन्न खेलों के बेहतर प्रबंधन व प्रशासन हेतु सभी हितधारकों को ध्यान में रखकर खेल गतिविधियों को बढ़ावा।

तालिका–4 : राज्यों में खेल विश्वविद्यालयों की स्थापना

क्र. सं.	राज्य	खेल विश्वविद्यालय	स्थापना वर्ष
1	तमिलनाडु	तमिलनाडु शारीरिक शिक्षा और खेल विश्वविद्यालय	2005
2	गुजरात	स्वर्णिम गुजरात खेल विश्वविद्यालय	2011
3	राजस्थान	राजस्थान खेल विश्वविद्यालय	2013
4	मणिपुर	राष्ट्रीय खेल विश्वविद्यालय	2018
5	असम	श्री श्री अनिरुद्धदेव खेल विश्वविद्यालय	2018
6	पंजाब	महाराजा भूपिंदर सिंह पंजाब स्पोर्ट्स यूनिवर्सिटी	2019
7	दिल्ली	दिल्ली खेल विश्वविद्यालय	2019
8	उत्तर प्रदेश	उत्तर प्रदेश राज्य खेल यूनिवर्सिटी	2021
9	बिहार	बिहार खेल विश्वविद्यालय	2021
10	महाराष्ट्र	महाराष्ट्र अंतर्राष्ट्रीय खेल विश्वविद्यालय	2020

खेलों एवं एशियाई खेलों सहित अंतर्राष्ट्रीय आयोजनों में पदक जीतने की संभावना वाले खिलाड़ियों को विशेष प्रशिक्षण प्रदान करना;

- पंडित दीनदयाल उपाध्याय राष्ट्रीय कल्याण कोष के तहत कठिन परिस्थितियों में रहने वाले खिलाड़ियों को एवं मृत खिलाड़ियों के परिवारों को पांच लाख रुपये की सहायता राशि प्रदान करना, इत्यादि।

एनसीएसएसआर योजना के अंतर्गत छह विश्वविद्यालयों/संस्थानों और पांच चिकित्सा महाविद्यालयों का चयन, खेल विज्ञान विभागों और खेल चिकित्सा विभागों की स्थापना करना। युवा मामले एवं खेल मंत्रालय के अंतर्गत आने वाले राष्ट्रीय खेल विज्ञान और अनुसंधान केंद्र (एनसीएसएसआर) की योजना का उद्देश्य उत्कृष्ट एथलीटों के श्रेष्ठ प्रदर्शन के संबंध में उच्चस्तरीय अनुसंधान, शिक्षा और नवाचार को समर्थन प्रदान करना है।

इस योजना के दो घटक हैं :

(i) एनसीएसएसआर केंद्र की स्थापना करना, और

(ii) चयनित विश्वविद्यालयों/संस्थानों और चिकित्सा महाविद्यालयों में खेल विज्ञान विभागों और खेल चिकित्सा विभागों की स्थापना के लिए सहायता (वित्तपोषण) प्रदान करना।

एनसीएसएसआर योजना के प्रमुख लक्ष्य एवं उद्देश्य निम्नलिखित हैं:

- खेल प्रदर्शन को बढ़ावा देने, भरण–पोषण और वृद्धि हेतु वैज्ञानिक सिद्धांतों का उपयोग;
- एथलीटों की अधिकतम क्षमता को विकसित करना;
- खेल विज्ञान के बारे में जानकारियों का प्रसार करना;
- अनुपूरक/स्वदेशी खाद्य तैयारियों का परीक्षण और प्रमाणीकरण;
- खेल प्रदर्शन में आयुर्वेदिक/होम्योपैथिक दवाओं का प्रयोग;
- खेल में चोटिल खिलाड़ियों का प्रबंधन और पुनर्वास;
- खेल विज्ञान और खेल चिकित्सा में आधारभूत और व्यावाहरिक अनुसंधान।

इससे खेल विज्ञान एवं खेल चिकित्सा में प्रशिक्षित विशेषज्ञों की संख्या में बढ़ोत्तरी करने में सहायता मिलेगी तथा विदेशी विशेषज्ञों पर निर्भरता में कमी आएगी।

खेलों के प्रोत्साहन में राज्यों की भूमिका

भारतीय संविधान की सातवीं सूची–II (राज्य सूची) की प्रविष्टि संख्या 33 के अंतर्गत 'खेल' राज्य का विषय हैं। खेलों के प्रोत्साहन एवं विकसित करने की प्राथमिक ज़िम्मेदारी राज्यों की है। विभिन्न खेलों के प्रोत्साहन एवं विकसित करने तथा राज्यों में खेल का बुनियादी ढांचा व खेल सुविधाएं सुनिश्चित करने के साथ–साथ प्रतिभाशाली खिलाड़ियों की पहचान कर उन्हें प्रशिक्षण के माध्यम से विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय खेल प्रतिस्पर्धाओं हेतु तैयार करने की दिशा में केंद्र सरकार सहायता प्रदान करती है।

भारत के विभिन्न राज्यों में सरकारों ने बेहतर नीतिगत खेल प्रबंधन हेतु अनेक पहल की हैं, जिन्हें हम तालिका–3 के माध्यम से समझ सकते हैं।

साथ ही, राज्यों में खेल शिक्षा एवं शोध कार्यों को प्रोत्साहन देने

तालिका–5: टोक्यो ओलंपिक 2020 मेडल टैली

रैंक	देश/पदक	स्वर्ण	रजत	कांस्य	कुल पदक
1	अमेरिका	39	41	33	113
2	चीन	38	32	18	88
3	जापान	27	14	17	58
4	ग्रेट ब्रिटेन	22	21	22	65
5	रूसी लंपिक समिति	20	28	23	71
6	ऑस्ट्रेलिया	17	7	22	46
7	नीदरलैंड	10	12	14	36
8	फ्रांस	10	12	11	33
9	जर्मनी	10	11	16	37
10	इटली	10	10	20	40
48	भारत	1	2	4	7

तालिका–6: टोक्यो पैरालंपिक 2020 मेडल टैली

रैंक	देश / पदक	स्वर्ण	रजत	कांस्य	कुल पदक
1	चीन	96	60	51	207
2	ग्रेट ब्रिटेन	41	38	45	124
3	अमेरिका	37	36	31	104
4	रूसी पैरालंपिक समिति	36	33	49	118
5	नीदरलैंड	25	17	17	59
6	यूक्रेन	24	47	27	98
7	ब्राज़ील	2	20	30	72
8	ऑस्ट्रेलिया	21	29	30	80
9	इटली	14	29	26	69
10	अज़रबाइजान	14	1	4	19
24	भारत	5	8	6	19

हेतु खेल विश्वविद्यालयों की स्थापना की जा रही है; (तालिका–4) उल्लेखनीय है कि कुल 10 विश्वविद्यालयों में से सात की स्थापना 2018 या उसके बाद हुई है।

वहीं दूसरी ओर, राज्य सरकारों द्वारा खेलों के प्रोत्साहन में अनेक महत्वपूर्ण पहल की जा रही हैं। जैसे, ओडिशा सरकार, भारतीय हॉकी टीम को आगामी एक दशक तक प्रायोजित करेगी। वहीं, उत्तर प्रदेश सरकार ने वर्ष 2032 में आयोजित होने वाले ओलंपिक खेलों तक भारतीय कुश्ती टीम को गोद लेकर अपनाया है। इससे न केवल खिलाड़ियों को विभिन्न खेलों में बेहतर प्रदर्शन हेतु प्रोत्साहन मिलेगा अपितु समाज में खेलों के प्रति सकारात्मक सोच भी विकसित होगी। मिज़ोरम में हाल ही में खेलों को 'उद्योग' का दर्जा दिया गया है। इस निर्णय का मुख्य उद्देश्य राज्य में खेलों के व्यावसायीकरण को प्रोत्साहन देना है ताकि निजी कंपनियों को खेलों में निवेश हेतु आकर्षित किया जा सके।

खेलों में उपलब्धियां

भारत में केंद्र व राज्य सरकारों की विभिन्न नीतिगत एवं संस्थागत पहलों तथा महत्त्वपूर्ण कार्यक्रमों के प्रयासों को विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय खेल प्रतिस्पर्धाओं में पदक के माध्यम से समझा जा सकता है। टोक्यो ओलम्पिक 2020 में भारत कुल 7 पदक जीतकर 48वें स्थान पर रहा (तालिका–5) और टोक्यो पैरालम्पिक 2020 खेलों में कुल 19 पदक लेकर 24वें स्थान पर रहा (तालिका–6)। 2018 में गोल्ड कोस्ट 21वें राष्ट्रमंडल खेलों में भारत कुल 66 पदकों के साथ तीसरे स्थान पर रहा था (तालिका–7) और 2018 में ही हुए एशियन गेम्स में 69 पदकों के साथ 8वें स्थान पर रहा (तालिका–8)।

खेलों में प्रमुख चुनौतियां

ग्रामीण भारत में विगत दशकों के दौरान खेल एवं खेल गतिविधियों को मात्र मनोरंजन के रूप में देखा गया है। प्राचीन कहावत है कि पढ़ोगे, लिखोगे, बनोगे नवाब; खेलोगे, कूदोगे, बनोगे खराब। ऐसी कहावतें बच्चों के दिलोदिमाग में यही बात बैठाने में सफल होती हैं कि खेलना–कूदना दोयम दर्जे की चीज़ है जो बचपन से ही उनमें खेलों के प्रति नकारात्मक सोच विकसित करती है। मानव जीवन में विभिन्न खेलों एवं खेल गतिविधियों की उपयोगिता, चाहे वह बेहतर स्वास्थ्य से जोड़कर, या बेहतर भविष्य के तौर पर, या बेहतर जीविकोपार्जन के रूप में हो; को प्रायः उतनी मान्यता नहीं दी गई है।

कुछ राज्यों को छोड़कर, प्रायः गांवों में रहने वाले अभिभावक आज भी अपने बच्चों की शिक्षा हेतु तो यथासंभव प्रयास करते हैं परन्तु बात जब बच्चों को खेल गतिविधियों में प्रोत्साहन देने की होती है तो उनकी सोच व मनोवृत्ति अलग रूप ले लेती है। इसके अनेक कारण हो सकते हैं, पर सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह निकल कर आती है कि बच्चे अगर पढ़ना–लिखना सीख लेते हैं तो उन्हें रोज़गार मिलने में आसानी होती है और वे अपने घर–परिवार में

तालिका–7: गोल्ड कोस्ट इक्कीसवें राष्ट्रमंडल खेल मेडल टैली 2018

रैंक	देश / पदक	स्वर्ण	रजत	कांस्य	कुल पदक
1	आस्ट्रेलिया	80	59	59	198
2	इंग्लैंड	45	45	46	136
3	भारत	26	20	20	66
4	कनाडा	15	40	27	82
5	न्यूज़ीलैंड	15	16	15	46
6	दक्षिण अफ्रीका	13	11	13	37

तालिका–8: एशियन गेम्स मेडल टैली 2018

रैंक	देश / पदक	स्वर्ण	रजत	कांस्य	कुल पदक
1	चीन	132	92	65	289
2	जापान	75	56	74	205
3	दक्षिण कोरिया	49	58	70	177
4	इंडोनेशिया	31	24	43	98
5	उज़्बेकिस्तान	21	24	25	70
6	ईरान	20	20	22	62
7	चीनी ताइपी	17	19	31	67
8	भारत	15	24	30	69

आर्थिक रूप से सहयोग करने में सक्षम होते हैं, जबकि खेल–कूद की गतिविधियों से शायद ही यह संभव हो।

ग्रामीण एवं शहरी, दोनों क्षेत्रों में, अभिभावकों की ऐसी मनोवृत्तियों के फलस्वरूप अनेक प्रतिभाशाली युवा खिलाड़ी अपनी वास्तविक खेल प्रतिभाओं को न तो पोषित व विकसित कर पाते हैं, अपितु घर–परिवार की ज़िम्मेदारियों के बोझ तले दबकर खेल प्रतिभाओं एवं कौशल को बीच मंझदार में ही छोड़ देते हैं।

इसी क्रम में, फेडरेशन ऑफ़ इंडियन चैम्बर ऑफ़ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री की वर्ष 2018 की रिपोर्ट के अनुसार भारत में 62 प्रतिशत युवा विभिन्न खेलों में रूचि तो रखते हैं परन्तु उनमें से केवल एक प्रतिशत ही सक्रिय रूप से विभिन्न खेलों में भाग लेते हैं। अतः खेलों में कम सहभागिता तथा अन्य कारणों से विभिन्न खेल प्रतिस्पर्धाओं में हमें कम पदक प्राप्त होते हैं।

साथ ही, खेलों में चुनौतियों की बात करें तो आज भी ग्रामीण क्षेत्रों में सरकारों द्वारा चलाई जा रही खेल प्रोत्साहन की योजनाओं की संपूर्ण जानकारी का अभाव विभिन्न सर्वेक्षणों के माध्यम से पता लगाया जा सकता है। वहीं दूसरी ओर, भले राज्य सरकारों द्वारा अनेक नीतिगत व संस्थागत प्रयास किए जाते रहे हो परन्तु खेलों को प्रोत्साहन देने हेतु भौतिक अधोसंरचना का अभाव ग्रामीण क्षेत्रों में स्पष्ट रूप से देखा व महसूस किया जा सकता है।

खेल में युवाओं हेतु रोज़गार के अवसर

तालिका–9 के माध्यम से युवाओं हेतु विभिन्न खेलों में भविष्य के अवसर साफतौर से देखे व समझे जा सकते हैं।

तालिका–9: खेलों में नौकरी के बाज़ार व भविष्य के अवसर

अपेक्षाकृत सामान्य अवसर	अपेक्षाकृत नए अवसर
कोचिंग	टिप्पणीकार (कमेंटेटर) व खेल विशेषज्ञ
रेफरिंग / अंपायरिंग	खेल प्रौद्योगिकी विशेषज्ञ
स्कोरिंग	खेल मीडिया (पत्रकारिता, लेखक, आदि)
डेटा विश्लेषण	खेल पोषण विशेषज्ञ
खेल प्रबंधन (एमबीए)	खेल वकील

स्रोतः फिक्की, स्पोर्ट्स डेवलपमेंट एंड यूथ इंगेजमेंट, 2018

साथ ही, ग्रामीण एवं शहरी युवाओं को, खेल गतिविधियों में भाग लेने के अलावां निम्नलिखित खेल संबंधी विभिन्न क्षेत्रों में रोज़गार, स्वरोज़गार एवं उद्यमिता हेतु नए अवसरों का सृजन किया जा सकता हैं–

खेल पोषण	खेल औषधि	खेल प्रशिक्षण	खेल अर्थशास्त्र	खेल प्रबंधन
खेल वस्तुएं	खेल मनोविज्ञान	खेल पर्यटन	खेल पत्रकारिता	खेल विश्लेषण

इंडिया ब्रांड इक्विटी फाउंडेशन के अनुसार, खेल उद्योग श्रम–आधारित होने के कारण, पांच लाख से अधिक लोगों को रोज़गार प्रदान करते हैं। अतः खेल उद्योग को प्रोत्साहित कर युवाओं में बेरोज़गारी की समस्या को दूर करने की दिशा में प्रयास बेहतर पहल हो सकते हैं।

ग्रामीण भारत में खेल प्रोत्साहन हेतु सुझाव

- खेलों के प्रति जन सामान्य की सोच "खेलोगे, कूदोगे, बनोगे लाजवाब", विकसित करने में व्यवहारात्मक परिवर्तन पर विशेष ज़ोर;
- ग्रामीण–स्तर पर प्रतिभाशाली खिलाड़ियों की पहचान कर उन्हें सरकार की विभिन्न योजनाओं से जोड़ना, जिससे वे अपनी प्रतिभा विकसित कर अपने राज्य व राष्ट्र हेतु विभिन्न खेलों में पदक विजेता बन सकें;
- ग्रामीण एवं ब्लॉक–स्तर पर स्थानीय खेलों को प्रोत्साहित करने हेतु प्रति वर्ष खेल–त्यौहार के रूप में वातावरण तैयार कर विभिन्न खेल प्रतिस्पर्धाओं का आयोजन किया जा सकता है;
- ग्राम पंचायत की विकास योजनाओं (जीपीडीपी) के माध्यम से खेल वस्तुओं की खरीदारी, खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन, खेल अधोसंरचना का निर्माण एवं खिलाड़ियों को आर्थिक सहायता जैसे कार्यों के माध्यम से विभिन्न खेलों को प्रोत्साहन के साथ–साथ इन कार्यों का सामाजिक अंकेक्षण सुनिश्चित करना;
- निजी क्षेत्र के साथ–साथ गैर–सरकारी संगठनों, जन–प्रतिनिधियों, प्रभावशाली व्यक्तियों द्वारा खेल या खिलाड़ियों को गोद लेने की संस्कृति को विकसित करने की पहल पर ज़ोर देकर ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में विभिन्न खेलों व खिलाड़ियों को प्रोत्साहित किया जा सकता है;
- सामाजिक नवाचार के माध्यम से विभिन्न खेलों एवं खिलाड़ियों को प्रोत्साहन देना। जैसा कि हरियाणा सरकार ने राज्य में खेलों को बढ़ावा देने हेतु युवा माताओं के सहयोग से उनके बच्चों को हर प्रकार की खेल गतिविधियों से जोड़ने हेतु 'मदर्स फॉर स्पोर्ट्स एंड फिटनेस एप' के माध्यम से प्रयास किया है।

संक्षेप में, खेल गतिविधियां एक स्वस्थ समाज के निर्माण में अमूल्य योगदान देने के साथ–साथ जनचेतना, सामाजिक समरसता एवं आर्थिक–सांस्कृतिक विकास को भी उत्प्रेरित करती हैं। अतः हमें समाज में खेलों को 'शिक्षा के समतुल्य' माने जाने वाली सोच को जनसामान्य में विकसित करने की ओर प्रयास करना चाहिए, तभी हम एक बेहतर समावेशी एवं विकसित राष्ट्र के लक्ष्य को प्राप्त कर सकेंगे।

(लेखक छत्तीसगढ़ के राज्य योजना आयोग में सलाहकार रह चुके हैं। लेख में व्यक्त विचार निजी हैं।)

ई–मेल : info@drnileshtiwari.com

ग्रामीण क्षेत्रों में खेलों का विकास

–राकेश थपलिया

इसमें दो राय नहीं हो सकती कि विश्व–स्तर पर खेलों में भारत के विकास का केंद्रबिंदु दूरदराज क्षेत्रों के बेहद पिछड़े हुए वे गांव हैं जहां अभी तक खेलों की मूलभूत सुविधाएं भी पूरी तरह उपलब्ध नहीं हैं। अंतर्राष्ट्रीय–स्तर पर चमकने वाले भारत के 80 प्रतिशत से अधिक जुनूनी खिलाड़ियों की जड़ें गांवों की मिट्टी में गहरी पैठ बनाए हुए हैं। हमारे गांव और दूरदराज के इलाके प्रतिभा से भरे हुए हैं। हमें इन प्रतिभाशाली युवाओं के बारे में सोचना होगा और यह सुनिश्चित करना होगा कि उन्हें सभी संसाधन एवं सुविधाएं मिलें। इसलिए इस बात की सख्त ज़रूरत है कि देश के कोने–कोने में पंचायत और ज़िला–स्तर पर आधुनिक ट्रेनिंग सेंटर बनाए जाएं।

इस वर्ष कोरोना संकट के बीच टोक्यो में हुए ओलंपिक और पैरालंपिक खेलों में भारतीय खिलाड़ियों की ऐतिहासिक सर्वश्रेष्ठ सफलता को देखते हुए अब हर कोई पूरे विश्वास के साथ यह कहने लगा है कि भारत में 'खेल संस्कृति' विकसित हो रही है।

इसमें दो राय नहीं हो सकती कि विश्व–स्तर पर खेलों में भारत के विकास का केंद्रबिंदु दूरदराज क्षेत्रों के बेहद पिछड़े हुए वे गांव हैं जहां अभी तक खेलों की मूलभूत सुविधाएं भी पूरी तरह उपलब्ध नहीं हैं। अंतर्राष्ट्रीय–स्तर पर चमकने वाले भारत के 80 प्रतिशत से अधिक जुनूनी खिलाड़ियों की जड़ें गांवों की मिट्टी में गहरी पैठ बनाए हुए हैं। इसलिए इस बात की सख्त ज़रूरत है कि देश के कोने–कोने में पंचायत और ज़िला–स्तर पर आधुनिक ट्रेनिंग सेंटर बनाए जाएं।

इस समय अनेक राज्य सरकारें ओलंपिक पदक विजेता खिलाड़ियों के गांव या उसके आसपास के क्षेत्रों में स्टेडियम या ट्रेनिंग सेंटर बनाने की घोषणाएं कर रही हैं या योजनाएं बना रही हैं। 'खेल' वैसे तो राज्य का विषय हैं लेकिन केंद्र सरकार अपनी विभिन्न योजनाओं के माध्यम से राज्य सरकारों को साथ लेकर देशभर में विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में आधुनिक खेल सुविधाएं उपलब्ध कराने में जुटी हुई है। ऐसा पहले कभी देखने को नहीं मिला है।

'न्यू इंडिया' भारत की कुछ अलग तस्वीर दिखाता है। खेल प्रेमी प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने पूरे देश में यह भरोसा जगाया है कि निचले–स्तर से लेकर उच्च–स्तर तक खिलाड़ियों को सुविधाओं की कोई कमी नहीं होने दी जाएगी। प्रधानमंत्री का यह कहना एकदम सही है कि हमारे गांव और दूरदराज के इलाके प्रतिभा से भरे हुए हैं, हमें अपने युवाओं के बारे में सोचना होगा और यह सुनिश्चित करना होगा कि उन्हें सभी संसाधन एवं सुविधाएं मिलें। इन क्षेत्रों में कई युवा खिलाड़ी हैं जिनमें पदक

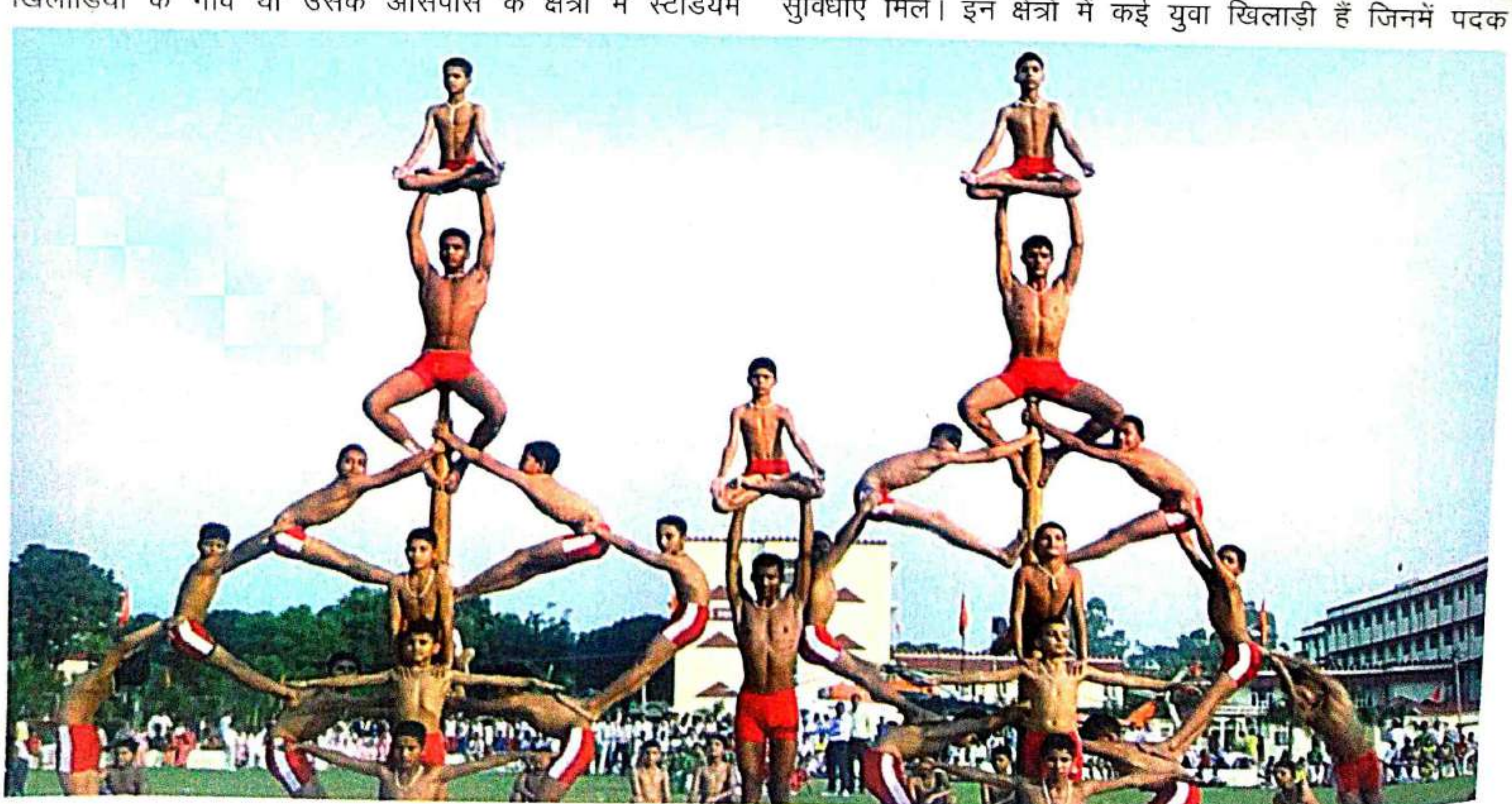

मलखम्ब महाराष्ट्र और मध्य प्रदेश में ज़्यादा लोकप्रिय है। मध्य प्रदेश में 2013 से मलखम्ब को राज्य खेल का दर्जा हासिल है।

जीतने की क्षमता है। आज देश उन तक पहुंचने की कोशिश कर रहा है, ग्रामीण क्षेत्रों पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है।

स्थानीय प्रतिभाओं की पहचान करने के लिए देश भर में 360 खेलो इंडिया केंद्र स्थापित किए गए हैं। जल्द ही यह संख्या बढ़ाकर 1,000 कर दी जाएगी। खिलाड़ियों को उपकरण, मैदान और अन्य संसाधन तथा बुनियादी ढांचा उपलब्ध कराया जा रहा है। देश खुले दिल से अपने खिलाड़ियों की मदद कर रहा है। खेलों को अगले स्तर तक ले जाने के लिए अलग–अलग क्षेत्रों के विशेषज्ञों को लेकर ओलंपिक टास्क फोर्स का गठन किया गया है। इनके द्वारा ओलंपिक में भारत के प्रदर्शन में सुधार के लिए रोडमैप बनाया गया है। इसके अलावा, टारगेट ओलंपिक पोडियम स्कीम और खेलो इंडिया योजना के जरिए केंद्र सरकार निचले से उच्च स्तर तक, गांवों से शहरों तक खेलों के विकास के लिए कार्य करती है। हमारे खिलाड़ी इन दो बड़ी योजनाओं का हिस्सा बनने के लिए पुरज़ोर प्रयास करते दिखाई देते हैं।

आज़ादी के 74 वर्ष बाद भी कुछ बनने और देश का नाम रोशन करने की तमन्ना रखने वाले सैकड़ों–हज़ारों खिलाड़ियों को शुरुआती ट्रेनिंग के लिए अपने गांवों से 15 से 20 किलोमीटर दूर तक जाना पड़ता है। इस मामले में ताज़ा उदाहरण के रूप में जेवलिन थ्रो में स्वर्ण पदक विजेता नीरज चोपड़ा, वेटलिफ्टिंग में रजत पदक जीतने वाली मीराबाई चानू, कांस्य पदक पाने वाली मुक्केबाज़ लवलीना बोरगोहेन के नाम लिए जा सकते हैं। ये सभी, बेहतर खिलाड़ी बनने की चाह में हरियाणा, मणिपुर और असम में अपने गांवों से मीलों दूर ट्रेनिंग सेंटरों में जाने को मज़बूर हुए थे। मीराबाई तो करियर की शुरुआत में ट्रकों में 'लिफ्ट' लेकर लगभग 20 किलोमीटर दूर ट्रेनिंग करने जाया करती थीं। यही वजह है कि टोक्यो से लौटकर मीराबाई ने इन ट्रक ड्राइवरों को तोहफे देकर उनका आभार भी जताया। मीराबाई के गले में आज जो ओलंपिक पदक है, वह इन ट्रक ड्राइवरों की मदद के बिना पूरा हो ही नहीं सकता था।

यह माना जाता है कि एक अच्छा खिलाड़ी तैयार करने के लिए अच्छे कोच, अच्छी खुराक व आधुनिक सुविधाओं वाला ट्रेनिंग सेंटर ज़रूरी है, लेकिन इसके साथ–साथ यातायात के सरकारी व प्राइवेट साधनों का होना भी बहुत ज़रूरी है। इससे माता–पिता अपने बच्चों को खिलाड़ी बनाने के लिए घर से ट्रेनिंग सेंटर तक भेजने में ज़्यादा दिलचस्पी लेते हैं। अच्छी सड़कें भी खिलाड़ियों को तैयार करने में मददगार होती हैं। यह तथ्य पढ़ने में कुछ अजीब–सा लग सकता है पर यह सच्चाई है। देश के ग्रामीण इलाकों में जहां अच्छी सड़कें नहीं हैं वहां यात्रा कितनी कष्टदायी होती है, इस तथ्य को वहां के निवासियों से बेहतर कोई और नहीं जान सकता है। सड़क अच्छी हो तो आराम के साथ यात्रा का समय कम हो जाता है और खिलाड़ियों को ट्रेनिंग या प्रतियोगिताओं में भाग लेने के लिए आने–जाने में बहुत सुविधा हो जाती है।

वर्तमान केन्द्र सरकार इस दिशा में काफी कुछ कर रही है। उत्तर, दक्षिण, पूर्व और पश्चिम के दूरदराज के इलाकों में ट्रेनिंग सेंटर खोले जाने के साथ–साथ बेहतरीन हाइवे और गांव–गांव को सड़कों से जोड़ने का कार्य भी तेजी से किया जा रहा है।

कम सुविधाओं के बावजूद भारत में खेल प्रतिभाएं गांवों से बड़ी संख्या में निकल कर आ रही हैं। इसकी वजह बताते हुए पॉवरलिफ्टिंग में द्रोणाचार्य पुरस्कार से सम्मानित भूपेन्द्र धवन अपने 35 वर्षों से अधिक खेल प्रशिक्षण अनुभव के आधार पर कहते हैं, 'हमारे देश के गांवों में रहने वाले बच्चों की एक बड़ी खासियत यह है कि वे एक बार खिलाड़ी बनने की ठान लेते हैं तो फिर आसानी से पीछे नहीं हटते हैं।'

कभी हार न मानने और सफलता के लिए पूरी एकाग्रता के साथ जी–तोड़ मेहनत करने की वजह से ही ग्रामीण परिवेश के खिलाड़ी ओलंपिक, एशियाड और कॉमनवेल्थ खेलों के साथ–साथ विश्व चैम्पियनशिपों में लगातार शानदार प्रदर्शन कर यह संदेश दे रहे हैं कि अगर पदक चाहिए तो सरकार को गांव–गांव तक उच्च–स्तर की सुविधा वाले प्रशिक्षण केंद्र खोलने होंगे।

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी अपने बेहद लोकप्रिय कार्यक्रम 'मन की बात' में अक्सर खेलों को बढ़ावा देने की बात करते हैं। वह खिलाड़ियों और उनके परिवार के सदस्यों के साथ भी लगातार संवाद करते रहते हैं। उनकी समस्याओं को सुनते हैं और उन्हें बेहतर से बेहतर सुविधाएं उपलब्ध कराने में कोई कसर नहीं छोड़ते हैं। उन्होंने हमारे पैरा एथलीटों को भी सम्मान और सुविधाओं के मामले में सामान्य खिलाड़ियों के समकक्ष ला खड़ा करने में कसर नहीं छोड़ी है। ये तमाम खिलाड़ी ग्रामीण पृष्ठभूमि से आते हैं और आधुनिक सुविधाएं इन तक पहुंचाने के लिए सरकार को अभी लंबी राह तय करनी है।

भारत में खेल संस्कृति को विकसित करने के लिए अपने तरीकों और प्रणाली में सुधार करते रहना होगा। अब अंतर्राष्ट्रीय खेलों को बढ़ावा देने के साथ–साथ पारंपरिक खेलों को भी नई पहचान मिल रही है।

प्रधानमंत्री की खेल सुविधाओं को देशभर में ग्रामीण क्षेत्रों तक पहुंचाने की सोच को साकार करने के लिए 2017 में 'खेलो इंडिया' की शुरुआत की गई थी। 2018 में पहली बार आयोजित 'खेलो इंडिया' गेम्स भारत में ज़मीनी–स्तर की खेल प्रतियोगिताओं के लिए एक प्रमुख बदलाव लाए हैं। तब से, कई बार खेलो इंडिया गेम्स का आयोजन किया गया है जिसमें यूथ, यूनिवर्सिटी और विंटर गेम्स शामिल हैं। 'खेलो इंडिया' कार्यक्रम में राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों में खेलो इंडिया राज्य उत्कृष्टता केंद्रों (केआईएससीई) तथा खेलो इंडिया केंद्रों (केआईसी) के रूप में कई खेल बुनियादी ढांचों को आधुनिक सुविधाओं से लैस करना भी शामिल है। वर्तमान में, 26 राज्यों/केंद्रशासित प्रदेशों में 27 केआईएससीई हैं, जबकि देश के विभिन्न ज़िलों में 360 केआईसी खोले गए हैं। इनकी संख्या

स्वदेशी खेलों गतका, कलारीपयट्टू, थांग–ता और मलखम्ब के साथ योग को प्रोत्साहन

केंद्र सरकार अपनी विभिन्न योजनाओं के माध्यम से न केवल ग्रामीण भारत में खेल और खिलाड़ियों को ज़्यादा–से–ज़्यादा सुविधाएं दे रही है बल्कि स्वदेशी खेलों को भी खूब बढ़ावा दिया जा रहा है। ये खेल देश के अनेक ग्रामीण हिस्सों में बहुत लोकप्रियता रखते हैं। खेल मंत्रालय ने हरियाणा में आयोजित होने वाले खेलो इंडिया यूथ गेम्स–2021 में चार स्वदेशी खेलों को शामिल करने को मंजूरी दी है। इन खेलों में गतका, कलारीपयट्टू, थांग–ता और मल्लखम्ब शामिल हैं। कोरोना की तीसरी संभावित लहर को ध्यान में रखते हुए अब इन खेलों का आयोजन फरवरी 2022 में किया जाएगा। भारत में स्वदेशी खेलों की एक समृद्ध विरासत है और इन खेलों को संरक्षित करना, प्रोत्साहन देना और लोकप्रिय बनाना खेल मंत्रालय अपनी प्राथमिकता मानता है।

थांग–ता

खेलो इंडिया गेम्स से बेहतर दूसरा कोई मंच नहीं है, जहां इन खेलों के खिलाड़ी प्रतिस्पर्धा करें और इनका जमकर प्रचार–प्रसार हो सके। इनकी बहुत लोकप्रियता है और इनका प्रसारण देशभर में टेलीविज़न पर किया जाता है। यह माना जा रहा है कि 2021 में खेलो इंडिया यूथ गेम्स में योगासन के साथ ये चार प्रतिस्पर्धा देश के खेल उत्साही दर्शकों और युवाओं का अपनी ओर अधिक ध्यान आर्कषित करेंगे। यही नहीं, आने वाले वर्षों में खेलो इंडिया गेम्स में और अधिक स्वदेशी खेलों को शामिल करने की योजना भी है।

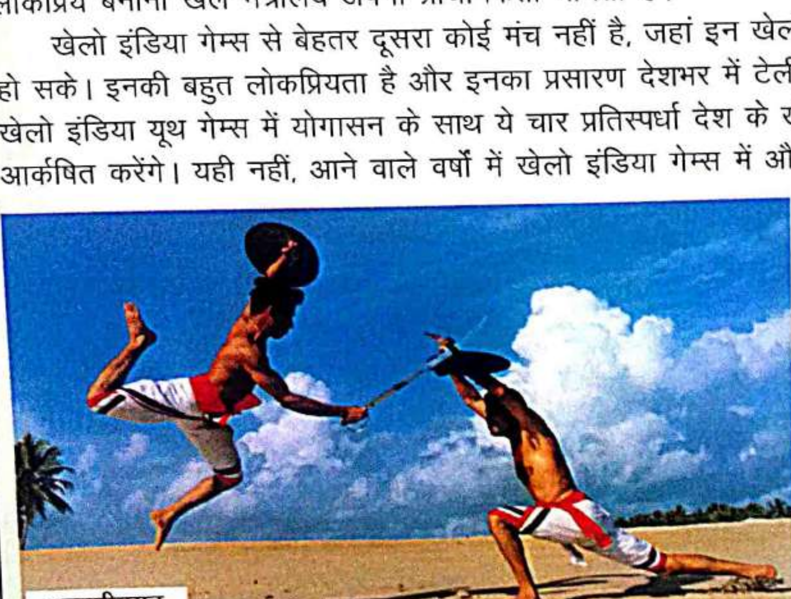
कलारीपयट्टू

ये चार चयनित खेल देश के अलग–अलग हिस्सों का प्रतिनिधित्व करते हैं।

कलारीपयट्टू की उत्पत्ति केरल में हुई है और इसे खेलने वाले पूरे विश्व में हैं। बॉलीवुड अभिनेता विद्युत जामवाल इनमें से एक हैं।

मल्लखम्ब को मध्य प्रदेश ने 2013 में अपना राज्य खेल घोषित कर दिया था। मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र इस खेल का मुख्य केंद्र हैं। इस खेल का टोक्यो ओलंपिक 2020 में प्रदर्शन होना था लेकिन कोविड प्रोटोकाल की वजह से ऐसा संभव नहीं हो पाया।

गतका खेल का संबंध पंजाब से है और यह निहंग सिख योद्धाओं की पारंपरिक लड़ाई शैली है। वे इसका उपयोग आत्मरक्षा के साथ–साथ खेल के रूप में भी करते हैं।

थांग–ता मणिपुर का एक मार्शल आर्ट है, जो पिछले कुछ दशकों के दौरान लुप्त होता जा रहा है, लेकिन 'खेलो इंडिया' यूथ गेम्स की मदद से इसे एक बार फिर राष्ट्रीय पहचान मिलेगी।

खेल मंत्रालय का मानना है कि **योगासन** को खेलों के रूप में मान्यता मिलने से जो प्रतिस्पर्धा पैदा होगी, उससे दुनिया भर के लोगों में योग के प्रति रुचि बढ़ेगी। खेल और आयुष, दोनों मंत्रालय 'योगासन' को एक प्रतिस्पर्धी खेल के रूप में स्थापित करने के लिए मिलकर काम कर रहे हैं। योगासन को खेलो इंडिया, यूनिवर्सिटी गेम्स और राष्ट्रीय खेलों में एक 'खेल' के रूप में शामिल करने की योजना बनाने के साथ किसी भी अन्य खेल की तरह इसका लक्ष्य और उद्देश्य ओलंपिक खेलों में शामिल होना है और यह एक लंबी यात्रा की शुरुआत है।

गतका

जल्द से जल्द एक हज़ार करने की योजना है। गांव–गांव में खेलों के विकास के लिए यह एक विस्तृत और सार्थक योजना है।

'खेल' राज्य का विषय है। अपने राज्यों में खेलों और खिलाड़ियों के विकास की नीतियां बनाना और उनका कार्यान्वन करना राज्य सरकारों की ज़िम्मेदारी है। इसके बावजूद केंद्र सरकार राज्यों की हर संभव मदद करते हुए उन्हें साथ लेकर देश में खेलों की विकास यात्रा को बढ़ाना चाहती है। इसी कड़ी में युवा मामले एवं खेल मंत्री श्री अनुराग सिंह ठाकुर ने अभी हाल ही में राज्यों के खेल मंत्रियों के साथ बातचीत में भारत के भविष्य के चैम्पियनों को सर्वोत्तम प्रशिक्षण, बुनियादी ढांचे, चिकित्सा सुविधाओं आदि सहित सभी महत्वपूर्ण सुविधाओं के साथ अपनी पूरी क्षमता से योगदान करने के लिए कहा है।

खेल प्रतियोगिताओं के साथ–साथ ब्लॉक एवं ज़िला–स्तर पर राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों के शैक्षणिक संस्थानों में नवोदित प्रतिभाओं की शीघ्र पहचान करने पर भी सरकार का ज़ोर है। खेलमंत्री ने राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों से राष्ट्र के खेल इकोसिस्टम को मज़बूत करने के उद्देश्य को आगे बढ़ाने के लिए केआईएससीई, केआईसी के साथ–साथ अकादमियां खोलने के प्रस्ताव भेजने का भी आग्रह किया है जिससे ग्रामीण भारत में खेलों का विकास तेज़ी से हो सकेगा।

केंद्र सरकार ने राज्य सरकारों से नकद पुरस्कारों का एक ऐसा साझा पूल बनाने के बारे में अपनी राय भेजने के लिए कहा जहां केंद्र और राज्य सरकारें दोनों मिलकर धन जमा कर सकें ताकि सभी राज्यों के खिलाड़ियों को पदक जीतने पर समान रूप से लाभ मिल सके। इसका बड़ा लाभ ग्रामीण इलाकों के उन खिलाड़ियों को मिलेगा जिनके राज्य आर्थिक रूप से मज़बूत नहीं हैं और जो अन्य राज्यों की तुलना में अपने खिलाड़ियों को कम इनामी राशि देते हैं। इसके अलावा, विभिन्न अंचलों में क्षेत्रीय बैठकें की जाएंगी जिससे क्षेत्रीय–स्तर पर सुविधाएं बढ़ाई जा सकें।

एक ऐसा डैशबोर्ड बनाने पर भी विचार किया जा रहा है जहां हर राज्य, ज़िला और ब्लॉक में उपलब्ध खेल के बुनियादी ढांचे से संबंधित डेटा उपलब्ध होगा। यह डैशबोर्ड कोचों की उपलब्धता, इनडोर स्टेडियमों में किस तरह के खेल खेले जाएंगे या आउटडोर खेलों आदि के बारे में सभी प्रासंगिक जानकारियां देगा और ये सभी विवरण एक बटन दबाने पर उपलब्ध होंगे।

विभिन्न खेलों के लिए 'प्रतिभा खोज' कार्यक्रम का आयोजन किया जाएगा, जिससे देश में कम उम्र में ही प्रतिभाओं की पहचान की जा सके और उन्हें भविष्य की प्रतियोगिताओं के लिए अच्छी तरह प्रशिक्षित कर सकें। राज्यों से अनुरोध किया गया है कि खिलाड़ियों को प्रतिस्पर्धा के अधिक से अधिक अवसर देने के लिए और प्रतियोगिताएं आयोजित की जाएं और उन्हें राज्य–स्तर, ज़िला–स्तर तथा राष्ट्रीय–स्तर पर अधिक स्पर्धाओं में भाग लेने का मौका मिले। इससे ग्रामीण इलाकों में रहने वाले खिलाड़ियों कों प्रतियोगिताओं में भाग लेने का ज़्यादा अवसर मिलेगा। इससे ग्रामीण क्षेत्रों में खेलों के विकास कार्यों में निश्चित रूप से तेज़ी आएगी।

खेल मंत्रालय ने ग्रामीण, आदिवासी और पिछड़े क्षेत्रों सहित देश भर में खेलों को बढ़ावा देने के लिए कई योजनाएं बनाई हैं। खेलो इंडिया योजना की 'प्रतिभा खोज और विकास' वर्टिकल योजना के तहत पहचाने और चुने गए 'खेलो इंडिया' खिलाड़ियों को प्रति खिलाड़ी प्रति वर्ष 6.28 लाख रुपये की वार्षिक वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है। इसमें 1.20 लाख रुपये प्रति वर्ष पॉकेट भत्ता के रूप में दिया जाता है और कोचिंग, खेल विज्ञान सहायता, आहार, उपकरण, उपभोज्य, बीमा शुल्क आदि जैसी अन्य सुविधाओं के लिए 5.08 लाख रुपये दिए जाते हैं।

खेल मंत्रालय ने ग्रामीण, आदिवासी और पिछड़े क्षेत्रों सहित देश भर में खेलों को बढ़ावा देने के लिए निम्नलिखित योजनाएं तैयार की हैं–

1. खेलो इंडिया योजना 2. राष्ट्रीय खेल संघों को सहायता 3. अंतर्राष्ट्रीय खेल आयोजनों के विजेताओं और उनके प्रशिक्षकों को विशेष पुरस्कार 4. राष्ट्रीय खेल पुरस्कार, प्रतिभाशाली खिलाड़ियों को पेंशन 5. पंडित दीनदयाल उपाध्याय राष्ट्रीय खेल कल्याण कोष 6. राष्ट्रीय खेल विकास कोष और 7. भारतीय खेल प्राधिकरण के माध्यम से खेल प्रशिक्षण केंद्रों का संचालन।

इन योजनाओं से लाभान्वित होने वाले ज़्यादातर खिलाड़ी देश के ग्रामीण, पिछड़े, आदिवासी और महिला आबादी से आते हैं तथा उन्हें योजनाओं के अनुमोदित मानदंडों के अनुसार आवासीय एवं गैर–आवासीय आधार पर नियमित प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है।

खेलो इंडिया योजना के तहत ज़मीनी–स्तर पर दो श्रेणियों में प्रतिभा खोज शुरू की गई है– 1. खेलों की संभावित प्रतिभा की पहचान करना। 2. सिद्ध प्रतिभा की पहचान करना। इसके अलावा, प्रतिभा की पहचान करने के लिए भारत को उत्तर, पूर्व, पश्चिम, दक्षिण और उत्तर–पूर्व इन पांच क्षेत्रों में बांटा गया है। संभावित और सिद्ध खिलाड़ियों को शॉर्टलिस्ट करने के लिए देश के हर कोने तक पहुंचने के लिए कई 'ग्रासरूट ज़ोनल टैलेंट आइडेंटिफिकेशन कमेटी' का गठन किया गया है।

8 से 14 आयु वर्ग में उन 20 खेल विधाओं में प्रतिभाओं की पहचान की जाती है, जिनमें देश में अंतर्राष्ट्रीय–स्तर पर उत्कृष्टता प्राप्त करने की क्षमता/लाभ होता है।

विभिन्न राज्यों/केंद्रशासित प्रदेशों में ज़िला–स्तर पर योजना के तहत अधिसूचित प्रत्येक खेलो इंडिया केंद्र प्रति खेल पांच लाख रुपये का एक बार मिलने वाला अनुदान और प्रति खेल पांच लाख रुपये का आवर्ती अनुदान प्राप्त करने के लिए पात्र है।

खेलो इंडिया योजना के 'राज्य–स्तरीय खेलो इंडिया केंद्र' वर्टिकल के तहत, खेल मंत्रालय ने देश भर में 1,000 खेलो इंडिया केंद्र स्थापित करने का निर्णय लिया है, जिनमें से 360 खेलो इंडिया केंद्रों को पहले ही शुरू किया जा चुका है। खेलो इंडिया योजना के 'राष्ट्रीय/क्षेत्रीय/राज्य खेल अकादमियों को समर्थन' वर्टिकल

केंद्र सरकार ने खेल कोटे के तहत सरकारी नौकरियों के लिए 20 नए खेलों को मान्यता दी है। इसमें अनेक खेल ऐसे हैं जो ग्रामीण इलाकों में प्रचलित और लोकप्रिय हैं। इससे इनके खिलाड़ियों को रोज़गार मिलेगा। यह सूची 43 से बढ़ाकर 63 कर दी गई है। सूची में शामिल किए गए 20 नए खेल हैं– बेसबॉल, बॉडीबिल्डिंग, साइकिल पोलो, बधिर खेल, तलवारबाज़ी, कुडो, मलखम्ब, मोटरस्पोर्ट्स, नेट बॉल, पैरा स्पोर्ट्स (पैरालंपिक्स और पैरा एशियन गेम्स में शामिल विषय), पेन्सकसिलाट, रोल बॉल, रग्बी, सेपकटेकरा, सॉफ्ट टेनिस, शूटिंग बॉल, टेनपिन बॉलिंग, ट्रायथलॉन, टग–ऑफ–वॉर और वुशू।

के तहत अब तक देश भर में 236 खेल अकादमियों को मान्यता दी गई है।

प्रत्येक खेलो इंडिया केंद्र (केआईसी) को कोच के रूप में पूर्व चैम्पियन एथलीट के मेहनताना, सहायक स्टाफ, उपकरण की खरीद, खेल किट, उपभोग के लिए सामग्रियां, प्रतियोगिता और आयोजनों में भागीदारी के लिए अनुदान प्रदान किया जाएगा। 26 राज्यों/केंद्रशासित प्रदेशों के 267 ज़िलों में 360 केआईसी खोले गए हैं।

इन केंद्रों द्वारा प्रतिभा पूल के चयन को अंतिम रूप दिया जाना बाकी है। प्रत्येक केआईसी को मौजूदा सुविधा के विकास, खेल मैदान, खेल उपकरण और उपभोग योग्य सामग्रियों आदि के लिए शुरूआत में 5 लाख रुपये का अनावर्ती अनुदान प्रदान किया जाता है। इसके अतिरिक्त, अगले चार वर्षों तक प्रत्येक साल 5 लाख रुपये आवर्ती अनुदान के रूप में खेल उपकरणों की खरीद व उपभोग के लिए खेल किट आदि और बतौर कोच/सलाहकार नियुक्त पूर्व चैम्पियन खिलाड़ियों के पारिश्रमिक जैसे आवर्ती व्यय को पूरा करने के लिए दिए जाते हैं।

खेलो इंडिया योजना और भारतीय खेल प्राधिकरण (साई) की खेल प्रोत्साहन योजनाओं यानी राष्ट्रीय उत्कृष्टता केंद्र, साई प्रशिक्षण केंद्र (एसटीसी), एसटीसी का विस्तार केंद्र और राष्ट्रीय खेल प्रतिभा प्रतियोगिता के तहत ओलंपिक 2028 सहित अंतर्राष्ट्रीय खेल आयोजनों में भाग लेने के लिए देश के ग्रामीण क्षेत्रों के खिलाड़ियों सहित, प्रतिभा की पहचान की जाएगी और चिन्हित खिलाड़ियों एवं टीमों को निखारा जाएगा।

राष्ट्रीय खेल संघों को सहायता देने से जुड़ी योजना और टारगेट ओलंपिक पोडियम स्कीम (टॉप्स) के तहत प्रतिभाशाली खिलाड़ियों को प्रशिक्षण और प्रतिस्पर्धाओं में हिस्सा लेने के अवसर प्रदान किए जाते हैं। टॉप्स के तहत, ओलंपिक 2028 सहित अंतर्राष्ट्रीय आयोजनों के लिए संभावित पदक विजेताओं को खास प्रशिक्षण प्रदान किया जाएगा। यह योजना इतनी सार्थक और फलदायी है कि ओलंपिक और पैरालंपिक 2020 में पदक जीतने वाले अधिकांश खिलाड़ी इसी टॉप्स योजना का हिस्सा रहे हैं। देश का हर युवा खिलाड़ी जो अंतर्राष्ट्रीय–स्तर पर पदक जीतने की चाह लिए अभ्यास करता है, उसका शुरुआती लक्ष्य 'खेलो इंडिया' और उसके बाद 'टॉप्स' योजना में शामिल होने का रहता है। इससे उसके देश–विदेश में प्रशिक्षण, नवीनतम उपकरण और अन्य हर संभव सहायता के साथ आर्थिक मदद भी खूब हो जाती है।

भारतीय खेल प्राधिकरण (साई), युवा मामले और खेल मंत्रालय के तहत एक स्वायत्त निकाय है। यह प्रतिभाशाली खिलाड़ियों की पहचान करने व उन्हें राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में उत्कृष्टता प्राप्त करने को लेकर प्रशिक्षित करने के लिए देशभर में निम्नलिखित खेल प्रोत्साहन योजनाओं को लागू कर रहा है– राष्ट्रीय उत्कृष्टता केंद्र (एनसीओई), साई प्रशिक्षण केंद्र (एसटीसी), एसटीसी का विस्तार केंद्र।

राष्ट्रीय खेल प्रतिभा प्रतियोगिता (एनएसटीसी)

इसकी उप योजनाएं – नियमित विद्यालय, स्वदेशी खेल तथा मार्शल आर्ट (आईजीएमए) और अखाड़े हैं।

साई ने देशभर में उपरोक्त खेल प्रोत्साहन योजनाओं को लागू करने के लिए 23 एनसीओई और 67 एसटीसी की स्थापना की है। साई की उपरोक्त खेल प्रोत्साहन योजनाओं के कार्यान्वयन के लिए एनसीओई, एसटीसी और विस्तार केंद्र आदि सहित कुल 189 केंद्र कार्यरत हैं। इन केंद्रों में लगभग 9025 खिलाड़ियों (5579 लड़के और 3446 लड़कियां) को प्रशिक्षित किया जा रहा है।

टारगेट ओलंपिक पोडियम स्कीम (टॉप्स) के तहत भारत

रायपुर किला महोत्सव

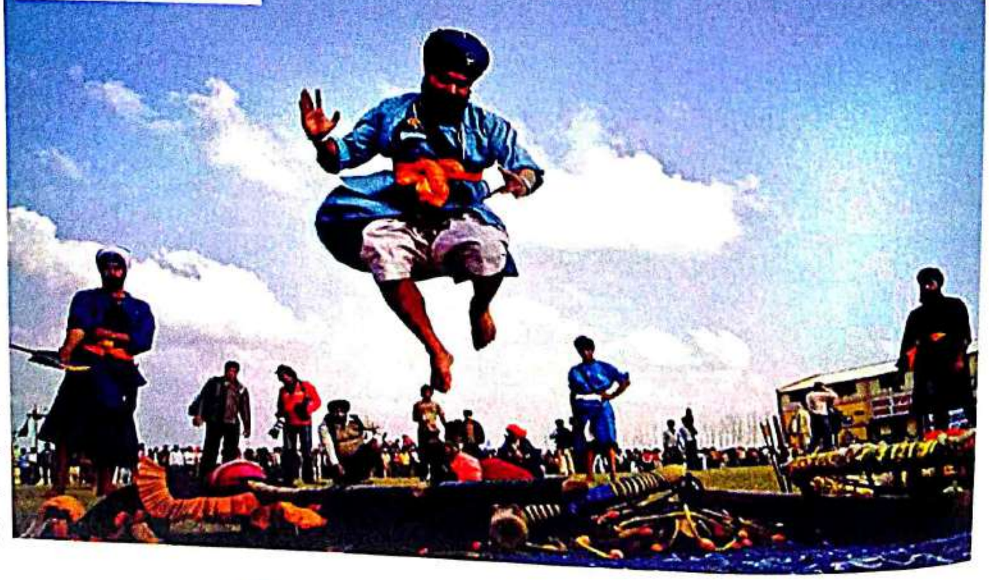

सरकार ओलंपिक और पैरालंपिक खेलों की तैयारी कर रहे भारत के शीर्ष खिलाड़ियों को सहायता प्रदान करती है। मंत्रालय की सामान्य योजनाओं के तहत अन्य सहायता उपलब्ध नहीं होने पर चयनित खिलाड़ियों को अनुकूलित प्रशिक्षण के लिए राष्ट्रीय खेल विकास कोष (एनएसडीएफ) से वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है। कोर ग्रुप खिलाड़ियों को आउट ऑफ पॉकेट अलाउंस (ओपीए) 50,000 रुपये प्रति माह का भुगतान किया जाता है। ओपीए के अलावा, खिलाड़ी द्वारा पेश प्रशिक्षण योजना के पूरे खर्च को टॉप्स के तहत प्रदान किया जाता है।

मिशन ओलंपिक सेल (एमओसी) इस खर्च पर विचार और इसका अनुमोदन करती है। वर्तमान में, इस योजना के तहत कोर ग्रुप के रूप में 147 व्यक्तिगत खिलाड़ियों और 2 हॉकी टीमों (पुरुष और महिला) का चयन किया गया है। टॉप्स विकास समूह के खिलाड़ी को 25,000 रुपये का ओपीए और राष्ट्रीय उत्कृष्टता केंद्र (एनसीओई) में अनुकूलित प्रशिक्षण सहायता मिल रही है।

वर्ष 2021 में खेल मंत्रालय ने 14.30 करोड़ रुपये के कुल बजट अनुमान के साथ 7 राज्यों में कुल 143 'खेलो इंडिया' केंद्र समर्पित किए हैं। इन केंद्रों में एक–एक विशेष खेल का प्रशिक्षण उपलब्ध कराया जाएगा। इन राज्यों में महाराष्ट्र, मिज़ोरम, गोवा, कर्नाटक, मध्य प्रदेश, अरुणाचल प्रदेश और मणिपुर शामिल हैं। इस योजना के जरिए ग्रामीण क्षेत्रों में खेलों का जमकर विकास होगा। इसमें राज्यों के अनुसार विभाजन निम्न प्रकार से है–

महाराष्ट्र– 30 ज़िलों में 3.60 करोड़ रुपये के बजट अनुमान के साथ 36 खेलो इंडिया केंद्रों की शुरुआत करना।

मिज़ोरम– कोलासिब ज़िले में 20 लाख रुपये के बजट अनुमान के साथ 2 खेलो इंडिया केंद्रों का शुभारंभ।

अरुणाचल प्रदेश– 26 ज़िलों में 4.12 करोड़ रुपये के बजट अनुमान के साथ 52 खेलो इंडिया केंद्रों को खोलना।

मध्य प्रदेश– 40 लाख रुपये के बजट अनुमान के साथ 4 खेलो इंडिया केंद्रों को शुरू करना।

कर्नाटक– 3.10 करोड़ रुपये के बजट अनुमान के साथ 31 खेलो इंडिया केंद्रों को खोलना।

मणिपुर– 1.60 करोड़ रुपये के बजट अनुमान के साथ 16 खेलो इंडिया केंद्र शुरू करना।

गोवा– 20 लाख रुपये के बजट अनुमान के साथ 2 खेलो इंडिया केंद्र खोलना।

खेल मंत्रालय द्वारा देश भर में ज़मीनी–स्तर के खेल बुनियादी ढांचे की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए राज्य सरकारों के साथ साझेदारी में खेलो इंडिया केंद्र शुरू किए गए हैं।

> नई शिक्षा नीति के अंतर्गत भी खेलों को शिक्षा के साथ बहुत बढ़ावा देने की व्यवस्था की गई है। इससे ग्रामीण क्षेत्रों के स्कूलों में भी खेल सुविधाएं बढ़ेंगी। ज़मीनी–स्तर से उच्च शिक्षा तक बढ़ावा देने और फिर उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए इसमें आगे बढ़ने का अवसर प्रदान करने के लिए स्कूलों के लिए प्रस्तावित राष्ट्रीय खेल शिक्षा बोर्ड (एनएसईबी) का उद्देश्य शहरी व ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा और खेल का एक साथ विकास करना है।

खेल मंत्रालय ने जून 2020 में देश के प्रत्येक ज़िले में कम से कम एक खेलो इंडिया केंद्र के हिसाब से 4 साल की अवधि में 1,000 नए खेलो इंडिया केंद्र खोलने की योजना बनाई थी। जबकि इससे पहले कई राज्यों में 217 खेलो इंडिया केंद्र खोले गए थे। यह निर्णय भी लिया गया था कि उत्तर–पूर्वी राज्यों, जम्मू और कश्मीर, अंडमान और निकोबार द्वीप समूह, लक्षद्वीप और लद्दाख के ज़िलों के लिए अपवाद के रूप में प्रत्येक ज़िले में दो खेलो इंडिया केंद्र होंगे। इसमें सरकार काफी हद तक सफल भी रही है और इनसे ग्रामीण क्षेत्रों में खेल सुविधाओं में बढ़ोत्तरी होनी शुरू हो गई है।

खिलाड़ियों को पंडित दीनदयाल उपाध्याय राष्ट्रीय कल्याणकारी निधि योजना के तहत वित्तीय सहायता दी जाती है। इससे भी ग्रामीण क्षेत्रों में खेलों के विकास में मदद मिलती है। यह योजना निम्नलिखित उद्देश्य के लिए है– 1. गरीबी की हालत में रहने वाले खिलाड़ियों की सहायता; 2. मृतक खिलाड़ियों के परिवारों की सहायता, खिलाड़ियों या परिवार के सदस्यों को इलाज के लिए मदद; 3. खेल प्रतियोगिताओं के लिए प्रशिक्षण और खेल के दौरान लगी चोटों के लिए सहायता; 4. प्रशिक्षण, उपकरणों की खरीद और राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय खेल आयोजनों में भागीदारी के लिए सहायता; 5. कोच और सहायक कर्मियों को सहायता; 6. कोच और सहायक कर्मियों को इलाज के लिए मदद। इस योजना के तहत अनेक खिलाड़ियों को एक करोड़ से अधिक की वित्तीय सहायता दी जा चुकी है।

खेल मंत्रालय तथा गृह मंत्रालय के बीच एक अंतर मंत्रालय साझेदारी के तहत ओलंपिक खेलों के विकास के प्रति झुकाव के कारण शिलांग में असम राइफल्स पब्लिक स्कूल को एक खेलो इंडिया खेल विद्यालय के रूप में नामित किया गया है।

खेल मंत्रालय ने खेलो इंडिया के तहत देश में नौ खेल विद्यालयों को मंजूरी दी है। इनके जरिए विद्यार्थियों को स्कूलों में विशेष खेल प्रशिक्षण दिया जाएगा। ऐसे पांच खेल विद्यालयों का प्रबंधन रक्षा एवं अर्ध–सैनिक बलों द्वारा किया जाता है। ये स्कूल पूर्वोत्तर, ग्रामीण या जनजातीय क्षेत्रों में प्रतिभाओं की पहचान और उनके उत्थान में भी मददगार साबित होंगे।

पंजाब के ज़ीरकपुर में भारतीय खेल प्राधिकरण का नया क्षेत्रीय केंद्र बनाया गया है। यह भारत के उत्तरी हिस्से के लिए मुख्य साई केंद्रों में से एक के रूप में कार्य करेगा।

भारत का उत्तरी हिस्सा जम्मू–कश्मीर और लेह से हिमाचल प्रदेश तक एक विशाल क्षेत्र में फैला हुआ है और इसमें विश्वस्तरीय खेल सुविधाओं के निर्माण के उद्देश्य से इस क्षेत्र में बहुत विकास किया जा रहा है।

FIT INDIA

फिट इंडिया अभियान

"फिटनेस की डोज़, आधा घंटा रोज़"

—प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी

माननीय प्रधानमंत्री द्वारा 29 अगस्त, 2019 को राष्ट्रीय खेल दिवस के अवसर पर फिट इंडिया मूवमेंट शुरू किया गया था, जिसका उद्देश्य फिटनेस को प्रत्येक भारतीय के जीवन का अभिन्न अंग बनाना था। आज यह जन आंदोलन बन गया है। प्रधानमंत्री की संकल्पना के अनुरूप राष्ट्रव्यापी फिट इंडिया अभियान का उद्देश्य प्रत्येक भारतीय को रोज़मर्रा के जीवन में फिट रहने के साधारण और आसान तरीके शामिल करने के लिए प्रेरित करना है। प्रधानमंत्री के शब्दों में "फिट इंडिया अभियान को एक राष्ट्रीय लक्ष्य बनना चाहिए। फिट इंडिया अभियान को सरकार द्वारा शुरू तो किया जा सकता है लेकिन इसकी अगुवाई लोगों को करनी होगी और इसे सफल बनाना होगा।"

आज़ादी का अमृत महोत्सव के हिस्से के रूप में और फिट इंडिया मूवमेंट की दूसरी वर्षगांठ के साथ–साथ राष्ट्रीय खेल दिवस के अवसर पर 29 अगस्त, 2021 को फिट इंडिया मोबाइल ऐप भी लॉच किया गया। यह ऐप प्रत्येक भारतीय को एक मोबाइल के सहारे फिटनेस स्तर की जांच करने की सुविधा देता है। इस ऐप में फिटनेस स्कोर, एनिमेटेड वीडियो, गतिविधि ट्रैकर्स और व्यक्तिगत विशिष्ट ज़रूरतों को पूरा करने वाली 'मेरी योजना' जैसी कुछ अनूठी विशेषताएं हैं। फिट इंडिया ऐप निःशुल्क है और एंड्रॉइड और आईओएस दोनों प्लेटफॉर्म पर अंग्रेजी और हिंदी में उपलब्ध है।

कुछ सप्ताह पूर्व खेल मंत्री श्री अनुराग ठाकुर ने जम्मू–कश्मीर और लेह तथा लद्दाख क्षेत्रों में अनेक खेल सुविधाओं की सौगात दी है। केंद्र सरकार ने पूरे केंद्रशासित प्रदेश जम्मू–कश्मीर में खेल के मैदानों और इंडोर स्टेडियमों के विकास के लिए प्रधानमंत्री विकास योजना के तहत 200 करोड़ रुपये की धनराशि निर्धारित की है। इससे जम्मू–कश्मीर के सभी ज़िलों में एक–एक अत्यधिक सुसज्जित इंडोर स्टेडियम बनेंगे।

केंद्रशासित प्रदेश के लिए खेलो इंडिया योजना के तहत 40 केंद्रों को मंजूरी दी गई है, जहां किसी खेल विशेष में प्रतिभा और रुचि को देखते हुए युवाओं को प्रशिक्षित किया जाएगा। यही नहीं, खिलाड़ियों को वैज्ञानिक तरीके से प्रशिक्षण देने के लिए कार्यक्रमों की रूपरेखा तैयार की जा रही है। केंद्रशासित प्रदेश जम्मू–कश्मीर के खेल प्रेमियों, खासतौर पर बडगाम, अनंतनाग और पुलवामा के युवा खिलाड़ियों के लिए तीन सुसज्जित इंडोर स्टेडियमों का उद्घाटन हुआ है और उन्हें खेल गतिविधियों के लिए खोल दिया गया है। पुलवामा में हॉकी टर्फ बिछाने का काम भी ज़ोरों पर चल रहा है। इससे गांवों में रहने वाली हॉकी प्रतिभाओं को बहुत फायदा पहुंचेगा।

पहाड़ में खेल सुविधाओं की बात करें तो जम्मू–कश्मीर, लेह और लद्दाख में बर्फ पर खेले जाने वाले शीतकालीन खेलों और पानी के खेलों के लिए बहुत कुछ किया जा रहा है। एक और पहाड़ी राज्य उत्तराखंड में भी खेल सुविधाओं के विकास पर विशेष ध्यान देने की ज़रूरत है। यहां की प्रतिभाएं गांवों में सुविधाओं के अभाव में दम तोड़ रही हैं। उत्तराखंड में पिथौरागढ़ ज़िले के तहसील मुख्यालय मुनस्यारी गांव में फुटबॉल व अन्य खेलों में लड़के और लड़कियां विशेष रुचि रखते हैं पर उनके खेलने के लिए मैदान नहीं हैं। खिलाड़ी खेतों और पथरीले मैदान में खेलने को विवश हैं। ऐसी जगह अगर 'खेलो इंडिया' के माध्यम से ट्रेनिंग सेंटर खुल जाएं तो गांव की प्रतिभाएं निखर कर सामने आ सकती हैं। यहां दशकों से हर साल जोहर क्लब खेलोत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है। ऐसे एक नहीं अनेक ज़िले हैं जहां खेल सुविधाएं अभी तक पहुंची नहीं हैं।

फिट इंडिया मूवमेंट, फिट इंडिया फ्रीडम रन, फिट इंडिया मोबाइल ऐप, फिट इंडिया क्विज़ आदि जैसे विभिन्न अभियानों के माध्यम से फिटनेस की आदत को विकसित किया जा रहा है। जब गांव–गांव तक फिटनेस की जागरूकता फैलेगी तो निश्चित रूप से देश को अधिक बेहतर, स्वस्थ और तंदुरुस्त खिलाड़ी मिल सकेंगे जो अपने दमखम, चपलता और मानसिक मज़बूती के साथ खेल कौशल से विपक्षी खिलाड़ियों के छक्के छुड़ा सकेंगे।

केंद्र सरकार खेलों के बुनियादी ढांचे को विकसित देशों में उपलब्ध बुनियादी ढांचे के अनुरूप बनाने के लिए व्यापक योजना के तहत कार्य कर रही है जिसका लक्ष्य दूरदराज के ग्रामीण क्षेत्रों के खिलाड़ियों को ज़्यादा–से–ज़्यादा सुविधाएं उपलब्ध कराना है, ताकि वे ओलंपिक खेलों में अधिक से अधिक पदक जीतकर देश का नाम रोशन कर सकें। इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता है कि ग्रामीण क्षेत्रों के लिए केन्द्र व राज्य सरकारों द्वारा जो प्रयास किए जा रहे हैं, वह भारत को जल्दी ही एक 'खेल राष्ट्र' बनाने में बड़ी भूमिका निभाएंगे।

(लेखक वरिष्ठ खेल पत्रकार हैं। लेख में व्यक्त विचार निजी हैं।)
ई–मेल : sports.rakesh@gmail.com

भारत में खेलों में तकनीकी क्रांति

–कनिका वर्मा, मिशिका नय्यर

भारत में खेलों में तकनीकी क्रांति की शुरुआत हो चुकी है। हालांकि, यहां खेल तकनीक अभी बेहद शुरुआती दौर में है, लेकिन लगातार बेहतर नतीजे देखने को मिल रहे हैं। इससे निवेशकों का भरोसा भी बढ़ा है। अगर भारत को खेल के क्षेत्र में महाशक्ति बनना है, तो आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, मशीन लर्निंग और बिग डेटा जैसी नई तकनीक का इस्तेमाल करना होगा। नई तकनीक के इस्तेमाल से हम न सिर्फ शानदार खिलाड़ी तैयार कर पाएंगे, बल्कि खेलों से लोगों को जोड़ भी सकेंगे।

खेल को कुछ इस तरह से पारिभाषित किया जा सकता है– ऐसी तमाम शारीरिक गतिविधियां जो मूल रूप से प्रतिस्पर्धी होती हैं, जिनमें संगठित और आकस्मिक रूप से भागीदारी की जाती है और जो दर्शकों को मनोरंजन प्रदान करती हैं। साथ ही, इनका मकसद शारीरिक कौशल और क्षमता को बेहतर बनाना और इनका इस्तेमाल होता है। खेल कई तरह से हमारे जीवन को प्रभावित करते हैं–सामाजिक, सांस्कृतिक, भावनात्मक, राष्ट्रीय, व्यावसायिक और यहां तक कि मौद्रिक तरीके से भी। खेल कई तरीके से लोगों को जोड़ता है, चाहे कोई खेल खेलने का मामला हो, इसे देखने या विश्लेषण करने का या अपनी पसंदीदा टीम को समर्थन करने की बात हो। खेल लिंग, वर्ग और संस्कृति की पहचान को तोड़कर समुदायों के बीच एकता की भावना विकसित करते हैं। इसके अलावा, यह आपका हौंसला बढ़ाने और तनाव घटाने में भी मददगार हैं।

भारत में खेलों का इतिहास हज़ारों साल पुराना है और इसकी शुरुआत सिंधु घाटी सभ्यता से होती है। इस सभ्यता से जुड़े अवशेषों से पता चलता है कि प्राचीनकाल में भी भारत के लोग कई तरह के खेल खेलते थे, मसलन शतरंज, पासे का खेल, शिकार और बॉक्सिंग। वैदिककाल के दौरान 'देहवदा' को पूर्ण सिद्धि का एक तरीका माना जाता था। इसके अलावा, महाभारत और रामायण जैसे प्राचीन ग्रंथों में भी पासे के खेल का ज़िक्र मिलता है। इन ग्रंथों से यह भी पता चलता है कि ताकतवर और सक्षम लोग रथों की दौड़, तीरंदाजी, घुड़सवारी, सैन्य कौशल, कुश्ती, तैराकी, तलवारबाजी और शिकार जैसे खेलों में हिस्सा लेते थे। नालंदा और तक्षशिला जैसे प्राचीन विश्वविद्यालयों में छात्रों के बीच तैराकी, दौड़ और गेंद से जुड़े खेल काफी लोकप्रिय थे। भारत दुनिया के उभरते हुए देशों में शामिल है और यहां खेल से जुड़े कई कारोबारी अवसर मौजूद हैं। क्रिकेट और हॉकी में भारत के लोगों की काफी

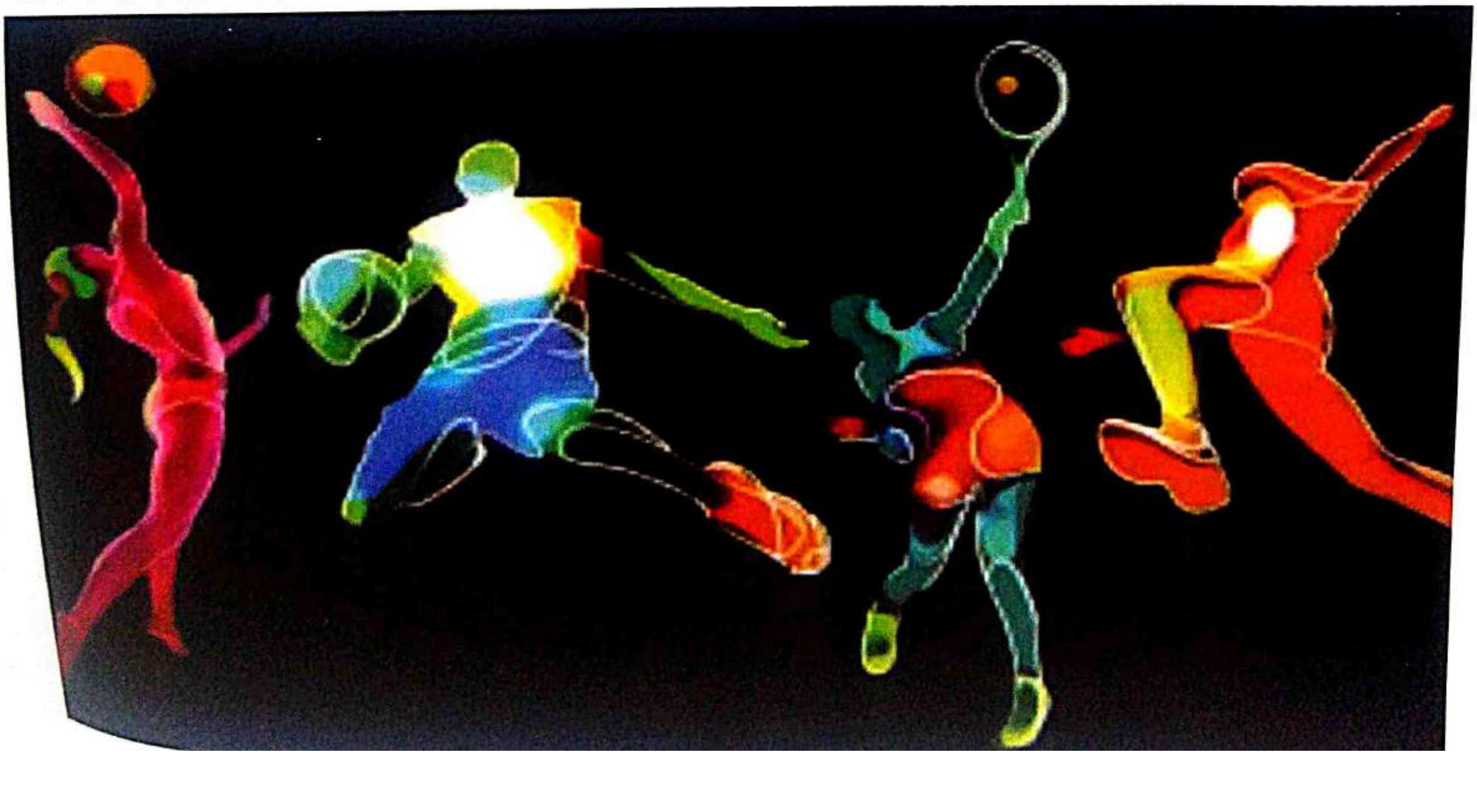

दिलचस्पी है, जबकि कुछ गांवों और शहरों में अभी भी पारंपरिक खेलों का प्रचलन जारी है। ऐसे कई पारंपरिक खेलों के आधार पर ही कई आधुनिक खेल विकसित हुए हैं। पंजाब में किला रायपुर में 'खेल उत्सव' का आयोजन किया जाता है, जो ग्रामीण ओलंपिक के तौर पर मशहूर है। इसी तरह, केरल मार्शल आर्ट के पुराने स्वरूप कलारीपयट्टू (Kalaripayattu) का ठिकाना है। मार्शल आर्ट के इस स्वरूप में शरीर और मन के बीच संतुलन स्थापित करने पर फोकस किया जाता है। पूर्वोत्तर राज्य मणिपुर में रग्बी की तरह का एक खेल है, जिसे युबी लकपी (Yubi Lakpi) कहा जाता है। मध्य भारत में तरह–तरह के कसरत–व्यायाम (ज़िमनास्टिक) की शुरुआत हुई थी जिसे 'मलखम्ब' (Mallakhamb) कहा जाता है। हिमाचल प्रदेश 'थोडा' (Thoda) जैसे खेल का ठिकाना रहा है। यह खेल पेंटबॉल और तीरंदाजी का मिला–जुला रूप होता है। भारतीय महाकाव्य महाभारत में भी इसका ज़िक्र मिलता है, जहां धनुष और तीर के ज़रिए बड़ी लड़ाईयां लड़ी गईं। जनजातीय इलाकों (नगालैंड) में कुश्ती का खेल लोकप्रिय था और विवाद निपटाने में भी इस खेल का इस्तेमाल होता था।

ग्रुपएम इंडिया की एक खेल डिवीज़न की रिपोर्ट के मुताबिक, साल 2020 में भारतीय खेल उद्योग का कारोबार 5,894 करोड़ रुपये रहा और इसका सबसे बड़ा हिस्सा मीडिया पर खर्च किया गया। इसमें टेलीविज़न, डिजिटल और प्रिंट मीडिया के विज्ञापनों पर हुए खर्च शामिल हैं। खेल उद्योग के कारोबार में मीडिया क्षेत्र की हिस्सेदारी 62 प्रतिशत यानी 3,657 करोड़ रुपये थी। मीडिया क्षेत्र में सबसे ज़्यादा हिस्सेदारी क्रिकेट की रही। क्रिकेट का हिस्सा 87 प्रतिशत यानी 5,133 करोड़ रहा और 13 प्रतिशत हिस्से में बाकी खेल शामिल रहे।

खेलों की दुनिया से जुड़े हर चरण में तकनीक का इस्तेमाल किया जा सकता है, मसलन खेलों के प्रसारण, दर्शकों को जोड़ने, आधुनिक उपकरण, लाइव प्रदर्शन आदि। साथ ही, खिलाड़ी के अभ्यास में भी तकनीक अहम भूमिका निभा सकती है। इससे पहले खेलों के प्रशिक्षण में बड़े पैमाने पर कागज़ी कार्रवाई की भी ज़रूरत पड़ती थी और अभ्यास के बाद भी खिलाड़ी और प्रशिक्षणकर्ता, दोनों को इस तरह की कवायद से गुज़रना पड़ता था। यह प्रणाली थकाऊ थी और इसमें समय भी ज़्यादा लगता था। हालांकि, इन गतिविधियों में बेहतर तकनीक का इस्तेमाल शुरू होने के साथ ही यह प्रक्रिया ज़्यादा सटीक और आसान हो गई है।

भारत में खेल और फिटनेस उद्योग के कारोबार में ज़बर्दस्त बढ़ोत्तरी देखने को मिली है। खेलों से जुड़े सामान में कपड़े और अन्य ज़रूरी आइटम शामिल हैं, जबकि फिटनेस से संबंधित आइटम में वैसी चीज़ें शामिल हैं जिनका इस्तेमाल व्यायाम के दौरान किया जाता है। ये सामान आपको स्वस्थ रखने में मददगार होते हैं और इनसे मांसपेशियों, हृदय और फेफड़े को मज़बूत बनाए रखने में मदद मिलती है। जीवनशैली में अनियमितता की वजह से होने वाली बीमारियों, मसलन मोटापा, मधुमेह, लकवा आदि में बढ़ोत्तरी की वजह से 'खेल' और 'फिटनेस' को लेकर जागरूकता बढ़ रही है। ऐसे में खेल और फिटनेस उद्योग में भी बढ़ोत्तरी देखने को मिल रही है। इस तरह के बाज़ार के लिए सोशल मीडिया भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। 'बिजनेस वायर' की एक रिपोर्ट के मुताबिक, 2021–2026 के दौरान भारतीय खेल और फिटनेस सामानों का बाज़ार 8.6 प्रतिशत सीएजीआर की दर से बढ़ सकता है। पहले जहां खेल में टीम और खिलाड़ी पर ध्यान होता था, वहीं अब फोकस खेल के मैदान पर हो गया है। आज के दौर में खेल उद्योग में कमाई की अच्छी संभावनाएं हैं और इनसे लाखों–करोड़ों रुपये हासिल किए जा सकते हैं, जैसे कि स्टेडियम में खाने–पीने की चीज़ों की बिक्री, टीवी प्रसारण का अधिकार, प्रायोजन, मीडिया आदि। खेलों से जुड़े आयोजन और टीम को अब कारोबारी अवसर के तौर पर देखा जा रहा है। इसके अलावा, खेल उद्योग न सिर्फ आय के प्रत्यक्ष साधनों के लिए गुंजाइश बनाता है, बल्कि पर्यटन, आधारभूत संरचना, विदेशी निवेश और नवाचार को भी बढ़ावा देता है और इसका असर सभी स्तरों पर देखने को मिलता है।

खेलों की दुनिया का संबंध पहले सिर्फ मनोरंजन से था और अब इसका दायरा काफी व्यापक हो गया है, जिसमें अलग–अलग पक्ष शामिल हैं। अत्याधुनिक तकनीक के आगमन के साथ ही खेल उद्योग में भी बदलाव हो रहे हैं। लोगों की दिलचस्पी रुझानों और प्रदर्शन पर नज़र रखने और उनके बारे में समझने में है। खिलाड़ी के प्रदर्शन को बेहतर करने के लिए खेल में तकनीक का सहारा लिया जाता है। इसे 'खेल तकनीक' के तौर पर जाना जाता है। खेल तकनीक में कई नई तकनीकों का इस्तेमाल किया जाता है, जैसे कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, मशीन लर्निंग, इंटरनेट ऑफ थिंग्स, वर्चुअल रियलिटी, रोबोटिक्स, ड्रोन, डिजिटाइजेशन आदि। इन तकनीकों के ज़रिए खेलों की स्थिति को बेहतर बनाने में मदद मिली है।

खेलों की दुनिया से जुड़े हर चरण में तकनीक का इस्तेमाल किया जा सकता है, मसलन खेलों के प्रसारण, दर्शकों को जोड़ने, आधुनिक उपकरण, लाइव प्रदर्शन आदि। साथ ही, खिलाड़ी के अभ्यास में भी तकनीक अहम भूमिका निभा सकती है। इससे पहले खेलों के प्रशिक्षण में बड़े पैमाने पर कागज़ी कार्रवाई की भी ज़रूरत पड़ती थी और अभ्यास के बाद भी खिलाड़ी और प्रशिक्षणकर्ता, दोनों को इस तरह की कवायद से गुज़रना पड़ता था। अभ्यास के दौरान, खिलाड़ी के प्रदर्शन से जुड़े बिंदुओं को नोट कर बाद में इस पर चर्चा की जाती थी। साथ ही, दर्द और चोट को लेकर भी बात होती थी। यह प्रणाली थकाऊ थी और इसमें समय भी ज़्यादा लगता था। हालांकि, इन गतिविधियों में बेहतर तकनीक का इस्तेमाल शुरू होने के साथ ही यह प्रक्रिया ज़्यादा सटीक और आसान हो गई है। डिजिटल तकनीक आने वाले समय में खेलों में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। इस तकनीक के ज़रिए पारंपरिक खेलों में खिलाड़ी और टीम के प्रदर्शन को बेहतर किया जा सकता है। साथ ही, दर्शकों के अनुभव को बेहतर बनाने और नए दर्शकों का ध्यान खींचने में भी यह उपयोगी साबित हो सकती है।

धीमी गति में रि–प्ले, डेटाबेस स्टोरेज और दूसरे खिलाड़ियों से तुलना आदि में तकनीक के इस्तेमाल से खिलाड़ियों को बड़े पैमाने

पर अपना खेल सुधारने में मदद मिली है। तकनीक के माध्यम से खिलाड़ी किसी खास अवधि में रफ्तार, दिशा, स्विंग, उछाल आदि की बेहतर तरीके से निगरानी कर पाते हैं। इससे खिलाड़ियों को अपनी रफ्तार और अन्य चीज़ें बेहतर करने में मदद मिलती है। तकनीक के ज़रिए खिलाड़ी के शरीर के हर अंग पर नज़र रखते हुए उसका आकलन किया जा सकता है, ताकि खेल में बेहतर प्रदर्शन की संभावना बन सके। खिलाड़ी और टीम के प्रदर्शन के लिए जीव विज्ञान और तकनीक (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, मशीन लर्निंग और डेटा एनालिटिक्स) का सहारा लिया जा सकता है। इस तरह, तय समय में खिलाड़ियों के प्रदर्शन, शारीरिक गतिविधि, रफ्तार, दिल की धड़कन, शरीर के तापमान आदि की रियल टाइम जानकारी हासिल की जा सकती है। इससे ज़रूरी कार्रवाई के लिए अहम जानकारी मिल पाएगी और खास परिस्थितियों, मसलन किसी खास मौसम या खेल के अलग–अलग चरण में सही रणनीति बनाने में मदद मिलेगी। उदाहरण के लिए, साइकिल चलाने वाले हेड्स–अप डिसप्ले चश्मा पहन सकते हैं, जिससे दिल की धड़कन, रफ्तार और अन्य चीज़ों के बारे में जानकारी मिल सकती है। इससे साइकिल चलाने वाले को ज़रूरत के हिसाब से अपनी गतिविधियों में बदलाव करने में सहूलियत होगी। तैराक और गोताखोर भी खेल तकनीक का इस्तेमाल कर कई तरह की तकनीकी मेट्रिक का पता लगा सकते हैं, ताकि वे अलग–अलग मोर्चों पर अपने प्रदर्शन को बेहतर बना सकें और अपना बहुमूल्य मिलीसेकेंड बचा सकें। इसके अलावा, प्रशिक्षक भोजन, नींद, व्यायाम, ऊर्जा आदि की निगरानी के लिए प्रशिक्षण प्रबंधन सॉफ्टवेयर का भी इस्तेमाल कर सकते हैं, जिससे थकान और चोट से निपटने में मदद मिलती है। कई खिलाड़ी अपने शरीर पर सेंसर या ''स्मार्ट कपड़े'' आदि का भी इस्तेमाल करते हैं जिससे रियल टाइम में प्रदर्शन पर नज़र रखने में मदद मिलती है।

इस तरह की जानकारी का इस्तेमाल खिलाड़ियों का प्रदर्शन बेहतर करने, चोट को रोकने, खिलाड़ियों की सुरक्षा को बेहतर बनाने और खेल की रणनीति तैयार करने में किया जा सकता है। इसके अलावा, प्रतिद्वंदी टीमें दूसरी टीम के खिलाफ रणनीति बनाने में भी इसका इस्तेमाल कर सकती हैं। खिलाड़ियों के कपड़े, खेल उपकरणों आदि में सेंसर का इस्तेमाल कर रियल–टाइम डेटा इकट्ठा किया जा सकता है। अभ्यास सत्र के दौरान, खिलाड़ी 'वर्चुअल रियलटी' और 'ऑगमेंटेड रियलिटी' जैसी तकनीक का इस्तेमाल कर मैच जैसे माहौल में बेहतर ढंग से अभ्यास कर सकते हैं। इससे जगह की कमी और प्रतिकूल मौसम जैसी दिक्कतों के बावजूद मैच का अभ्यास करना मुमकिन होता है। ये तकनीक रेफरी के लिए भी मददगार होंगी और वे (रेफरी) खेल को ज़्यादा बारीकी से देख सकेंगे। साथ ही, उनके पास रियल–टाइम डेटा का एक्सेस भी होगा। इन सुविधाओं की मदद से रेफरी को सही और सटीक फैसले लेने में मदद मिलेगी।

खेल तकनीक के विकास में वैश्विक–स्तर पर कई प्रमुख उपलब्धियां रही हैं जिनकी चर्चा यहां की जा सकती है। साल 1991 में टेनिस प्रतियोगिता विम्बल्डन में आईबीएम की 'सर्व–स्पीड तकनीक' का इस्तेमाल शुरू किया गया। इसके बाद क्रिकेट में 2008 में फैसले की समीक्षा का सिस्टम पेश किया गया, जिसके तहत तकनीक के आधार पर फैसला लेने का प्रावधान है। साल 2010 में स्पाइडरकैम तकनीक पेश की गई, जिसके तहत फिल्म और टेलीविज़न कैमरे को क्षैतिज और लंबवत, दोनों तरह से घुमाया जा सकता है। साल 2013 में छोटे रैकेट पेश किए गए जिसके हैंडल में चिप मौजूद थीं। यह चिप पॉवर और स्पिन से जुड़ा डेटा रिकॉर्ड करती है। साल 2014 में, फुटबॉल की दुनिया में गोल–लाइन तकनीक के साथ एक अहम नवाचार देखने को मिला। यह तकनीक यह पता लगाने में मददगार है कि वास्तव में गोल हुआ है या नहीं। इसके अलावा, 2016 में खिलाड़ियों की जर्सी पर सेंसर लगाए गए, ताकि उनकी सेहत पर नज़र रखी जा सके और चोट की रोकथाम में भी मदद मिले। इसके बाद 2017 में बैट पर स्मार्ट चिप लगाई गई, ताकि रफ्तार और एंगल के लिए बेहतर ढंग से विश्लेषण पेश किया जा सके। इसके अलावा, 2018 के फीफा विश्व कप में एनएफसी (नियर फील्ड्स कम्युनिकेशन) चिप से लैस 'टेलीस्टार 18 सॉकर बॉल' को पेश किया गया।

वैश्विक–स्तर पर हासिल की गई ये उपलब्धियां निश्चित तौर पर प्रशंसा के योग्य हैं। साथ ही, टेक्नोलॉजी के इस दौर में भारत भी पीछे नहीं है, जहां खेल और खेल प्रबंधन के क्षेत्र में डिजिटल मैपिंग, डेटा एनालिटिक्स, मशीन इंटेलिजेंस और अन्य तकनीक की पहुंच मुमकिन हुई है। टोक्यो ओलंपिक में भारत का प्रदर्शन बेहतर रहा है और इसकी सफलता का श्रेय काफी हद तक खेलों से जुड़ी आधारभूत संरचना और तकनीक में निवेश को भी जाता है। सरकार न सिर्फ इस निवेश को बेहतर खिलाड़ी तैयार करने का ज़रिया मानती है, बल्कि अर्थव्यवस्था में खेल तकनीक से जुड़े उद्योग के योगदान के महत्व को भी समझती है। सरकार इस बाज़ार में निजी क्षेत्र के खिलाड़ियों को निवेश के लिए भी प्रोत्साहित करने को लेकर बेहद सक्रिय है। टेक महिंद्रा, इंफोसिस, विप्रो, एचसीएल जैसी बड़ी कंपनियां भी खेल के क्षेत्र में तकनीकी समाधान पेश कर रही हैं। इसके तहत, खिलाड़ियों के फिटनेस और खेल संबंधी गतिविधियों की निगरानी से लेकर दर्शकों को जोड़ने संबंधी तकनीक शामिल हैं। इस क्षेत्र की बड़ी कंपनियां और स्टार्टअप भी मैंचेस्टर यूनाइटेड, क्रिकेट ऑस्ट्रेलिया और टेनिस प्रोफेशनल संघ जैसी इकाइयों के साथ साझेदारी कर रही हैं।

भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) ने 2019 में ब्रिटिश टेक्नोलॉजी कंपनी 'स्टैटस्पोर्ट्स' के साथ समझौता किया। बोर्ड ने जीपीएस आधारित निगरानी और विश्लेषण के लिए कंपनी के साथ यह समझौता किया है। इसके तहत, खिलाड़ियों की सक्रियता

टोक्यो ओलंपिक में भारत का प्रदर्शन बेहतर रहा है और इसकी सफलता का श्रेय काफी हद तक खेलों से जुड़ी आधारभूत संरचना और तकनीक में निवेश को भी जाता है। सरकार न सिर्फ इस निवेश को बेहतर खिलाड़ी तैयार करने का ज़रिया मानती है, बल्कि अर्थव्यवस्था में खेल तकनीक से जुड़े उद्योग के योगदान के महत्व को भी समझती है। सरकार इस बाज़ार में निजी क्षेत्र के खिलाड़ियों को निवेश के लिए भी प्रोत्साहित करने को लेकर बेहद सक्रिय है।

गोल लाइन टेक्नोलॉजी जिसका इस्तेमाल फुटबॉल में होता है।

की निगरानी के लिए तकनीक का इस्तेमाल किया जाएगा। यह डिवाइज़ खिलाड़ियों की शारीरिक मेट्रिक का आकलन करेगा, जिसमें दूरी, रफ्तार, तेज़ी से दौड़ने आदि के बारे में बारीक जानकारी मिल सकेगी। इस तरह, फिटनेस टीम खिलाड़ियों की गतिविधियों और चोट आदि का बेहतर ढंग से प्रबंधन कर पाएगी।

खेल तकनीक के क्षेत्र में स्टार्टअप संस्कृति को बढ़ावा देकर नई संभावनाओं के लिए बेहतर गुंजाइश बनाई जा सकती है। भारत में भी कुछ ऐसी कंपनियां हैं, जो इस क्षेत्र में बेहतर काम कर रही हैं। उदाहरण के लिए, बेंगलुरु की स्टार्टअप कंपनी 'स्टांसबीम' खिलाड़ियों के प्रशिक्षण की रियल–टाइम निगरानी की सुविधा मुहैया कराती है। साथ ही, कोच कहीं से भी खिलाड़ियों को सुझाव दे सकते हैं। 'स्टांसबीम' का प्लेटफॉर्म रिकॉर्ड किए गए प्रशिक्षण वीडियो, अभ्यास के सत्र, स्विंग मेट्रिक आदि की सुविधा भी उपलब्ध कराता है। कोच को भी इन चीज़ों की उपलब्धता मुहैया कराई जाती है और वे रियलटाइम में सुझाव दे सकते हैं। प्रशिक्षण का यह वर्चुअल प्लेटफॉर्म इस महामारी के दौरान क्रिकेट कोचिंग को डिजिटाइज़ कर इसे पूरी तरह से बदलने के लिए तैयार है।

इसी तरह, 'क्रिकोनेट' एक ऑनलाइन प्लेटफॉर्म है जिसे 2017 में एसइलेक्ट्रॉनिक इंडिया ने लांच किया था। यह लाइव स्ट्रीमिंग और वर्चुअल कोचिंग प्लेटफॉर्म है, जहां खिलाड़ियों को ऑनलाइन माध्यम से प्रशिक्षण मुहैया कराया जाता है। 'क्रिकोनेट' ने बेहतर तकनीक का इस्तेमाल कर ई–कोचिंग के लिए प्लेटफॉर्म तैयार किया है। यहां पर देशभर में कोई भी शख्स बेहतर कोच की सुविधा के लिए अपने मोबाइल से रजिस्ट्रेशन कर व्यक्तिगत रूप से प्रशिक्षण हासिल कर सकता है। गड़बड़ियों को बारीकी से देखने और उस पर चर्चा करने के लिए छात्र और कोच गेम के लिए वास्तविक वीडियो साझा कर सकते हैं।

भारत में खेलों में तकनीकी क्रांति की शुरुआत हो चुकी है। हालांकि, यहां खेल तकनीक अभी बेहद शुरुआती दौर में है, लेकिन लगातार बेहतर नतीजे देखने को मिल रहे हैं। इससे निवेशकों का भरोसा भी बढ़ा है। अगर भारत को खेल के क्षेत्र में महाशक्ति बनना है, तो आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, मशीन लर्निंग और बिग डेटा जैसी नई तकनीक का इस्तेमाल करना होगा। नई तकनीक के इस्तेमाल से हम न सिर्फ शानदार खिलाड़ी तैयार कर पाएंगे, बल्कि खेलों से लोगों को जोड़ भी सकेंगे।

रिसर्च कंपनी मार्केट सैंडमार्केट्स की एक रिपोर्ट के मुताबिक, 2021 में खेल तकनीक का वैश्विक बाज़ार 17.9 अरब डॉलर है और इसके 2026 तक 17.5 प्रतिशत सीएजीआर की दर से बढ़कर 40.2 अरब डॉलर हो जाने की संभावना है। हाल के वर्षों में खेलों से जुड़ी पेशवर संस्थाओं ने अपनी टीम के प्रदर्शन को बढ़ाने, दर्शकों को जोड़ने, बेहतर आधारभूत संरचना मुहैया कराने और खेल के पूरे अनुभव को एक अलग–स्तर पर पहुंचाने के लिए नई–नई तकनीक को अपनाया है। ऐसी तकनीक में डेटा एनालिटिक्स, स्मार्ट स्टेडियम, डिजिटल साइनेज आदि शामिल हैं।

आज के दौर में खेल, उसके नियम और खिलाड़ियों को बेहतर बनाने में तकनीक की अहम भूमिका है। अमेरिका, चीन और ब्रिटेन ने खेलों के लिए डेटा इकट्ठा करने और उसके विश्लेषण आदि के लिए उन्नत तकनीक का इस्तेमाल कर इस क्षेत्र में वैश्विक–स्तर पर सफलता हासिल की है और भारत भी इस दिशा में तेज़ी से आगे बढ़ रहा है। खेल तकनीक में निवेश के लिए निजी क्षेत्र को प्रोत्साहित करने के मकसद से सरकार कुछ और उपायों पर विचार कर सकती है। इससे न सिर्फ भारत में खेलों का स्तर बढ़ाने में मदद मिलेगी, बल्कि खेल उद्योग और तकनीक के ज़रिए खेलों के प्रशिक्षण में भी क्रांतिकारी बदलाव देखने को मिल सकेगा।

(लेखिका इंवय इनवेस्ट इंडिया की स्ट्रैटिजिक इनवेस्टमेंट रिसर्च यूनिट से संबद्ध हैं।)

ग्रामीण महिलाओं की खेलों में बढ़ती भागीदारी

–डॉ. श्रद्धा वशिष्ठ

इस बार ओलंपिक और पैरालम्पिक खेलों में नए भारत की नींव रखी गई है। ओलंपिक में 3 और पैरालम्पिक में भी 3 पदक भारतीय महिलाओं के नाम हुए जो कि हमारा आज तक का सबसे शानदार प्रदर्शन है। यह पदक प्रमाणित करते हैं कि हमारी देश की युवतियां हुनर, दमखम और शारीरिक क्षमता में किसी से कम नहीं हैं। साथ ही, सरकारी योजनाओं जैसे कि ओलंपिक पोडियम, फिट इंडिया और खेलो इंडिया ने भी महिला खिलाड़ियों के लिए वित्तीय सहायता से लेकर वैज्ञानिक प्रशिक्षण के प्रावधान जोड़े हैं। निःसंदेह नए भारत में आगे बढ़ने की ललक है और पॉलिसी लेवल पर भी उन्हें पूर्ण समर्थन मिल रहा है।

"स्पोर्ट्स से खेल भावना पैदा होती है जो मैदान पर और मैदान से बाहर, दोनो ही जगह महत्वपूर्ण है। और यही कारण है कि मैं अक्सर कहता हूं – जो खेले, वो खिले।"

–प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी

भारत एक ऐसा देश है जहां प्राचीनकाल में स्त्रियों को पुरुषों के बराबर दर्जा प्राप्त था। वह विभिन्न विधाओं, जिन्हें अब खेलों के रूप में खेला जाता है, उनको प्राप्त करती थीं और उनमें पारंगता हासिल करती थीं। लेकिन समय के साथ बाहरी देशों के हमलों और बढ़ती सामाजिक कुरीतियों के चलते महिलाएं घर की चारदीवारी तक सीमित हो गईं। ब्रिटिश राज मे महिलाओं की खेलों में भागीदारी थोड़ी–बहुत बढ़ी लेकिन बेहतर अवसर महिलाओं को आज़ादी के बाद ही प्राप्त हुए। स्वतंत्रता के पश्चात् महिलाओं की खेलों में भागीदारी को बढ़ाने के लिए बहुत–सी योजनाओं का शिलान्यास हुआ। बदलाव की लहर चली। बहुत–सी महिला खिलाड़ियों ने विभिन्न खेलों में विश्व–स्तर पर अपना लोहा मनवाया। ग्रामीण परिवेश की महिलाएं जैसे कि पी.टी. उषा, मीराबाई चानू, मैरी कॉम, गीता फोगाट, दीपिका कुमारी इत्यादि खेल जगत का अभिन्न हिस्सा बनीं जिन्होंने परिस्थितियों के विपरीत जाकर सफलता प्राप्त की और लाखों ग्रामीण महिलाओं को प्रेरित किया।

ओलंपिक और पैरालम्पिक में भारतीय महिलाओं का प्रदर्शन

ओलंपिक और पैरालम्पिक खेलों में भारतीय महिलाओं ने बेहतरीन प्रदर्शन कर कुल 6 पदक अर्जित किए। भारत के युवा मामले एवं खेल मंत्री श्री अनुराग ठाकुर ने कहा कि भारत में खेलों को संस्कृति में ढालने की शुरुआत हुई तो ओलंपिक से लेकर पैरालम्पिक तक खिलाड़ियों के प्रदर्शन ने इसे साबित कर दिया। पीवी सिंधु, मीराबाई चानू, लवलीना बोरगोहेन, अवनी लेखरा, भाविना पटेल ने अपने हुनर के दम पर सिद्ध कर दिया कि इस

नए भारत में महिलाएं पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर आगे बढ़ रही हैं। पीवी सिंधु ने ओलंपिक में बैडमिंटन में महिला सिंगल्स में कांस्य पदक जीता। मीराबाई चानू ने ओलंपिक में वेट लिफ्टिंग में रजत पदक जीता। अवनी लेखरा ने पैरालम्पिक राइफल शूटिंग में दो पदक जीतने वाली (स्वर्ण एवं कांस्य) पहली महिला खिलाड़ी बन इतिहास रचा। पैरालम्पिक महिला टेबल टेनिस में भी भारत को पहली बार रजत पदक जीतने का गौरव हासिल हुआ। भाविना पटेल ने भारत की झोली में यह पदक डाला।

सरकारी योजनाएं

खिलाड़ियों की सहायता और उन्हें प्रोत्साहित करने हेतु सरकार के द्वारा ढेर सारी सरकारी योजनाएं चलाई जा रही हैं। इन योजनाओं के द्वारा खिलाड़ियों को वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है, वैज्ञानिक प्रशिक्षण और बेहतरीन कोच भी उपलब्ध कराए जाते हैं। यह कहना गलत नहीं होगा कि खिलाड़ियों का ओलम्पिक और पैरालम्पिक में बेहतरीन प्रदर्शन इस बात का प्रमाण है कि खिलाड़ियों को जितनी बेहतर सुविधाएं दी जाएंगी, उनका प्रदर्शन उतना ही बेहतर होगा।

पंचवर्षीय योजनाएं

देश की आज़ादी के बाद से ही क्रमिक पंचवर्षीय योजनाओं में खेलों और शारीरिक शिक्षा पर ज़ोर दिया गया। दूसरी पंचवर्षीय योजना के फलस्वरूप नेशनल कॉलेज ऑफ फिज़िकल एजुकेशन तथा नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ स्पोर्ट्स की स्थापना हुई। स्टेडियम, स्विमिंग पूल और ओपन एयर थिएटर के निर्माण की शुरुआत हुई। तीसरी पंचवर्षीय योजना के दौरान राष्ट्रीय कोचिंग योजना का आरंभ हुआ। शारीरिक शिक्षा, खेल और खेलों के लिए आवंटन चौथी पंचवर्षीय योजना के दौरान बढ़ाए गए। कोचिंग सुविधाओं में सुधार पांचवीं पंचवर्षीय योजना के दौरान हुआ। छठी पंचवर्षीय योजना में युवा प्रतिभाओं को दी जा रही सुविधाओं पर ज़ोर दिया गया। साहसिक खेलों को सातवीं योजना के दौरान प्रोत्साहन मिला। 1984 में खेल का एक अलग विभाग बना दिया गया। आठवीं योजना से गांवों में खेलों को बढ़ावा मिला। कई ग्रामीण स्कूलों में खेल के मैदानों को विकसित किया गया। बाद की पंचवर्षीय योजनाओं में खेलों में आधुनिक और वैज्ञानिक सुविधाओं पर ज़ोर दिया गया।

ओलंपिक पोडियम स्कीम (2014)

ओलंपिक और पैरालंपिक खेलों में भारत के प्रदर्शन को बेहतर बनाने के लिए हमारे खेल मंत्रालय ने सितंबर 2014 में टारगेट ओलंपिक पोडियम स्कीम शुरू की। इस योजना के तहत खिलाड़ियों को टॉप कोच से कोचिंग और खेल से जुड़े इक्विपमेंट खरीदने में मदद की जाती है। कोर ग्रुप में चुने गए खिलाड़ियों को हर महीने 50 हज़ार रुपये और डेवलपमेंट ग्रुप को 25 हज़ार रुपये का भत्ता दिया जाता है। इस समय कोर ग्रुप में 162 खिलाड़ी, हॉकी टीम (महिला–पुरुष दोनों) और डेवलपमेंट ग्रुप में 254 खिलाड़ियों को शामिल किया गया है। इसके अलावा, खिलाड़ियों को सपोर्ट स्टाफ जैसे फिज़ियोथेरेपिस्ट और फिज़िकल ट्रेनर्स भी दिए जाते हैं।

खेलो इंडिया योजना (2016)

खेलों इंडिया योजना की शुरुआत 2016 में हुई। इसने ग्रास रूट लेवल से प्रतिभाओं को सरकार तक पहुंचने के बीच सेतु का कार्य किया। 83 करोड़ से अधिक की छात्रवृत्ति खिलाड़ियों को प्रदान की गई। खेलों के मैदानों का विकास किया गया जिनकी संख्या, जो 2014 में सिर्फ 38 थी, 2021 में 300 के करीब पहुंच गई है। मणिपुर में पहले विश्वविद्यालय की स्थापना की गई। 20 खेलों को स्पोर्ट्स कोटे में सम्मिलित किया गया जैसे कि रोल बॉल, मलखम्ब इत्यादि। खिलाड़ियों की बेहतरी के लिए खेलो को टेक्नोलॉजी से जोड़ा गया। जियो टैग, मोबाइल ऐप इत्यादि का निर्माण किया गया। स्कूल, कॉलेज में छिपी प्रतिभाओं को सामने लाने के लिए खेलो इंडिया योजना के तहत वार्षिक खेल प्रतियोगिताओं की शुरुआत भी की गई है जिन्हें खेलो इंडिया स्कूल गेम्स, खेलो इंडिया यूथ गेम्स और खेलो इंडिया यूनिवर्सिटी गेम्स का नाम दिया गया। प्रतिभा खोज और उसके विस्तार पर ख़ासा ध्यान दिया गया। ज़िला और ब्लॉक–स्तर पर खेल प्रतिभाओं तक पहुंचने के लिए टेलेंट सर्च टीम का गठन किया गया। परिणामस्वरूप 2967 एथलीटों का चयन खेलो इंडिया के तहत किया जा चुका है। 335 एथलीटों को 10 हज़ार रुपये प्रति माह का अलाउंस मिल रहा है। 34 राज्यों/केंद्रशासित प्रदेशों में 267 प्रोजेक्ट को स्वीकृति मिल चुकी है जबकि 200 करोड़ रुपये के फंड को जम्मू और कश्मीर में स्पोर्ट्स इंफ्रास्ट्रक्चर के विकास के लिए अलग कर दिया गया है।

ग्रामीण स्वदेशी खेलों को बढ़ावा देने के लिए कई स्थानों पर 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' प्रतियोगिताओं के आयोजन करवाए जा चुके हैं। महिलाओं की खेलों में भागीदारी को बढ़ाने के लिए छोटे और ज़मीनी–स्तर पर महिलाओं के लिए अलग से स्पोर्ट्स मीट की शुरुआत की गई। खेलों में महिलाओं और लड़कियों की ज़्यादा से ज़्यादा भागीदारी हो, इसके लिए अब महिला और बाल विकास मंत्रालय ने खेल मंत्रालय के साथ मिलकर काम करने का फैसला भी किया है।

जुलाई 2021 में लोकसभा में एक प्रश्न का लिखित में उत्तर देते हुए युवा मामले और खेल मंत्री श्री अनुराग ठाकुर ने महिला खिलाड़ियों के संबंध में जानकारी दी कि अखिल भारतीय–स्तर पर 'खेलो इंडिया' योजना के अंतर्गत 1473 महिलाओं का चयन हुआ है। यह योजना गांवों के भी प्रतिभाशाली युवाओं को कवर करती है। साथ ही, भारतीय खेल प्राधिकरण इस समय अपने केंद्रों के माध्यम से 3346 महिलाओं के प्रशिक्षण पर कार्य कर रहा है।

फिट इंडिया मूवमेंट (2019)

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने राष्ट्रीय खेल दिवस और मेजर ध्यानचंद की जयंती (29 अगस्त, 2019) पर 'फिट इंडिया' मूवमेंट की शुरुआत की। इस अवसर पर प्रधानमंत्री ने कहा कि देश अपने उन युवा खिलाड़ियों को भी बधाई देना चाहता है जो दुनिया में किसी भी मंच पर भारत के तिरंगे को फहराने में जुटे हैं। वे हमारी

सपनों की उड़ान भर प्रसिद्धि के शिखर पर पहुंची भारतीय महिला खिलाड़ी

किसी भी राष्ट्र की ताकत को आंकने के लिए फौजी और आर्थिक आधार पर्याप्त नहीं है। खेलों में प्रदर्शन भी उस राष्ट्र का शक्ति प्रारूप विश्व के समक्ष प्रदर्शित करता है। हमारे देश की महिला खिलाड़ी पूरे विश्व में अपना लोहा मनवा रही हैं। ऐसा नहीं है कि सभी महिला खिलाड़ी शहरी परिवेश की हैं जो खेलों में एक मुकाम हासिल कर पाई है। हालांकि सीमित सोच और सामाजिक कुरीतियों के चलते ग्रामीण परिवेश की महिलाओं को आगे बढ़ने के मौके कम और बहुत बार न के बराबर मिलते हैं। लेकिन फिर भी कुछ ऐसी महिला खिलाड़ी ग्रामीण परिवेश की हैं जिन्हांने विपरीत परिस्थितियों में भी अपनी मेहनत के दम पर अपने सपनों की उड़ान भरी।

पी.टी. उषा – भारतीय ट्रैक और फील्ड की रानी मानी जाने वाली पी.टी. उषा भारत के अब तक के सफलतम खिलाड़ियों में से एक हैं। ग्रामीण परिवेश में पली–बढ़ी पी.टी. उषा का जन्म केरल के पय्योली नामक ग्राम में हुआ था। अपने अथक परिश्रम के बल पर उन्होंने खेल जगत में अपना लोहा मनवाया और लाखों महिलाओं के लिए प्रेरणा का स्रोत बनीं।

जे.जे. शोभा – कर्नाटक के धारवाड़ में पशुपथिलाल नामक छोटे से गांव में जन्मीं जे.जे. शोभा ट्रैक एवं फील्ड एथलेटिक खिलाड़ी के रूप में प्रसिद्ध हुई। उनके शानदार प्रदर्शन के चलते उन्हें 2005 में अर्जुन पुरस्कार भी प्राप्त हुआ।

मैरी कॉम – एक गरीब किसान परिवार में जन्मीं मेरी कॉम ने बॉक्सिंग की दुनिया को हिला के रख दिया। उन्होंने अपनी मेहनत के दम पर देश के सर्वोच्च खेल पुरस्कार के साथ बहुत बार विभिन्न विश्व चैम्पियनशिप भी जीतीं।

मीराबाई चानू – मणिपुर के ग्रामीण परिवेश में जन्मीं मीराबाई चानू का बचपन घर के लिए लकड़ियां बीनते हुए निकला। परिवार के साथ और अपने दृढ़ निश्चय के बल पर इन्होंने वेट लिफ्टिंग में विश्व ख्याति अर्जित की। हाल ही में टोक्यो ओलम्पिक 2020 में उन्हें रजत पदक हासिल करने में भी सफलता मिली।

लवलीना बोरगोहेन – असम के गोलाघाट ज़िले के बड़ा मुखिया गांव में जन्मीं लवलीना बॉक्सिंग में अपने बढ़िया प्रदर्शन के लिए प्रसिद्ध हुई। 2020 में अर्जुन पुरस्कार प्राप्त करने वाली वह असम की छठीं खिलाड़ी बनीं।

साक्षी मलिक – मोखरा गांव, रोहतक ज़िला, हरियाणा में जन्मीं साक्षी मलिक ने महिला पहलवान के रूप में अपनी पहचान बनाई और पहलवानी के प्रति लोगों की सोच और धारणाओं को बदल दिया। वह अपनी सफलता के चलते महिला पहलवानों की आने वाली पीढ़ियों का आदर्श बन गई हैं।

गीता फोगाट – हरियाणा के भिवानी ज़िले के गांव बलाली में जन्मीं गीता फोगाट कुश्ती की दुनिया में जाना–माना नाम है। फ्री स्टाइल कुश्ती कला में भारत का परचम फहराने वाली यह महिला खिलाड़ी भारत की सबसे सफल महिला खिलाड़ियों में से एक हैं।

दूती चंद – ओडिशा के एक छोटे से गांव के बुनकर परिवार में सात भाई–बहनों में तीसरे नम्बर पर जन्मीं दूती चंद भारतीय अंतर्राष्ट्रीय व्यक्तिगत स्प्रिंट और वर्तमान राष्ट्रीय 100 मीटर दौड़ की महिला खिलाड़ी है– इन्होंने अपने बढ़िया खेल के चलते खूब ख्याति प्राप्त की।

दीपिका कुमारी – रांची के करीब चट्टी गांव में जन्मीं दीपिका कुमारी ने तीरंदाजी खेल में ख्याति प्राप्त की। ढेरों राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कारों की विजेता दीपिका कुमारी ग्रामीण परिवेश से आई उन चुनिंदा खिलाड़ियों में से एक हैं जो लाखों महिलाओं के लिए प्रेरणा स्रोत हैं।

डायना एडलजी – मुंबई में जन्मीं डायना एडलजी पूर्व भारतीय महिला क्रिकेट खिलाड़ी हैं जो भारतीय टीम की कप्तानी भी कर चुकी हैं। शुरुआत से ही क्रिकेट एक पुरुष प्रधान खेल के रूप में देखा गया है। ऐसे में उस खेल को खेलना और एक मुक़ाम हासिल करना एक बेहद कठिन कार्य था जो डायना एडलजी ने किया और महिला क्रिकेट को एक नई राह दिखाई।

साइना मिर्ज़ा – टेनिस की दुनिया में भारत का परचम लहराने वाली यह महिला खिलाड़ी लाखों लोगों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनी। साइना मिर्ज़ा को 2006 में पद्मश्री से भी नवाज़ा गया।

साइना नेहवाल – माता–पिता के साथ और अपनी बेजोड़ मेहनत के दम पर साइना नेहवाल ने बैडमिंटन की दुनिया में अपना लोहा मनवाया। उन्हें ढेरों राष्ट्रीय पुरस्कार मिले और अंतर्राष्ट्रीय खेल प्रतियोगिताओं की वह विजेता रहीं।

मीताली राज – मिताली राज भारतीय महिला क्रिकेट का एक जाना–माना नाम है। एक सम्पन्न परिवार में जन्मीं मिताली राज को अपने सपनों को साकार करने में अपने परिवार का बेहद साथ मिला। उन्होंने खूब मेहनत की और अंतर्राष्ट्रीय मंच पर भारत के लिए ख्याति अर्जित की।

पी.वी. सिंधु– राष्ट्रीय–स्तर के वॉलीबॉल खिलाड़ी रहे माता–पिता के घर जन्मीं पी.वी. सिंधु बैडमिंटन की दुनिया का चमकता सितारा हैं। ओलम्पिक में दो पदक जीतने वाली पहली भारतीय महिला खिलाड़ी आने वाली पीढ़ियों के लिए हमेशा प्रेरणा का स्रोत रहेंगी।

उम्मीदों को नए स्तर पर ले जा रहे हैं। यह नए भारत के नए जोश और आत्मविश्वास का भी पैमाना है।

यह राष्ट्र को फिटनेस और आरोग्य की ओर ले जाने वाला आंदोलन है। इसके द्वारा नियमित शारीरिक गतिविधि, खेलों और रोग मुक्त रहने पर ज़ोर दिया जाता है। इस अभियान के तहत विभिन्न प्रतियोगिताओं जैसेकि फ्रीडम रन कार्यक्रम, फिट्नेस कार्यक्रम इत्यादि का आयोजन विभिन्न स्तर पर करवाया जाता है। यह अभियान हर गांव और पंचायत स्तर से शुरू होकर खंड, ज़िला और राज्यों के स्तर पर चल रहा है।

इतनी सारी योजनाओं के बावजूद अभी भी बहुत–सी ग्रामीण महिलाएं खेलों में आगे नही बढ़ पा रही हैं। सामाजिक और पारिवारिक दबाव, धन का अभाव, प्रशिक्षण की कमी और कम जानकारी– सबका प्रभाव सीधे तौर पर महिलाओं पर पड़ा है।

ग्रामीण महिलाओं की खेलों में कम भागीदारी

एक तरफ हमारे देश की महिलाएं ओलंपिक और पैरालम्पिक खेलों में नाम रोशन कर रही हैं वही बहुत–सी ग्रामीण महिलाएं हुनर होने के बावजूद अभी भी खेलों में हिस्सा नहीं ले पा रही हैं। जिन वजहों से मुख्यतः ग्रामीण महिलाएं खेलों में हिस्सा नहीं ले पा रही हैं, वह इस प्रकार हैं–

सामाजिक कुरीतियां – पर्दा प्रथा, बच्चियों की छोटी उम्र में शादी और महिलाओं को घर से बाहर निकलने के कम अवसर आज भी ग्रामीण भारत का हिस्सा हैं। लड़कों–लड़कियों में भेदभाव महिलाओं की पढ़ाई और खेलखूद पर विपरीत असर डालता है। फलस्वरूप ज़्यादातर महिलाओं की ज़िंदगी घर की चारदीवारी तक ही सीमित रह जाती है।

बच्चों की ज़िम्मेदारी – घर के कामकाज और बच्चों की ज़िम्मेदारी दो ऐसे कार्य हैं जो पूर्णतः ग्रामीण महिलाओं के हिस्से आते हैं और उनकी पूरी ज़िंदगी, उनकी सोच और उनकी मेहनत इन्ही के आसपास घूमती रहती है।

खेतीबाड़ी में भागीदारी– ग्रामीण भारत में खेतीबाड़ी में महिलाओं की भागीदारी बढ़ रही है और इसे अक्सर उनके सशक्तीकरण से जोड़ा जाता है। यह तो सच है कि खेतीबाड़ी में तो भागीदारी बढ़ी लेकिन घर और बच्चों से सम्बंधित ज़िम्मेदारियां आज भी उतनी ही हैं जिसके चलते उनकी सेहत पर बुरा प्रभाव पड़ रहा है और उनके पोषण का स्तर भी गिर रहा है।

पोषण की कमी– ग्रामीण परिवेश में बच्चों की परवरिश में आज भी भेदभाव होता है। बुढ़ापे की लाठी लड़कों को मान उन्हें बचपन से पौष्टिक भोजन दिया जाता है। जाने आगे कौन–सा परिवार मिले, इस चिंता में बचपन से ही लड़कियों को भोजन कम खाने, कम सोने और कम शिकायत करने की सलाह दी जाती है। फलस्वरूप लड़कियां बचपन से ही संतुलित और पौष्टिक आहार से वंचित रहती हैं।

परिवार के साथ की कमी– बहुत बार बच्चियां स्कूलों में खेलों में हिस्सा लेती हैं और स्कूल वाले उनकी प्रतिभा देख परिवार को उनके बेहतर प्रशिक्षण की सलाह देते हैं। लेकिन ऐसे में ग्रामीण परिवेश में गरीबी और सामाजिक डर से बहुत से अभिभावक बच्चियों को बेहतर प्रशिक्षण दिलवाने से घबराते हैं।

जानकारी का अभाव– समय के साथ थोड़ा–बहुत बदलाव आ रहा है। कई परिवार हैं जो बच्चियों को प्रशिक्षण दिलवाने में दिलचस्पी ले रहे हैं लेकिन उन्हें यह नहीं पता कि कहां से बच्चियों को प्रशिक्षण मिलेगा, कहां जाना होगा और किस से इस सम्बंध में बात करनी है।

सीमित सोच– बहुत से परिवार यह सोचकर बच्चियों को खेलों में आगे बढ़ने के मौके मिलने के बावजूद उन्हें आगे बढ़ने से रोक रहे हैं चूंकि उनका मानना है कि महिलाएं चाहे कुछ भी कर लें, अंत में तो उन्हें घर का चूल्हा–चौका ही करना है। बच्चियों की प्रतिभाओं को नज़रअंदाज कर छोटी उम्र से ही उन पर घर का काम सीखने और करने का दबाव बनाया जाता है।

खेल संबंधित सुविधाओं का अभाव – बहुत बार जब खेल संबंधी सुविधाओं का अभाव होता है तो हुनर में निखार नहीं आ पाता और प्रतिभावान महिलाएं अपने कौशल नहीं दिखा पाती हैं।

आर्थिक दबाव – खेलों में हिस्सा लेना, प्रशिक्षण प्राप्त करना, खेल से जुड़ी वस्तुएं ख़रीदना– सब आर्थिक दबाव की तरफ इशारा करता है जो खेलों में महिलाओं की कम भागीदारी का एक बड़ा कारण है।

सामाजिक दबाव – ग्रामीण परिवेश में महिलाओं के घर के बाहर निकलने से जुड़े बेतुके सामाजिक कायदे और नियम महिलाओं की तरक्की में रोड़ा बन रहे हैं।

अनजान परिस्थितियों से डर– अगर ऐसा हुआ तो क्या होगा और अगर वैसा हुआ तो क्या होगा। कुछ इस तरह के सवाल महिलाओं और उनके परिवार वालों में भय पैदा करते है जोकि सीधे तौर पर महिलाओं को आगे बढ़ने से रोकता है।

बदलाव और सुझाव

ग्रामीण महिलाओं की खेलों में भागीदारी को बढ़ावा देने और उनके बेहतर प्रशिक्षण पर ज़ोर देने के लिए ज़रूरत है कुछ बदलावों और सुझावों की जो परिस्थिति को बेहतर बना सकते हैं। सबसे ज़्यादा ज़रूरी है कि महिलाओं को उनके परिवार का साथ मिले। इसके लिए राज्य सरकारें गांवों में विभिन्न खेलों पर आधारित कार्यक्रम आयोजित करवा सकती हैं, पुरस्कार वितरण प्रक्रिया भी जिसका हिस्सा हो। ग्रामीण परिवेश की प्रसिद्ध महिला खिलाड़ियों के ऊपर लोकल अखबारों में लेख छपने से भी लोगों की मानसिकता में बदलाव लाया जा सकता है। प्रसिद्ध महिला खिलाड़ियों को बड़े मेलों आयोजनों में आमंत्रित कर सम्मानित किया जा सकता है। ऐसा करने से पूरे समाज में महिलाओं की खेलों में सफलतम भागीदारी पर एक अच्छा संदेश जाएगा।

राज्य सरकारें खेलों में भाग लेने हेतु सेमिनार और शिविर आयोजित करवा सकती हैं ताकि महिलाओं के साथ उनके परिवार भी खेलों के प्रति जागरुक हों। खेल कार्यशालाओं का निर्माण

करवाया जा सकता है। खिलाड़ी महिलाओं को वित्तीय सहायता प्रदान की जा सकती है। महिलाओं के लिए कल्याणकारी सरकारी नीतियां बनाना इस दिशा में महत्त्वपूर्ण कदम होगा। गांवों में खेल से जुड़ी सुविधाएं उपलब्ध करवाए जाने की आवश्यकता है। छात्रवृत्ति एवं पुरस्कारों के माध्यम से महिलाओं को प्रेरित करने की भी आवश्यकता है।

ग्रामीण परिवेश में समाज भी बहुत अहम भूमिका अदा करता है। खिलाड़ी महिलाओं और उनके परिवार की समाज में इज्जत बढ़े, इसके लिए ज़रूरी है कि महिला खिलाड़ियों के परिवार को पंचायत–स्तर पर सम्मान और इनाम मिले। सामाजिक कुरीतियां और नकारात्मक पहलुओं को दूर करने के लिए गांवों में नुक्कड़ नाटक का आयोजन किया जा सकता है। मीडिया के ज़रिए महिलाओं के खेलों में भाग लेने हेतु सकारात्मक प्रचार किया जा सकता है।

महिला खिलाड़ियों के स्वास्थ्य की बेहतरी के लिए संतुलित और पौष्टिक भोजन के प्रबंध पर राज्य सरकारों को ध्यान देना होगा। महिलाओं की सुरक्षा पर भी ध्यान देने की ज़रूरत है। सुबह से शाम के आंगनवाड़ी केंद्रों का निर्माण करवाया जा सकता है ताकि शादीशुदा महिला खिलाड़ी अभ्यास करते समय छोटे बच्चों की देखरेख की ज़िम्मेदारी से छूट पा सकें। स्थानीय–स्तर पर महिलाओं हेतु विभिन्न खेल प्रतियोगिताएं आयोजित करवायी जानी चाहिए ताकि अच्छी खिलाड़ियों की पहचान हो सके और उन्हें सम्मान भी मिले। वैज्ञानिक तकनीकी पर आधारित बेहतर खेल उपकरणों पर आधारित प्रशिक्षण से महिला खिलाड़ियों की प्रतिभाएं उभर कर आएंगी।

निसंदेह ग्रामीण परिवेश से आई बहुत–सी महिला खिलाड़ियों जैसे कि पी.टी. उषा, जे.जे. शोभा, मैरी कॉम, मीराबाई चानू, लवलीना बोरगोहेन ने यह साबित कर दिया है कि महिलाएं किसी भी तरह से पुरुषों से कम नहीं हैं और ग्रामीण परिवेश में पलने–बढ़ने से उनके 'सपनों' को कैद नहीं किया जा सकता।

ओलंपिक और पैरालम्पिक में भारतीय महिलाओं मुख्यतः ग्रामीण महिलाओं का प्रदर्शन इस बात की ओर संकेत दे रहा है कि बदलाव की लहर चल पड़ी है, जो दूर तक जाएगी। ऐसी सरकारी योजनाएं बनाई जा रही हैं जो वित्तीय सहायता, प्रशिक्षण और स्वास्थ्य पर ज़ोर दे रही हैं। बस ज़रूरत है तो व्यावहारिक और सामाजिक बदलाव की, जो महिलाओं के लिए आगे आने के द्वार खोलेगा। ज़रूरत है योजनाओं को थोड़ा और बेहतर तरीके से लागू करने की ताकि सभी को उनका लाभ मिले और ज़रूरत है महिलाओं को अपने आप पर विश्वास करने की ताकि वो अपने सपनों की उड़ान को हकीकत का रूप दे सकें। हमें आगे बढ़ने से कोई भी रोक नहीं सकता।

नारी शक्ति है, नारी जननी है।
नारी से देश का मान है, नारी देश का सम्मान है।।

(लेखिका 'सबकीशिक्षा' की संस्थापिका है। दिल्ली विश्वविद्यालय में प्रोफेसर रह चुकी है। इस लेख में व्यक्त विचार उनके निजी हैं।)

ई–मेल : shradhavasisht@gmail.com

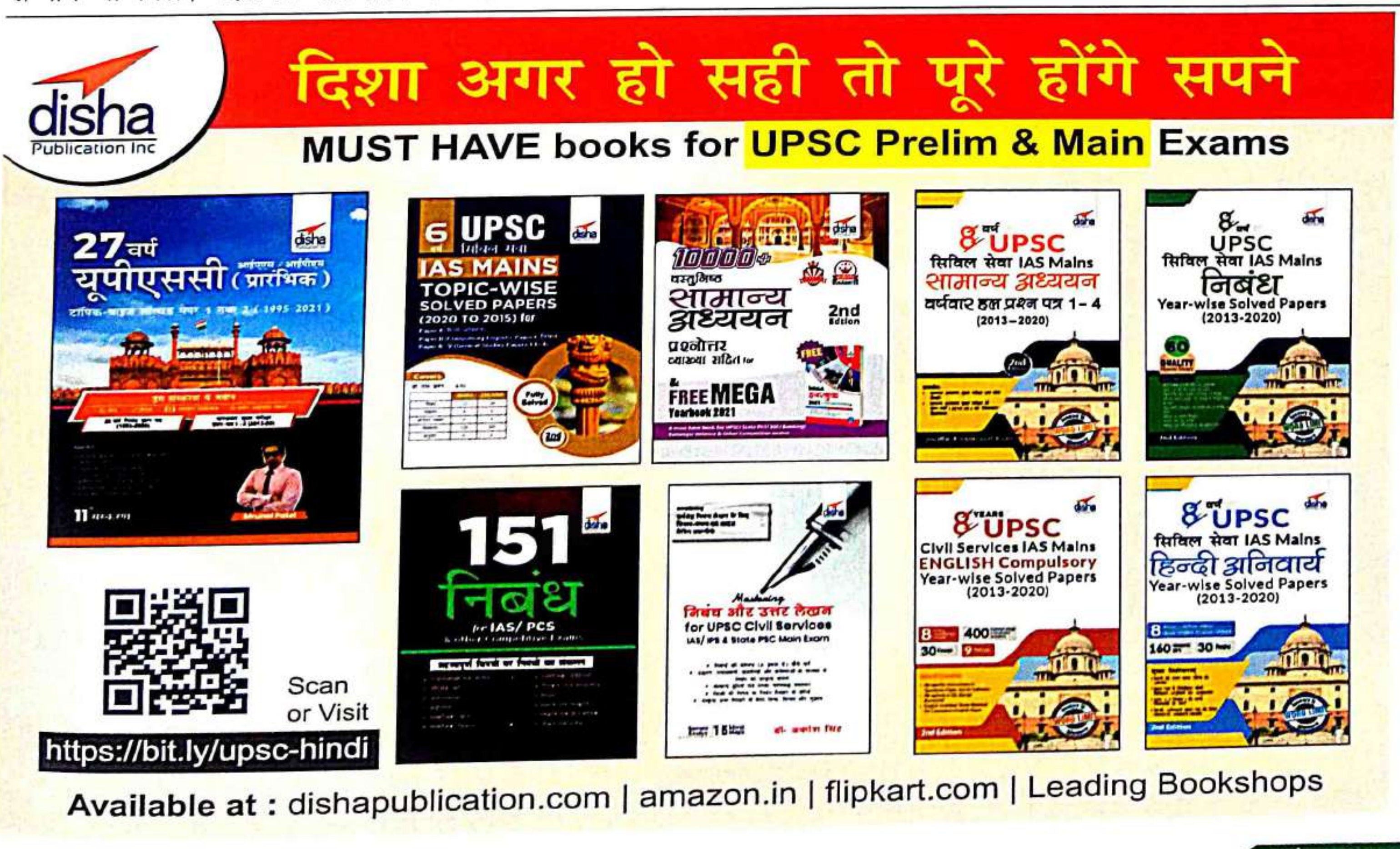

खेलों में ग्रामीण भारत ने जगाई उम्मीद

–इरतीफ मेहराज लोन

खेल जगत में होने वाला विकास इस बात का संकेत है कि खेलों का भविष्य दुनिया भर में और विशेष रूप से भारत में आशाजनक है। भारत में इस उद्योग ने हाल के दिनों में गति पकड़ी है और आज यह देश भर में राजस्व के साथ–साथ रोज़गार सृजन में भी योगदान दे रहा है। भौगोलिक परिवेश, पारंपरिक विचारों के प्रभाव, ग्रामीण आबादी की आय, अधिकांश खेलों से सम्बंधित उपभोग की जानकारी के चलते ग्रामीण खेल बाज़ार अभी भी प्राथमिक चरण में है लेकिन ग्रामीण खेलों से संबंधित नए निर्माण और ग्रामीण खेल गतिविधियों के चलते ग्रामीण क्षेत्रों में खेल उद्योग का कायाकल्प अब दूर नहीं है।

खेल जगत में होने वाला विकास इस बात का संकेत है कि खेलों का भविष्य दुनिया भर में और विशेष रूप से भारत में आशाजनक है। खेल गतिविधियों में ग्रामीण और शहरी आबादी की बढ़ती भागीदारी और इन पर विशेष रूप से ध्यान केंद्रित करते हुए 'खेलो इंडिया' जैसे कार्यक्रमों से देश भर में खेलों के बुनियादी ढांचे के निर्माण में वृद्धि हुई है। यह ग्रामीण क्षेत्रों के युवाओं को सर्वोच्च स्तर पर राष्ट्र का प्रतिनिधित्व करने के अवसर प्रदान करने में मदद कर रहा है और अधिक से अधिक संख्या में युवाओं को खेलों को एक 'व्यवसाय' के रूप में अपनाने के लिए प्रेरित कर रहा है। निजी क्षेत्र का खेलों की विभिन्न लीगों के आयोजनों में योगदान पेशेवर रूप से खेलों में भाग लेने का अवसर प्रदान कर रहा है जो आर्थिक स्थिरता के साथ–साथ खेल गतिविधियों में उदीयमान युवा प्रतिभाओं को प्रसिद्धि प्रदान करता है। इससे खेल गतिविधियों में 'स्टार्टअप्स' की संख्या में वृद्धि हुई है जबकि बॉलीवुड ने कई खिलाड़ियों के संघर्षों और प्रसिद्धि हासिल करने की जीवन–यात्रा को दर्शाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यह उद्योग आज जितना राजस्व और रोज़गार सृजन कर रहा है, उसके निकट भविष्य में कई गुना बढ़ने की सम्भावना प्रबल है।

खेल आज किसी भी राष्ट्र की पहचान का एक अभिन्न अंग हैं। क्रिकेट या फुटबॉल विश्व कप जैसे वैश्विक आयोजनों में प्रतिस्पर्धा करने वाली राष्ट्रीय टीमें या ओलंपिक खेलों में स्वर्ण के लिए प्रतिस्पर्धा करना इस जुनून को प्रकट करता है।

वैश्विक खेल बाज़ार के 2019 में 458.8 बिलियन डॉलर तक पहुंचने का अनुमान लगया गया लेकिन दुनिया भर के लगभग सभी आर्थिक क्षेत्रों को प्रभावित करने वाली महामारी के कारण 2020 में इसके 388.3 बिलियन डॉलर तक ही पहुंचने का अनुमान है। खेल उद्योग की 2015 से चक्रवृद्धि वार्षिक विकास दर 3.4 प्रतिशत रही और खेल बाज़ार के 2025 तक 599.9 बिलियन डॉलर और 2030 तक 826.0 बिलियन डॉलर तक पहुंचने की उम्मीद है।

दूसरी ओर, यह हमें अपने चरित्र को विकसित करने और

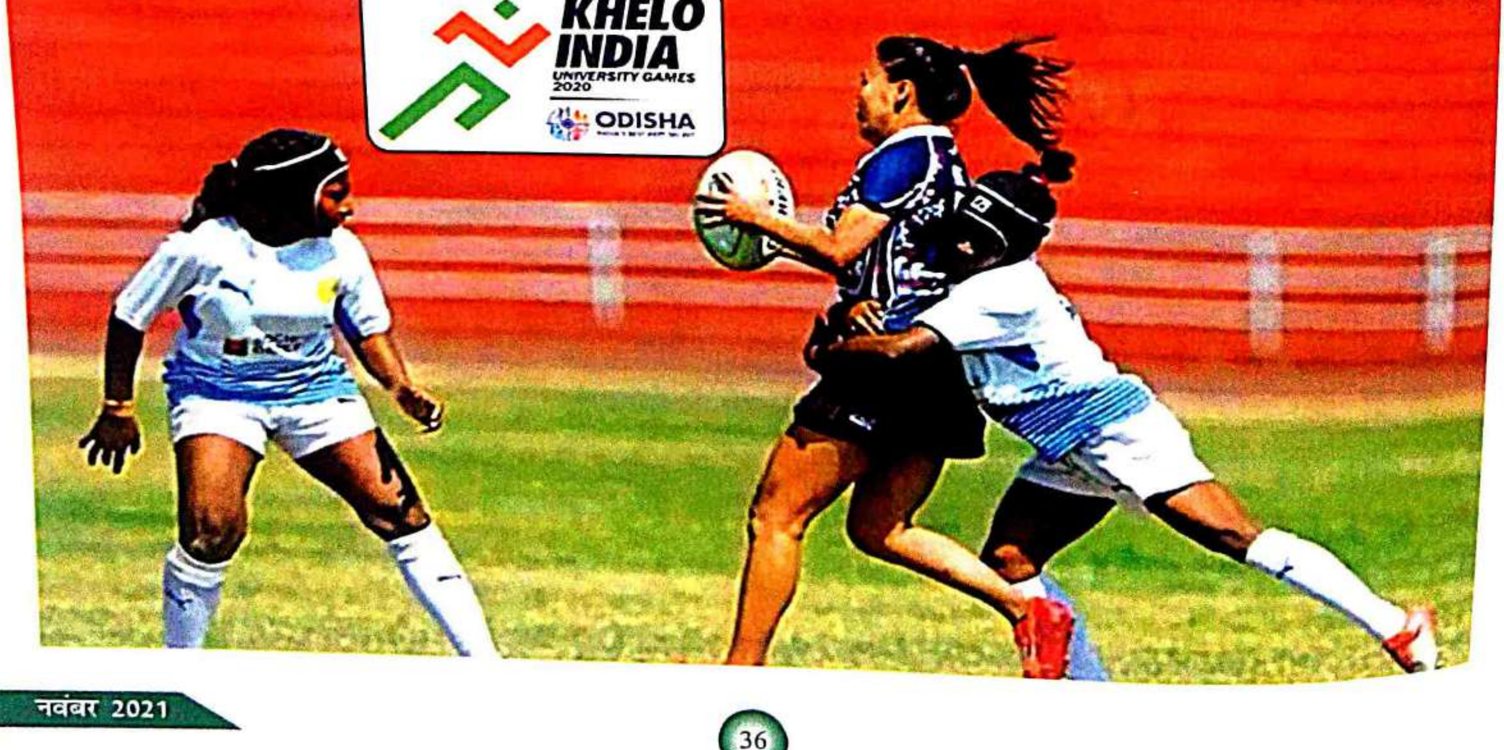

हमें जीवन में स्वस्थ और अधिक सक्रिय जीवनशैली अपनाने के लिए अनुशासित करना सिखाता है और इस प्रकार मानसिक और शारीरिक तंदुरुस्ती हासिल करने का साधन बन जाता है। इतिहास साक्षी है कि सभी सभ्य राष्ट्रों ने अपने मानव विकास के मूलभूत पहलुओं में उपलब्धियों के लिए खेल के महत्व और खेल संस्कृतियों को बढ़ावा देने पर ज़ोर दिया है।

भारी उपभोक्ता मांग ने खेलों को विश्व–स्तर पर इसके द्वारा सृजित रोज़गार और इससे प्राप्त होने वाले राजस्व को देखते हुए सबसे बड़े उद्योगों में से एक बना दिया है। यह कई अरब डॉलर का उद्योग बन गया है जो दुनिया भर में खिलाड़ियों के साथ–साथ दर्शकों में गहरे जुनून को उद्दीप्त करता है।

भारत में इस उद्योग ने हाल के दिनों में गति पकड़ी है और आज यह देश भर में राजस्व के साथ–साथ रोज़गार सृजन में भी योगदान दे रहा है। इसमें जिस तरह का विकास देखने को मिल रहा है उससे खेल उद्योग में विविध प्रकार के रोज़गार पनप रहे हैं जैसे कि एथलीट, कोच, प्रशिक्षक, इवेंट मैनेजर, जनसंपर्क अधिकारी, खेल संगठनों के समन्वयक, विपणन सलाहकार, कार्यक्रम और सुविधा प्रबंधक, पेशेवर खेल प्रोमोटर, खेल उपकरण और उत्पाद की बिक्री, खेल आयोजन योजनाकार और प्रबंधक तथा खेल प्रायोजन विशेषज्ञ।

भारत में खेल अर्थव्यवस्था विविध अवसर प्रदान करती है जिन्हें एक अवधि में हासिल करने की आवश्यकता है। इन अवसरों का परिमाण भी बहुत बड़ा है। 2025 तक विश्व की कामकाजी उम्र की आबादी का पांचवां हिस्सा भारतीय होगा। 2030 तक भारत में 85 करोड़ से अधिक इंटरनेट उपयोगकर्ता होंगे। 2035 तक भारत के पांच सबसे बड़े शहरों में आज के मध्यम आय वाले देशों के बराबर आकार की अर्थव्यवस्थाएं होंगी।

2020 में जारी एक रिपोर्ट में भारतीय खेल उद्योग का आकार 5894 करोड़ रुपये होने का अनुमान लगाया गया है। इस रिपोर्ट में केवल प्रायोजन खर्च, सेलिब्रिटी विज्ञापन और खेल संपत्तियों पर मीडिया खर्च शामिल हैं।

देश भर में खेल के बुनियादी ढांचे में सुधार के लिए 'खेलो इंडिया' के रूप में सरकार द्वारा कई पहलों के कारण खेल क्षेत्र में व्यापक परिवर्तन आया है। लीग और टूर्नामेंट आयोजित करके निजी क्षेत्र ज़मीनी–स्तर पर प्रतिभाशाली खिलाड़ियों की खोज और उनका प्रायोजन करके एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

वास्तव में तथ्य तो यह है कि एक अरब से अधिक आबादी वाले देश में अधिकांश लोगों की पहली पसंद का खेल क्रिकेट है। हालांकि हॉकी, टेनिस और फुटबॉल जैसे खेल बार–बार अपनी उपस्थिति का आभास कराते हैं। विभिन्न खेल महासंघों ने लीग–आधारित टूर्नामेंट शुरू करके भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड के मार्ग का अनुसरण किया है। इंडियन प्रीमियर लीग (क्रिकेट), प्रो कबड्डी लीग, इंडियन सुपर लीग (फुटबॉल), प्रीमियर बैडमिंटन लीग (पीबीएल) और हॉकी इंडिया लीग (एचआईएल) सहित एक दर्जन से अधिक प्रमुख लीग–आधारित खेल टूर्नामेंट शुरू किए गए हैं। इनमें से अधिकांश लीगों ने ज़मीनी–स्तर पर काफी सफलता हासिल की है और इन खेलों के दर्शकों की संख्या में बढ़ोत्तरी हुई है। इन लीगों के अधिकांश आयोजनों की ऑनलाइन स्ट्रीमिंग और सोशल मीडिया ऐप के माध्यम से डिजिटल मार्केटिंग से भी इन्हें काफी मदद मिली है।

इंडियन प्रीमियर लीग, हॉकी इंडिया लीग, इंडियन बैडमिंटन लीग, प्रो कबड्डी, इंडियन सुपर लीग और इस तरह की अन्य प्रमुख लीगों जैसी भव्य पहल न केवल इन खेलों के प्रति नज़रिए को बदल रही है बल्कि विभिन्न खेलों में प्रतिभाशाली खिलाड़ियों के पूल (समूह) के सृजन में भी मदद कर रही है। खेलों में ये पहल इस बात का भी प्रमाण है कि देश में क्रिकेट के अलावा अन्य खेलों का भी भविष्य उज्जवल है।

खेलों में भाग लेने के स्वास्थ्य लाभ सर्वविदित हैं। विभिन्न विधाओं में किए गए हाल के कई अध्ययनों से पता चला है कि शारीरिक गतिविधियों में अधिक से अधिक भाग लेने से व्यक्ति के स्वास्थ्य पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। आज के समय में शारीरिक रूप से निष्क्रिय जीवनशैली के चलते मोटापे के महामारी का रूप लेने के साथ–साथ मधुमेह और हृदय रोग सहित पुराने रोगों का एक प्रमुख कारण माना गया है।

इसके अलावा, खेलों में भाग लेने से लोगों के दिलोदिमाग पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। शारीरिक रूप से सक्रिय व्यक्तियों को आमतौर पर उन लोगों की तुलना में, जो कम व्यायाम करते हैं, कम अवसाद, मानसिक तारतम्य का बेहतर बोध और कम मानसिक तनाव होता है। वे अपने जीवन से अधिक संतुष्ट होते हैं और उनके मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं से पीड़ित होने की संभावना कम होती है। दूसरी ओर, हाल के शोध में समुदाय–आधारित जन स्वास्थ्य में खेलों की भागीदारी की भूमिका पर काफी ध्यान दिया गया है। एक समुदाय में खेलों में भागीदारी उन महत्वपूर्ण माध्यमों में से एक है जिससे सामाजिक मेलमिलाप बढ़ता है और व्यक्तियों को स्थानीय समाज में सार्थक रूप से जुड़े होने की क्षमता को बढ़ा सकता है जिससे पूरी आबादी की सामाजिक पूंजी यानी मानव समाज की सामूहिकता और सामाजिक समावेश में सुधार हो सकता है। इस बात का ठोस प्रमाण है कि खेलों में भाग लेने का सामाजिक व्यवहार पर, विशेष रूप से युवकों पर प्रभाव पड़ता है। खेल और व्यायाम के शैक्षिक परिणामों पर सकारात्मक प्रभाव के पर्याप्त प्रमाण हैं। मनोवैज्ञानिक लाभ जैसे कि आत्मसम्मान और आत्मविश्वास में वृद्धि और संज्ञानात्मक लाभ जैसे कि एकाग्रता और बौद्धिक कौशल के माध्यम से खेलों का शैक्षिक व्यवहार सहित कई अंतिम परिणामों पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

कई खेलों में लीग की शुरुआत से अब विभिन्न खेलों में ग्रामीण आबादी की भागीदारी भी बढ़ गई है। इसने देश भर में खेल के बुनियादी ढांचे का विकास किया है और यह भी सुनिश्चित किया है कि गांवों में भी हर घर को खेल सुविधाओं

तक पहुंच का अवसर मिले। खेल अब संस्कृति के व्यावसायीकरण का एक अभिन्न अंग बन गए हैं जैसे सिनेमा, यात्रा, खरीदारी और रेस्तरां में खाना–पीना और इस प्रकार बाज़ार तंत्र से गहरे जुड़ मनोरंजन उद्योग का हिस्सा बन गए है। खेल के व्यावसायीकरण ने नई ज़रूरतों और अपेक्षाओं को उत्प्रेरित किया है जिससे खेल नाटकीय मनोरंजन विधा के रूप में मज़बूती से स्थापित हो गया है।

खेल गतिविधियों में बढ़ती हुई भागीदारी का एक और सकारात्मक पक्ष यह है कि इसने खेलों से जुड़े साजो–सामान उद्योग को फलने–फूलने के लिए प्रेरित किया है। यह उद्योग लाखों लोगों को रोज़गार प्रदान कर रहा है। खेल के सामान की गुणवत्ता में सुधार के साथ इसके भारत से निर्यात का हिस्सा भी कई गुना बढ़ गया है और इन उत्पादों ने एक वैश्विक पहचान स्थापित कर ली है। भारत में खेल के साजो–सामान के उत्पादन का लगभग 60 प्रतिशत दुनिया भर में निर्यात किया जाता है।

खेल और शारीरिक गतिविधियों में व्यापक संपर्क संभावनाएं हैं इसलिए इससे संबद्ध नीति निर्धारण और उसके कार्यान्वयन दोनों में सरकार की रुचि है। हालांकि सरकार की भूमिका उच्चस्तरीय नीति विकास में है यानी वह सूक्ष्म–स्तरीय निर्णयों को लेने की बजाय पूंजी निवेश निर्धारित करती है। यह खेल क्षेत्र में विशेष रूप से महत्वपूर्ण है जहां ग्राहक की ज़रूरतों के अनुसार निर्देशित सर्वोत्तम और सुविचारित निर्णय लेने के लिए कुशल लोगों की विशेषज्ञता की आवश्यकता होती है।

खेल स्थानीय समुदायों का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है लेकिन यह अलग–अलग जगहों पर भिन्न रूप में होता है। इसमें कोई टॉप–डाउन (शीर्ष स्तरीय) दृष्टिकोण नहीं है जैसा हर जगह होता है। समुदायों की समझ और जानकारी उन्हें अवसरों को लक्षित करने और बड़ी संख्या में खेलों में भाग लेने को प्रोत्साहित करने में सक्षम बनाती है। स्थानीय मुद्दों का दायित्व उठाने वाली परिषदों को भी एक महत्वपूर्ण नेतृत्व भूमिका निभाने की आवश्यकता है जिसमें स्कूलों, स्वैच्छिक खेल क्लबों, खेल के राष्ट्रीय शासी निकायों और निजी क्षेत्र को एक साथ लाने के लिए साझेदारी बनाने, भाग लेने में आने वाली बाधाओं को दूर करने और स्थानीय खेल वितरण प्रणाली में सुधार करना शामिल है। इसलिए स्थानीय अधिकारियों को विशेष रूप से महिलाओं और किशोरियों, दिव्यांगजनों और सामाजिक–आर्थिक रूप से पिछड़े हुए वर्गों के लोगों को खेलों और शारीरिक गतिविधि के अवसर प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने की आवश्यकता है क्योंकि आम जनता की तुलना में उनमें खेलों में भाग लेने और शारीरिक रूप से सक्रिय होने की संभावना कम होती है। इसके विभिन्न कारण हो सकते हैं। सामाजिक–आर्थिक रूप से पिछड़े हुए वर्गों का खेल तक पहुंच का संबंध न केवल लागत और सही अनौपचारिक गतिविधियों की उपलब्धता जैसी व्यावहारिक बाधाओं से बल्कि सुरक्षा और स्थानीय स्थल के स्वामित्व के साथ–साथ व्यापक सामाजिक परिस्थितियों की धारणाओं में व्याप्त भावनात्मक बाधाओं से भी स्पष्ट उजागर होता है।

एक सामाजिक आयोजन और सांस्कृतिक शैली के रूप में खेल शहरी क्षेत्रों के विकास से व्यापक और गहन रूप से प्रभावित हुए हैं। शहरों में खेलों में भाग लेने में असाधारण वृद्धि हुई है और इसका असर लोगों में स्वास्थ्य के प्रति बढ़ती जागरूकता पर भी पड़ा है। लोग राजनीतिक लक्ष्यों की बजाय फिटनेस बनाए रखने के लिए, मनोरंजन के लिए, दोस्तों के साथ संपर्क के लिए, मानसिक स्वास्थ्य के लिए और व्यक्तिगत शारीरिक क्षमता बढ़ाने के लिए खेल और शारीरिक गतिविधियों में भाग लेते हैं। वे परिवार के सदस्यों के साथ, दोस्तों के साथ या व्यक्तिगत रूप से व्यायाम करते हैं। कुछ स्पोर्ट्स क्लबों में जाते हैं, कुछ अपने प्रांगण में व्यायाम करते हैं। कुछ लोग व्यक्तिगत फिटनेस रखते हैं, और कुछ अपने समुदाय द्वारा आयोजित व्यायाम सत्रों में भाग लेते हैं।

हाल के दिनों में हमने यह भी देखा है कि भारतीय सिनेमा का रुझान ग्रामीण भारत को दुनिया भर में देश का प्रतिनिधित्व करने वाले सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ियों के सृजन केंद्र के रूप में दर्शाने में है। मैरी कॉम, दंगल, भाग मिल्खा भाग, चक दे इंडिया जैसी फिल्में उनमे से कुछ हैं।

घर–घर में मशहूर फोगाट बहनें या बॉक्सिंग की दुनिया में तहलका मचाने वाली मैरी कॉम ही केवल ग्रामीण भारत से आने वाले खिलाड़ियों की मिसाल नहीं हैं। भारत की जीत के सिलसिले को, जिसकी टोक्यो ओलंपिक के दौरान भी प्रशंसा हुई, ग्रामीण भारत से आने वाले खिलाड़ियों ने बनाए रखा है। प्रत्येक एथलीट की अद्भुत जीवनगाथा और खेल के लिए किया गया उनका संघर्ष और उसके प्रति जुनून अपने आप में अगली पीढ़ी के उन प्रतिभावान खिलाड़ियों के लिए प्रेरणा का बड़ा स्रोत है जिन्हें खोजा और तराशा जाना है। मुक्केबाज, हॉकी खिलाड़ी, पहलवान और भाला फेंकने वाले पुरुष और महिलाएं भारत के ऐसे स्थानों से आते हैं जिनके बारे में अब तक सुना भी नहीं गया है। यह हमारी ग्रामीण आबादी में प्रतिभा के मौजूद होने और लोगों के बीच जागरूकता को भी दर्शाता है जब कबड्डी, एथलेटिक्स, कुश्ती, भारोत्तोलन और मुक्केबाजी जैसे खेलों में ओलंपिक ,राष्ट्रमंडल खेल और एशियाई खेल जैसे अंतर्राष्ट्रीय खेल आयोजनों में अधिक से अधिक पदक आ रहे हैं।

इसका अधिकांश श्रेय इस तथ्य को भी जाता है कि ग्रामीण भारत में, विशेष रूप से कुछ इलाकों में, खेलों को केवल एक 'शौक' के रूप में ही नहीं बल्कि 'आजीविका' के एक विकल्प के रूप में गंभीरता से लिया जा रहा है। इसका कारण है कि खेलों को कैरियर के रूप में पहचान मिल रही है जो एक सम्मानजनक आजीविका के साथ–साथ प्रसिद्धि और प्रतिष्ठा भी प्रदान करता है।

युवाओं के सशक्तीकरण की प्रक्रिया समावेशी है और इसमें सम्मान और युवाओं के साथ मिलकर काम करने पर ध्यान केंद्रित किया जाता है ताकि उनके सामने आने वाली समस्याओं की

पहचान की जा सके और समाधान खोजा जा सके। इस तरह युवा आत्मविश्वास में वृद्धि का अनुभव कर सकते हैं क्योंकि उन्हें लगता है कि उनके योगदान की कद्र होती है। युवा विकास कार्यक्रमों में वांछित कौशल और दक्षताओं को प्राप्त करने की क्षमता होती है।

वांछित कौशल और दक्षताओं को युवा विकास कार्यक्रमों द्वारा प्राप्त किया जा सकता है जो एक ही मुद्दे के बजाय युवाओं के व्यक्तिगत और सामुदायिक संदर्भों में उनकी व्यापक विकास आवश्यकताओं पर ध्यान केंद्रित करते हैं। एक व्यापक और समग्र दृष्टिकोण नए हुनर और ज्ञान को सुदृढ़ बनाने के लिए आवश्यक है जो युवाओं, उनके परिवारों, मित्र समूहों, स्कूलों, पड़ोस और समुदाय के सामने आने वाली चुनौतियों का समाधान करता है।

भारत में खेल उद्योग के विकास ने विभिन्न स्टार्टअप्स को इस विशेष उद्योग से संबंधित आंकड़े विषय–वस्तु संग्रहण, शिक्षा और प्रशिक्षण, ऑनलाइन रिटेल, प्रौद्योगिकी, ऑनलाइन टिकट बुकिंग के साथ–साथ खेलों के बुनियादी ढांचे के निर्माण के अवसर प्रदान किए हैं। इस क्षेत्र में स्टार्टअप्स के असाधारण विकास की सम्भावना है क्योंकि इसका बाज़ार अभी भी प्रारंभिक अवस्था में है। स्मैश एंटरटेनमेंट (जिसे महामारी के दौरान बंद करना पड़ा) और किक जैसे स्टार्टअप्स इनडोर वातावरण में आउटडोर गेम खेलने के लिए अनुभवात्मक बुनियादी ढांचा प्रदान कर रहे थे। महेश भूपति और युवराज सिंह जैसे खिलाड़ी भी Sports365.in जैसे स्टार्टअप्स से जुड़े हैं। इस उद्योग में स्टार्टअप्स के अन्य समूह रुझानों के आधार पर आंकड़े और विश्लेषण प्रदान करके खिलाड़ियों के प्रदर्शन में सुधार के लिए तकनीकी सहायता मुहैया करवाने का प्रयास कर रहे हैं।

सार्वजनिक खेल निवेश को ग्रामीण खेल अर्थव्यवस्था को प्रोत्साहन के लिए दिए जाने वाले लाभों को धीमी गति से लेकिन 'सतत' रूप से प्रदान करने पर ध्यान देना चाहिए क्योंकि ग्रामीण खेलों के विकास और ग्रामीण आर्थिक विकास के बीच एक आंतरिक संयोजन है।

भौगोलिक परिवेश , पारंपरिक विचारों के प्रभाव ,ग्रामीण आबादी की आय, अधिकांश खेलों से सम्बंधित उपभोग की जानकारी के चलते ग्रामीण खेल बाज़ार अभी भी प्राथमिक चरण में हैं लेकिन ग्रामीण खेलों से संबंधित नए निर्माण और ग्रामीण खेल गतिविधियों के चलते ग्रामीण क्षेत्रों में खेल उद्योग का कायाकल्प अब दूर नहीं है। यह ग्रामीण क्षेत्रों में खेलों के नए उपभोग बाज़ार के विकास को बढ़ावा देगा। इसलिए खेलों से संबंधित खपत में होने वाला विस्तार नए ग्रामीण खेल उद्योग और संबंधित उद्योगों के विकास को बढ़ावा देगा। आर्थिक विकास के असंतुलन और क्षेत्रीय मतभेदों ने भी ग्रामीण खेलों के विकास में असंतुलन पैदा किया है।

निष्कर्ष

खेल क्षेत्र आर्थिक रूप से संतोषजनक और स्वास्थ्यप्रद होने के अवसर प्रदान करने के साथ–साथ युवाओं को सामाजिक मेल–मिलाप और संपर्क विकसित करने का अवसर भी प्रदान करता है। विभिन्न सांस्कृतिक आदान–प्रदान, जो प्रतिभागियों के बीच आपसी सम्मान को बढ़ावा देता है, राष्ट्र निर्माण के लिए व्यापक अवसर प्रदान करता है और साथ ही, विविधता में एकता के सिद्धांतों को भी मज़बूत करता है।

(लेखक सेंटर फॉर इनोवेशन, इंक्यूबेशन एंड बिज़नैस मॉडलिंग, जेकेईडीआई के इंचार्ज हैं। लेख में व्यक्त विचार निजी हैं।)

ई–मेल : irtif_lone@yahoo.co.in

देश में खेलों के लिए आधारभूत ढांचा

–राजेश राय

टोक्यो ओलंपिक और पैरालम्पिक में भारतीय खिलाड़ियों को मिली अभूतपूर्व कामयाबी के बाद देश में खेलों को लेकर नया माहौल बन रहा है। इसके बाद अब यह सवाल उठ रहा है कि क्या देश में खेलों के लिए पर्याप्त आधारभूत ढांचा मौजूद है जो खिलाड़ियों की ज़रूरतों को पूरा कर सके। हालांकि ओलम्पिक और पैरालम्पिक की कामयाबी से हम इन बातों को नज़रअंदाज नहीं कर सकते कि देश खेलों के लिए आधारभूत सुविधाओं के मामले में अब भी बहुत पीछे है। खेल मंत्री ने 2028 के ओलम्पिक तक देश को टॉप 10 देशों में ले जाने का लक्ष्य रखा है इस लक्ष्य को हासिल करने के लिए भारत में बेहद तेजी में खेल अवसंरचना विकास समय की मांग है।

टोक्यो ओलंपिक और पैरालम्पिक में भारतीय खिलाड़ियों को मिली अभूतपूर्व कामयाबी के बाद देश में खेलों को लेकर नया माहौल बन रहा है। इसके बाद अब यह सवाल उठ रहा है कि क्या देश में खेलों के लिए पर्याप्त आधारभूत ढांचा मौजूद है जो खिलाड़ियों की ज़रूरतों को पूरा कर सके। वर्ष 2022 में राष्ट्रमंडल और एशियाई खेल होने हैं और टोक्यो की कामयाबी का असर इन खेलों में भी साफ़ नज़र आना चाहिए। राष्ट्रमंडल और एशियाई खेलों में भारत पहले भी अच्छा प्रदर्शन करता आया है और अगले वर्ष इस प्रदर्शन में और इज़ाफा होना चाहिए।

अब से लगभग 11 साल पहले राजधानी दिल्ली में राष्ट्रमंडल खेलों का आयोजन किया गया था और हज़ारों करोड़ रुपये खर्च कर स्टेडियमों में सुधार किया गया था लेकिन पिछले 11 वर्षों में स्टेडियमों की स्थिति में सुधार के बजाए नुकसान ज़्यादा हुआ है। स्टेडियमों में हालात और सुविधाएं अब भी आम आदमी की पहुंच से बाहर हैं। रही सही कसर पिछले दो साल में देश में कोरोना की स्थिति ने पूरी कर दी हैं। कोरोना का कहर तो ऐसा रहा है कि खिलाड़ी अपने घरों में कैद होकर रह गए लेकिन इसके बावजूद भारत ने टोक्यो ओलम्पिक में सात और पैरा ओलम्पिक में 19 पदक जीतकर यह साबित किया कि जब तक इंसान के मन में हिम्मत और हौंसला हो तो कोई भी बाधा उसके सामने छोटी पड़ जाती है।

हालांकि ओलम्पिक और पैरालम्पिक की कामयाबी से हम इन बातों को नज़रअंदाज नहीं कर सकते कि देश खेलों के लिए आधारभूत सुविधाओं के मामले में अब भी बहुत पीछे है। खेल मंत्री ने 2028 के ओलम्पिक तक देश को टॉप 10 देशों में ले जाने का लक्ष्य रखा है इस लक्ष्य को हासिल करने के लिए भारत में बेहद तेज़ी में खेल अवसंरचना विकास समय की मांग है। हमारे पास वे सब सुविधाएं और खेल ढांचा मौजूद है जो इस लक्ष्य तक पहुंचने में मददगार बन सकें।

राजधानी दिल्ली का मेजर ध्यानचंद नेशनल स्टेडियम राष्ट्रीय–स्तर के हॉकी मैचों के लिए तरस गया है क्योंकि हॉकी इंडिया ने हॉकी के लिए सारा माहौल ओडिशा के भुवनेश्वर स्थित कलिंगा स्टेडियम शिफ्ट कर दिया है।

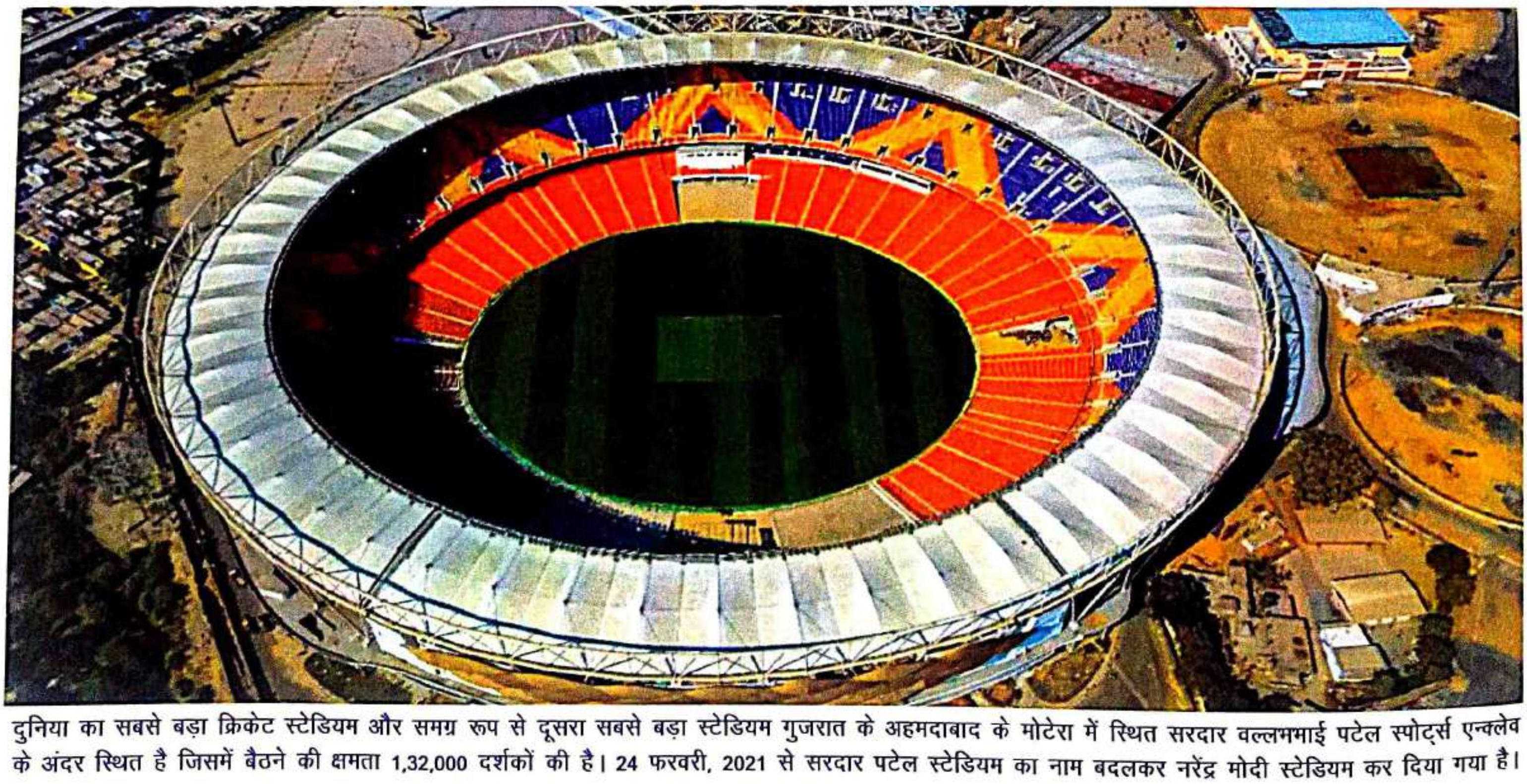

दुनिया का सबसे बड़ा क्रिकेट स्टेडियम और समग्र रूप से दूसरा सबसे बड़ा स्टेडियम गुजरात के अहमदाबाद के मोटेरा में स्थित सरदार वल्लभभाई पटेल स्पोर्ट्स एन्क्लेव के अंदर स्थित है जिसमें बैठने की क्षमता 1,32,000 दर्शकों की है। 24 फरवरी, 2021 से सरदार पटेल स्टेडियम का नाम बदलकर नरेंद्र मोदी स्टेडियम कर दिया गया है।

राजधानी स्थित एक और हॉकी स्टेडियम शिवाजी स्टेडियम में तो हॉकी मैचों का जैसे अकाल पड़ गया है। जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम को फुटबॉल का हब बनाने की बात की गई थी लेकिन नेहरू स्टेडियम में कोई फुटबॉल मैच आयोजित नहीं हुआ है। दिल्ली की शूटिंग रेंज राजधानी के एक कोने में बसी हुई है जहां पहुंचना किसी के लिए भी बहुत मुश्किल हो सकता है।

कोरोना के कारण क्रिकेट के बहुचर्चित आईपीएल के पिछले दो संस्करण और टी–20 विश्व कप का आयोजन संयुक्त अरब अमीरात में हुआ है जिससे देश में मौजूद क्रिकेट स्टेडियमों को बड़ा झटका लगा है। आईपीएल 2021 का शुरुआती चरण भारत में हुआ लेकिन कोरोना के कुछ मामले निकल जाने के कारण बीसीसीआई को इसे स्थगित करना पड़ा। बीसीसीआई ने फिर यही फैसला किया कि बेहतर होगा कि आईपीएल के शेष मैचों को यूएई में करा लिया जाए ताकि टूर्नामेंट तो कम से कम पूरा हो जाए। आईपीएल के आयोजन की सफल कामयाबी ने बीसीसीआई के लिए विश्व कप को यूएई और ओमान में कराने के रास्ते खोल दिए। बीसीसीआई ने घरेलू क्रिकेट के मैचों को कराने की बड़ी योजना तैयार की है जिससे अगले साल देश में अंतर्राष्ट्रीय मैचों के आयोजन का रास्ता साफ़ हो सके।

अभी हाल ही में मुझे बिहार जाने का मौका मिला लेकिन यह देखकर बड़ी हैरानी हुई कि पूरे रास्ते भर कहीं भी खेलने के सही मायनों में बने मैदान दिखाई नहीं दिए। और तो और खिलाड़ियों का भी अभाव साफ़तौर पर नज़र आया। मैदानों की कमी से प्रांतीय स्तर पर खिलाड़ी हमेशा दो–चार होते रहे हैं।

'यह ज़रूरी नहीं है कि हम केवल चैंपियन बनाएं, बल्कि ऐसा वातावरण बनाएं जहां पर बच्चे, युवा और बुजुर्ग खेल का आनंद हासिल कर पाएं। जिस देश में खेल अधिक लोकप्रिय होता है वहां पर आनंद या खुशी का स्तर भी बेहतर होता है। खेल जीवन की गुणवत्ता में भी सुधार करता है। खेलों का आज बहुत अच्छा भविष्य है। आज के बच्चों में प्रतिभा है, दक्षता है। उन्हें अनुशासन का महत्व बताना है। इसके लिए खेल सबसे बेहतर तरीका और माध्यम है।

राष्ट्रीय बैडमिंटन कोच पुलेला गोपीचंद का कहना है, 'यह ज़रूरी नहीं है कि हम केवल चैंपियन बनाएं, बल्कि ऐसा वातावरण बनाएं जहां पर बच्चे, युवा और बुजुर्ग खेल का आनंद हासिल कर पाएं। जिस देश में खेल अधिक लोकप्रिय होता है वहां पर आनंद या खुशी का स्तर भी बेहतर होता है। खेल जीवन की गुणवत्ता में भी सुधार करता है। उन्हें लगता है कि अब भारतीय खिलाड़ियों को मूलभूत सुविधाओं के लिए चिंता नहीं करनी पड़ रही है. इसके लिए उन्हें अपने खेल के दिनों में जूझना पड़ता था। गोपीचंद ने कहा, 'मैं अपनी पूरी ज़िंदगी मूलभूत खेल सुविधाओं के लिए जूझता रहा। मुझे खुशी है कि आज की पीढ़ी को इसके लिए नहीं जूझना पड़ रहा है, खेलों का आज बहुत अच्छा भविष्य है। आज के बच्चों में प्रतिभा है. दक्षता है। उन्हें अनुशासन का महत्व बताना है। इसके लिए खेल सबसे बेहतर तरीका और माध्यम है। बच्चे खेल में तभी आगे आएंगे, जब बेहतर आधारभूत ढांचा होगा। देश में विश्वस्तरीय सुविधाएं होंगी तो बच्चे निश्चित तौर पर खेलों में देश का परचम लहराएंगे।'

टोक्यो में जीतने के बाद पदक विजेता खिलाड़ियों को धन राशि, मकान, ज़मीन और कारों से लाद दिया गया है लेकिन ओलम्पिक से पहले खिलाड़ियों को अपनी ट्रेनिंग के लिए भी जूझना पड़ा। ओलम्पिक के लिए क्वालीफाई कर गए खिलाड़ियों को तो केंद्र सरकार 'टॉप्स' स्कीम के तहत 50–50 हज़ार रुपये का जेब खर्च देती थी, उनके लिए कोचों और सुविधाओं की पूरी व्यवस्था रहती थी और एक्सपोज़र के लिए उन्हें विदेश भेजा जाता था लेकिन दूसरे खिलाड़ियों के पास इस तरह की कोई सुविधा नहीं थी। आज़ादी के 70 वर्षों के बाद भी यदि हमें सात पदकों पर संतोष करना पड़ रहा है तो फिर मानना पड़ेगा कि कुछ कमी ज़रूर है जिसे दुरुस्त करना ज़रूरी है।

देश में अधिकतर स्कूलों की स्थिति यह है कि उनके पास साज़ो–सामान है लेकिन उनके पास ढंग के ग्राउंड नहीं हैं जहां उनके बच्चे अभ्यास कर सकें।

कोरोना के समय में तो अधिकांश स्कूलों में सुविधाएं बंद थीं, टूर्नामेंट आयोजित नहीं हो रहे थे और कई खेलों की तो राष्ट्रीय प्रतियोगिताएं तक आयोजित नहीं हो पायीं। स्थिति में अब थोड़ा बदलाव आ रहा है। धीरे–धीरे हालात सुधर रहे हैं और कई जगह प्रतियोगिताएं आयोजित हो रही हैं।

ग्रामीण–स्तर पर सुविधाओं का अभाव : ग्रामीण–स्तर पर खेल सुविधाओं का टोटा है। ज़िला–स्तर पर अर्बन क्षेत्र को छोड़ दिया जाए तो ग्रामीण तबके पर सरकार व सिस्टम उदासीन हैं। हरियाणा राज्य कृषि विपणन बोर्ड ने 10–11 साल पहले ग्रामीण क्षेत्र में खेल प्रतिभाओं को आगे लाने के उद्देश्य से राजीव गांधी ग्रामीण खेल परिसर तैयार किए थे। गांव तिगांव, अटाली और फतेहपुर बिल्लौच में स्टेडियम बनाए गए। इसके अलावा, शाहपुर कलां में शहीद चंद्रशेखर आज़ाद ग्रामीण स्टेडियम मौजूद है। हालांकि सुविधाओं के नाम पर न ज़मीनी–स्तर पर कोई सुविधा है, न ही कोच ही इन परिसरों में तैनात हैं। इससे ग्रामीण प्रतिभाएं आगे आने के लिए रास्ता नहीं तलाश पाती।

कोचों की भारी कमी : सुविधाएं हैं, कुछ खेल व्यावसायिक हो गए हैं। सब सुविधाएं होने के बावजूद प्रशिक्षक की कमी को पूरा नहीं किया गया है। खेलों की प्रतिभा ग्रामीण क्षेत्र में ही बसी है, वहां ध्यान देने की ज़रूरत है। बीते करीब 20 वर्षों में खेलों को समझने के बाद लगता है, प्रतिभाएं सुविधाओं के अभाव में दम तोड़ती हैं। इस पर ध्यान देने की ज़रूरत है।

सिंथेटिक ट्रैक की कमी : आधुनिक तकनीक के इस युग में भी सिटी चंडीगढ़ के मेहनती धावक सिंथेटिक ट्रैक के लिए तरस रहे हैं। घास और सिंडर पर अभ्यास करने वाले धावकों को राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय मुकाबलों में सीधे सिंथेटिक ट्रैक पर उतरना पड़ता है। सिंथेटिक ट्रैक का अभ्यास न होने के चलते वे इन मुकाबलों

फिट इंडिया मुहिम को बढ़ावा

'फिट इंडिया' मुहिम को नई गति प्रदान करने के लिए खेल मंत्रालय 1 नवंबर, 2019 से राष्ट्रीय और राज्य–स्तर के सभी खेल परिसंघों और क्लबों को केंद्र सरकार की ओर से उपलब्ध कराए गए खेल परिसरों का निशुल्क इस्तेमाल करने की अनुमति दे चुका है। ये सुविधा भारतीय खेल प्राधिकरण के केंद्रों में आयोजित नहीं होने वाली खेल प्रतियोगिताओं में हिस्सा लेने वाले खेल प्रशिक्षकों और प्रशिक्षु खिलाड़ियों को भी उपलब्ध है। सरकार ने यह फैसला इस सोच के साथ लिया कि खेल सुविधाओं की पहुंच सब तक हो सके ताकि खेल संस्कृति के माध्यम से शारीरिक स्वास्थ्य ठीक रखना भारतीयों के आम जीवन का हिस्सा बन सके।

शुरुआती चरण में दिल्ली के जवाहरलाल नेहरु स्टेडियम, इंदिरा गांधी स्टेडियम, मेजर ध्यानचंद स्टेडियम और करणी सिंह शूटिंग रेंज को राज्य और केंद्र–स्तर के खेल परिसंघों के लिए खोले जाने का फैसला लिया गया ताकि वे इन स्थानों में सभी तरह की खेल प्रतियोगिताएं और टूर्नामेंट आयोजित कर सकें। परिसरों के इस्तेमाल के लिए इन लोगों से कोई शुल्क नहीं लिया जाता है।

खेल सुविधाओं से संबंधित यह नई नीति गैर एसएआई खेल प्रशिक्षकों को बिना किसी शुल्क के सरकारी स्टेडियमों में अपने एथलीटों को प्रशिक्षित करने की अनुमति देती है, बशर्ते प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले खिलाड़ियों की संख्या कम–से–कम दस हो। कोच प्रशिक्षण सत्र शुरू करने के लिए ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं। प्रशिक्षकों को खिलाड़ियों से अपने हिसाब से प्रशिक्षण शुल्क लेने की छूट है। पेशेवर रूप से किसी खेल के लिए प्रशिक्षण नहीं प्राप्त करने वाले युवाओं को भी इन स्टेडियमों तक पहुंच की सुविधा दी गई है। इसके लिए वे अपनी पसंद के समय के अनुसार उपलब्ध स्लॉट्स की बुकिंग ऑनलाइन कर सकते हैं। पर इसके पहले उन्हें भारतीय खेल प्राधिकरण से नाममात्र का शुल्क अदाकर फोटो पहचान–पत्र प्राप्त करना होगा।

में पिछड़ जाते हैं। लेकिन सरकारी घोषणाएं हकीकत का रूप नहीं ले पा रही हैं।

पुरानी एस्ट्रोटर्फ और घास पर हॉकी का अभ्यास : उत्तरी क्षेत्र के प्रमुख हॉकी केंद्र चंडीगढ़ के हॉकी खिलाड़ी एक दशक पूर्व बिछाई गई पुरानी एस्ट्रोटर्फ पर ही अभ्यास करने को मज़बूर हैं। दुनिया के प्रमुख देशों में अब जहां गुलाबी नीली (ब्लू पिंक) एस्ट्रोटर्फ का प्रचलन है वहीं वर्ष 2004 में शहर के सेक्टर 42 के हॉकी स्टेडियम में बिछाई गई एस्ट्रोटर्फ से ही काम चलाया जा रहा है। दस साल पुरानी टर्फ कई स्थानों पर घिस चुकी है।

पैच लगाकर जैसे–तैसे गाड़ी को खींचा जा रहा है। इसी टर्फ पर हॉकी के मुकाबले भी आयोजित किए जाते हैं। इसके अलावा, शहर के सेक्टर 18 और पीयू में घास के मैदान पर खिलाड़ी अभ्यास करने को मज़बूर हैं। शहर के सबसे पुराने सेंटर सेक्टर 18 में सिक्स ए साइट एस्ट्रोटर्फ की सुविधा होने के बावजूद बिछाई नहीं गई।

क्रिकेट की संस्कृति हावी : 17 साल की उम्र में कई इंटरनेशनल मेडल जीत चुकी हरियाणवी निशानेबाज मनु भाकर के पिता राम किशन भाकर कहते हैं, "क्रिकेट पूरी तरह से खेल संस्कृति को निगल चुका है। हमारे एशियाई, कॉमनवेल्थ और वर्ल्ड चैंपियनों को क्रिकेटरों जैसी पहचान नहीं मिलती।"

युवा लड़कियां 'खेलो इंडिया' गेम्स में मेडल जीत रही थीं लेकिन अखबारों में इन खबरों को कोई अहमियत नहीं दी गई। 'एक्सपोज़र और लोकप्रियता, दोनों लिहाज से क्रिकेट सबसे प्रभावी खेल है। कुछ विश्लेषकों के मुताबिक इससे दूसरे खेलों को नुकसान होता है यहां तक कि भारतीय महिला क्रिकेट टीम को भी ना तो मीडिया से, ना ही फैंस से वह समर्थन मिलता है जो पुरुषों की टीम को मिला हुआ है। एक शीर्ष क्रिकेटर के सालाना अनुबंध में तो पूरी भारतीय महिला टीम सिमट जाती है।

खेलों पर शहरी संस्कृति हावी : भारत जैसे विशाल देश की चुनौतियां अपनी जगह हैं लेकिन अगर ग्रामीण–स्तर तक खेल की सुविधाएं पहुंचती हैं तो बड़े पैमाने पर महिला एथलीट सामने आ सकती हैं। कई विश्लेषकों का मानना है कि खेलकूद अभी भी शहरी संस्कृति के संरक्षण में हैं क्योंकि यहां कोचिंग और पोषण की बेहतर सुविधाएं उपलब्ध हैं। गावों में अभी ऐसा कुछ नहीं है। "कुछ गांव तो बहुत ही छोटे हैं, वहां कोई जागरूकता नहीं पहुंची है। उन ग्रामीणों को प्रतियोगिताओं के बारे में कोई जानकारी नहीं है क्योंकि वे अपने खेतों में मजदूरी करते हैं, घरों तक सीमित हैं वे लोग। अगर हम उन लोगों तक पहुंच पाएं तों हमें अच्छे एथलीट मिलेंगे।"

केंद्रीय खेलमंत्री अनुराग ठाकुर ने टोक्यो ओलम्पिक के उद्घाटन समारोह की स्क्रीनिंग के अवसर पर कहा कि आज छोटे शहरों से उभरती प्रतिभाओं पर ध्यान दिया जा रहा है और उनको तैयार किया जा रहा है, क्योंकि वे उच्चतम–स्तर पर प्रतिस्पर्धा करने के लिए सर्वोत्तम सुविधाएं और पेशेवर प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि हमने दूरदर्शी दृष्टिकोण के साथ खिलाड़ियों और उनके हितों को केंद्र में रखा हैं। पिछले सात वर्षों में हमने भारत की खेल अवसंरचना को नया रूप दिया है और इसका विस्तार किया है। श्री ठाकुर ने कहा कि हम देश में खेल की संस्कृति बनाने की

दिशा में एक नया दृष्टिकोण लाए है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में पिछले सात वर्षों में भारत को खेल महाशक्ति बनाने के लिए ज़मीनी–स्तर पर काम किए गए हैं।

ओलंपिक में अपनी जीत को याद करते हुए भारत की पहली महिला पदक विजेता कर्णम मल्लेश्वरी ने कहा कि जब तत्कालीन प्रधानमंत्री ने उन्हें "भारत की बेटी" कहा था तो उनकी आंखों में आंसू आ गए थे। पूर्व भारतीय बैडमिंटन खिलाड़ी पुलेला गोपीचंद ने कहा, "मेरे लिए खेल का वातावरण और देश में खेलों का विकास ही वास्तव में मुझे आगे बढ़ाता है, मैंने खेलों में एक विशिष्ट बदलाव और लोगों की ओर से समर्थन को देखा है।''

खेलमंत्री ने कहा कि हम बुनियादी ढांचे का निर्माण करके और 'खेलो इंडिया' युवा खेलों, खेलो इंडिया विश्वविद्यालय खेल और खेलो इंडिया स्कूल गेम्स जैसी खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन करके खेलों के विकास पर ध्यान केंद्रित करने की कोशिश कर रहे हैं। हम देश में बड़े खेल आयोजन कराने की भी कोशिश करेंगे। हमारा एक और ध्यान अच्छी गुणवत्ता वाले कोच तैयार करने पर होगा। और अंत में, एथलीटों को रोज़गार के अवसर देने से उन्हें खेल को करियर के रूप में अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया जाएगा।

मंत्रालय ने पहले चरण में आठ राज्यों में सरकार के स्वामित्व वाली खेल सुविधाओं को चिन्हित किया है। खेल मंत्रालय अपनी फ्लैगशिप योजना 'खेलो इंडिया' के तहत खेलो इंडिया स्टेट सेंटर्स ऑफ एक्सीलेंस (केआईएससीई) की स्थापना के लिए पूरी तरह तैयार है।

पूरे देश में एक मज़बूत खेल पारिस्थितिकी तंत्र बनाने के प्रयासों के तहत प्रत्येक राज्य और केंद्रशासित प्रदेश में ऐसा एक सेंटर चिन्हित किया जाएगा। पहले चरण में, मंत्रालय ने आठ राज्यों कर्नाटक, ओडिशा, केरल और तेलंगाना तथा अरुणाचल प्रदेश, मणिपुर, मिज़ोरम और नगालैंड जैसे पूर्वोत्तर राज्यों में सरकारी स्वामित्व वाले ऐसे खेल सुविधा केंद्रों की पहचान की है जिन्हें खेलो इंडिया स्टेट सेंटर्स ऑफ एक्सीलेंस में अपग्रेड किया जाएगा।

इन खेल सुविधा केंद्रों के चयन की प्रक्रिया अक्टूबर 2019 में शुरू हुई थी जब प्रत्येक राज्य और केंद्रशासित प्रदेश को उनके यहां उपलब्ध सर्वश्रेष्ठ खेल अवसंरचनाओं या ऐसी एजेंसियों की पहचान करने का काम सौंपा गया था जिन्हें विश्वस्तरीय खेल सुविधाओं में विकसित किया जा सकता था।

इस बारे में सरकार को कुल 15 खेल सुविधा केंद्रों के बारे में प्रस्ताव मिले थे जिन पर विचार के बाद इनमें से 8 केंद्रों को चुना गया। इनका चुनाव वहां प्राथमिकता वाले खेलों के लिए उपलब्ध प्रशिक्षण सुविधाओं, आवश्यक बुनियादी अवसंरचना तथा वहां से बनकर निकले प्रतिभावान खिलाड़ियों के आधार पर किया गया।

राज्य और केंद्रशासित प्रदेश इन केंद्रों को चलाएंगे और इनकी क्षमता बढ़ाकर इन्हें विश्वस्तरीय खेल सुविधा केंद्रों में बदलने का काम करेंगे। इन केंद्रों के प्रबंधन की ज़िम्मेदारी भी इन्हीं पर होगी। खिलाड़ियों के रहने और खाने की सुविधा आदि का काम भी इन्हें ही देखना होगा। हालांकि विशेषज्ञ कोच, सहायक कर्मचारियों, उपकरण तथा आधारभूत अवसंरचना के विकास के लिए कम पड़ने वाली वित्तीय ज़रुरतों को 'खेलो इंडिया' योजना के ज़रिए पूरा किया जाएगा।

पहले चरण में, निम्नलिखित खेल सुविधा केंद्रों को खेलो इंडिया स्टेट सेंटर ऑफ एक्सीलेंस में तब्दील किया जाएगाः संगी लाहेन खेल अकादमी, ईटानगर, अरुणाचल प्रदेश; जयप्रकाश नारायण राष्ट्रीय युवा केंद्र, बेंगलुरू, कर्नाटक; जी वी राजा सीनियर सेकेंडरी स्पोर्ट्स स्कूल, तिरुवनंतपुरम, केरल; खुमान लम्पक स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स, इम्फाल, मणिपुर राजीव गांधी स्टेडियम, आइज़ोल, मिज़ोरम; स्टेट स्पोर्ट्स अकादमी, आईजी स्टेडियम, कोहिमा, नगालैंड; कलिंग स्टेडियम, भुवनेश्वर, ओडिशा; रिजनल स्पोर्ट्स स्कूल, हकीमपेट, तेलंगाना।

हरियाणा में खेलो इंडिया यूथ गेम्स : कोरोना की तीसरी संभावित लहर को ध्यान में रखते हुए हरियाणा सरकार ने बड़ा फैसला लिया है। अब 'खेलो इंडिया यूथ गेम्स' का आयोजन फरवरी 2022 में किया जाएगा। इससे पहले इन खेलों का आयोजन इसी साल होना था। सरकार कोरोना की वजह से कोई जोखिम नहीं उठाना चाहती है। इन खेलों में 8500 खिलाड़ी भाग लेंगे। सभी खिलाड़ी अंडर–18 होंगे। 18 से कम आयु में टीकाकरण न हो पाने की वजह से सरकार और भी सतर्क है।

संक्षेप में, देश में शहरी क्षेत्रों में खेल सुविधाएं मौजूद हैं और माता–पिता भी बच्चों को प्रोत्साहित करने के लिए आगे रहते हैं। लेकिन ग्रामीण क्षेत्रों में खेल सुविधाओं का अभी खासा अभाव है हालांकि गांवों से बड़े पैमाने पर खिलाड़ियों के आगे बढ़ने की संभावनाएं हैं। इस तरफ सरकार को विशेष ध्यान देने की ज़रूरत है। सायना नेहवाल, पीवी सिंधु, एमसी मैरीकॉम, साक्षी मलिक, शेफाली वर्मा जैसी खिलाड़ियों की कामयाबी ने महिला खिलाड़ियों के लिए नए रास्ते खोले हैं। सरकारों ने जिस तरह खिलाड़ियों पर धन वर्षा की है, उसने भी खिलाड़ियों को आगे आने और खेलों को अपना कॅरियर बनाने के लिए प्रेरित किया है। देश में खेलों को आगे बढ़ाना इस बात पर भी निर्भर करेगा कि अगले साल राष्ट्रमंडल और एशियाई खेलों में भारतीय खिलाड़ी 2018 के मुकाबले कितनी तरक्की कर पाते हैं।

(लेखक यूनीवार्ता में विशेष संवाददाता हैं। लेख में व्यक्त विचार निजी हैं।)

ई–मेल : **rajeshraivarta@gmail.com**

कुरुक्षेत्र का आगामी अंक

दिसंबर, 2021 – अभिनव कौशल और आजीविका

शीघ्र प्रकाशित

स्मार्ट कृषि

'चंदन की खेती एवं उसका स्वास्थ्य प्रबंधन' पर प्रशिक्षण कार्यक्रम

"इस पहल से युवाओं को चंदन की खेती की ओर आकर्षित करने, विलुप्त होती इस कला को पुनर्जीवित करने और व्यापार के लिए भारत को एक अग्रणी बाजार के रूप में स्थापित करने में मदद मिलेगी।"

–श्री गिरिराज सिंह, ग्रामीण विकास और पंचायती राज मंत्री

'आज़ादी का अमृत महोत्सव' पहल के तहत ग्रामीण विकास मंत्रालय द्वारा बेंगलूरु के इंस्टीट्यूट ऑफ वुड साइंस एंड टेक्नोलॉजी (आईडब्ल्यूएसटी) के सहयोग से 'चंदन की खेती एवं उसका स्वास्थ्य प्रबंधन' विषय पर एक प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम भारतीय चंदन की बुनियादी बातें एवं फायदे, बीजों का प्रबंधन, नर्सरी तकनीक और पौधों के स्वास्थ्य प्रबंधन पर आधारित है। ग्रामीण विकास और पंचायती राज मंत्री श्री गिरिराज सिंह ने 10 अक्तूबर, 2021 को वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के ज़रिए इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन किया। मंत्री ने इस मुफ्त प्रशिक्षण पहल की सराहना करते हुए कहा कि इससे युवाओं को चंदन की खेती की ओर आकर्षित करने, विलुप्त होती इस कला को पुनर्जीवित करने और व्यापार के लिए भारत को एक अग्रणी बाज़ार के रूप में स्थापित करने में मदद मिलेगी।

चंदन लंबे समय से भारतीय विरासत एवं संस्कृति से जुड़ा हुआ है। देश का चंदन के वैश्विक व्यापार में 85 प्रतिशत तक का योगदान रह चुका है। हालांकि बाद में यह तेजी से घटने लगा है। एंटी–बैक्टीरियल, एंटी–बायोटिक और कैंसररोधी लाभों के साथ चंदन का उपयोग फार्मास्युटिकल्स, पर्सनल केयर और फर्नीचर में होता है।

वैश्विक–स्तर पर भारत और ऑस्ट्रेलिया चंदन के सबसे बड़े उत्पादक हैं जबकि सबसे बड़े बाज़ारों में संयुक्त राज्य अमेरिका, चीन, जापान और भारतीय घरेलू बाजार शामिल हैं। साल 2020 में चंदन का वैश्विक बाज़ार 30 करोड़ डॉलर था जबकि विश्व व्यापार अनुसंधान ने 2040 तक इस बाज़ार का आकार 3 अरब डॉलर तक पहुंचने का अनुमान जाहिर किया है। विकास की इस ज़बर्दस्त क्षमता को पहचानते हुए मंत्री ने निर्यात के लिए गुणवत्तायुक्त उत्पाद बनाकर आगामी मांग को भुनाने के लिए तैयारी करने पर ज़ोर दिया। उन्होंने माना कि चंदन की खेती वाले राज्यों में आईडब्ल्यूएसटी के नेतृत्व में चंदन प्रौद्योगिकी नवाचार केंद्र स्थापित करने, प्रशिक्षण एवं कौशल विकास में मूल्यवर्धन के साथ–साथ किसानों एवं युवा उद्यमियों के बीच खेती के नए तरीकों को शुरू करने जैसी तमाम पहल के ज़रिए इसे हासिल किया जा सकता है।

चंदन की खेती से जुड़े कुछ महत्वपूर्ण पहलू

चंदन की लकड़ी को सबसे महंगी लकड़ी माना जाता है। इसीलिए इसे 'ग्रीन गोल्ड' भी कहा जाता है। इसका बाज़ार मूल्य करीब 26,000 से 30,000 रुपये प्रति किलो तक है। एक पेड़ से किसान को 15 से 20 किलो लकड़ी आराम से मिल जाती है। ऐसे में उसे एक पेड़ से 5 से 6 लाख रुपये तक आसानी से प्राप्त हो जाते हैं। वर्तमान में चंदन की खरीद– बिक्री पर सरकार ने रोक लगा रखी है। ऐसे में सिर्फ सरकार ही इसे खरीद सकती है। 2017 में बने नियम के मुताबिक कोई भी किसान चंदन की खेती कर सकता है लेकिन निर्यात सिर्फ सरकार ही कर सकती है।

चंदन का इस्तेमाल सबसे ज्यादा परफ्यूम में किया जाता है। आयुर्वेद में भी चंदन का खूब इस्तेमाल होता है। इसके अलावा, ब्यूटी प्रोडक्ट्स में भी इसकी काफी मांग है। चंदन के पेड़ को शुरू के 8 सालों तक किसी बाहरी सुरक्षा की ज़रूरत नहीं होती क्योंकि उस समय तक इसमें खुशबू नहीं होती। जैसे ही पेड़ की लकड़ी के पकने की प्रक्रिया शुरू होती है, वैसे ही इसमें खुशबू आनी शुरू हो जाती है। इस दौरान इसे सुरक्षा की ज़रूरत होती है।

चंदन के दो प्रकार होते हैं– एक सफेद चंदन और दूसरा लाल चंदन। उत्तर भारत में सफेद चंदन की खेती सबसे ज़्यादा होती है क्योंकि इसमें 7.5 पीएच वाली मिट्टी की ज़रूरत होती है, वहीं लाल चंदन के पेड़ के लिए 4.5 से 6.5 पीएच वाली मिट्टी की ज़रूरत होती है। यही कारण है कि लाल चंदन की खेती दक्षिण भारत में की जाती है। चंदन के पेड़ रेतीले और बर्फीले इलाके में नहीं उगाए जा सकते हैं।

'अतिथि देवो भव' : भारतीय पर्यटन क्षेत्र का विकास

आज़ादी का अमृत महोत्सव

–डॉ. अमिय कुमार महापात्रा और डॉ. नंदीश वी. हिरेमठ

कोरोना महामारी की वजह से पिछले 15–18 महीनों से पर्यटन क्षेत्र को कड़ी चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। हालांकि, अब स्थिति में सुधार हो रहा है। अगर केंद्र और राज्य सरकारें निजी पर्यटन उद्योग से जुड़े पक्षों के साथ मिलकर पर्यटन के विकास के लिए बेहतर रणनीति तैयार करती हैं, तो इससे निश्चित तौर पर भारत में सतत पर्यटन का मार्ग प्रशस्त हो सकेगा।

किसी भी देश के आर्थिक विकास में प्राथमिक, माध्यमिक और सेवा क्षेत्र के योगदान की अहम भूमिका होती है। साथ ही, सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) में सेवा क्षेत्र के योगदान के आधार पर ही विकास की प्रकृति और गुणवत्ता तय होती है। भारत के जीडीपी मे सेवा क्षेत्र का योगदान तकरीबन 55 प्रतिशत है और इसमें पर्यटन क्षेत्र की अहम हिस्सेदारी है। जीडीपी में पर्यटन क्षेत्र की हिस्सेदारी 5 प्रतिशत है और यह क्षेत्र प्रत्यक्ष और टिकाऊ रोज़गार का भी ज़रिया है।

यह देखा गया है कि भारत में 10 में से एक रोज़गार पर्यटन क्षेत्र में पैदा होते हैं। साथ ही, इससे विदेशी मुद्रा भी हासिल होती है। कुल मिलाकर, पर्यटन क्षेत्र का असर बहुआयामी है चूंकि इससे कई क्षेत्र जुड़े हैं और इन क्षेत्रों की पारस्परिक निर्भरता है। आर्थिक लाभ और सामाजिक–आर्थिक असर और समानता सुनिश्चित करने के नज़रिए से देखा जाए, तो पर्यटन क्षेत्र सबसे तेज़ी से आगे बढ़ने वाला उद्योग है।

पर्यटन के मामले में भारत को वैश्विक–स्तर पर सम्मान हासिल है। इसकी वजह हमारे देश की समृद्ध संस्कृति और विरासत है। भारत के पर्यटन क्षेत्र की बुनियाद, यहां की गौरवशाली परंपराओं और समृद्ध सांस्कृतिक विरासत पर आधारित है। भारत के पेड़–पौधे और जंगल, वास्तुशिल्प से संबंधित स्मारक, संगीत, चित्रकला, कला और शिल्प, नृत्य, अलग–अलग संस्कृतियां, परम्पराएं और त्यौहारों की वजह से इसे 'पर्यटकों के लिए स्वर्ग' माना गया है। जब कोई व्यक्ति भारत का भ्रमण करता है, तो उसे यहां पर कई तरह की संस्कृतियां देखने को मिलती हैं। भारत के लोगों को अपनी संस्कृतियों को लेकर गर्व है। ये संस्कृतियां भारतीय पर्यटन की भी बुनियाद हैं।

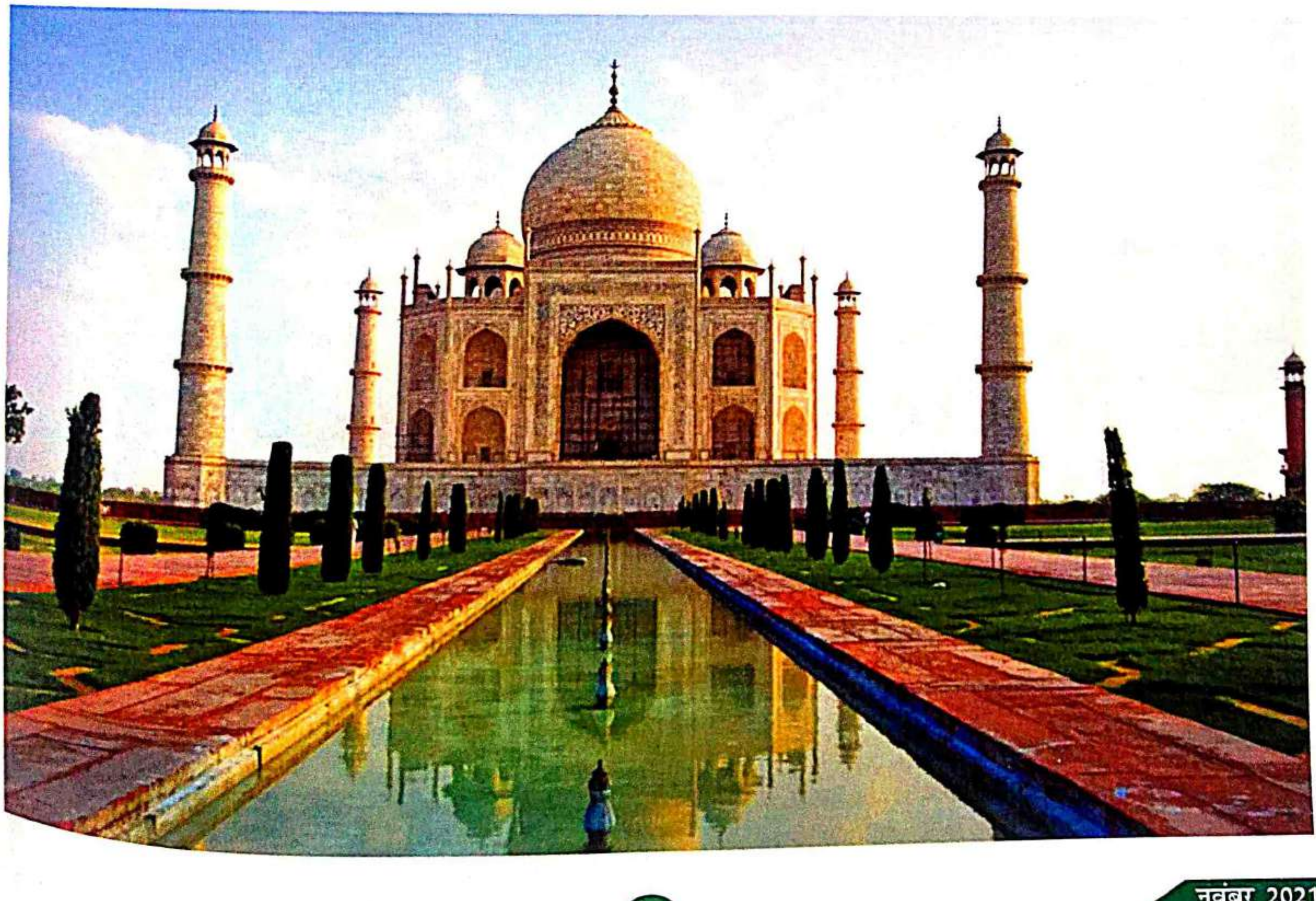

भारत में पर्यटन क्षेत्र का महत्व

पर्यटन क्षेत्र एक तरह से उपभोग–आधारित आर्थिक क्षेत्र है और यहां पर काम करने वालों की काफी मांग है। लिहाज़ा, यह क्षेत्र न सिर्फ पर्यटन क्षेत्र में प्रत्यक्ष रोज़गार मुहैया कराता है, बल्कि संबंधित/सहायक क्षेत्रों में भी अप्रत्यक्ष रोज़गार के अवसर पैदा होते हैं। पर्यटन क्षेत्र से विदेशी मुद्रा की कमाई होती है और भुगतान संतुलन से जुड़े घाटे को भी कम करने में मदद मिलती है। आर्थिक विकास में पर्यटन क्षेत्र की अहम भूमिका है। यह क्षेत्र रोज़गार के नए ठिकाने बनाता है और अर्थव्यवस्था के लिए आय पैदा करता है। रोज़गार पैदा करने और आय बढ़ाने में पर्यटन क्षेत्र का अहम योगदान है। यह आय के पुनर्वितरण और गरीबी कम करने में भी मददगार है। साथ ही, इससे शहरी–ग्रामीण असमानता और अमीर–गरीब के बीच की खाई को भी कम करने में मदद मिलती है। भारत में पर्यटन क्षेत्र की अहमियत से जुड़े कई पहलू हैं और इसका संबंध सामाजिक–आर्थिक विकास से भी है। इस बारे में रेखाचित्र–1 में बताया गया है।

भारत जैसी बड़ी आबादी वाले देश में पर्यटन क्षेत्र के ज़रिए गरीबी हटाने व असमानता और बेरोज़गारी कम करने जैसे लक्ष्य हासिल किए जा सकते हैं। यह क्षेत्र फेरी वाले, टैक्सी ड्राइवर, गाइड, फोटोग्राफर आदि के रूप में भी बड़े पैमाने पर रोज़गार पैदा करता है। पर्यटन क्षेत्र ट्रैवल एजेंसी, आपूर्ति उद्योग, विज्ञापन एजेंसियां, खानपान उद्योग, मोटल, होटल और रेस्तरां के लिए भी अवसर उपलब्ध कराता है। पर्यटकों की मांग को पूरा करने के लिए नई इमारतों, होटल, मोटल और अतिथि गृह का निर्माण किया जा रहा है। इससे निर्माण उद्योग से जुड़े मजदूरों, इंजीनियरों, बढ़ई, पेंटर, प्लंबर आदि के लिए भी रोज़गार के अवसर मिलते हैं। पर्यटन क्षेत्र में रोज़गार का दायरा बहुआयामी है। यह क्षेत्र युवा और उम्रदराज, पढ़े–लिखे और कम पढ़े–लिखे, पुरुष–महिला सभी के लिए बिना किसी भेदभाव के रोज़गार के अवसर उपलब्ध कराता है। यह ऐसा क्षेत्र है जहां बड़े पैमाने पर श्रम की ज़रूरत पड़ती है, खासतौर पर कृषि क्षेत्र से पलायन करने वाले कर्मियों के लिए यहां गुंजाइश बन सकती है। लिहाज़ा, यह क्षेत्र काफी हद तक कृषि क्षेत्र पर मौजूद दबाव को कम करने में सहायक है।

किसी देश में पर्यटन क्षेत्र का विकास सीधे तौर पर वहां के आर्थिक विकास से जुड़ा होता है। यह बड़े पैमाने पर उद्यमिता संबंधी कौशल और पहल को भी बढ़ावा देता है। जीवन–स्तर को बेहतर बनाने, कलाओं और शिल्प कलाओं को बढ़ावा देने और पर्यावरण व सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण के प्रति जागरूकता

रेखाचित्र–1 : भारत में पर्यटन क्षेत्र का महत्व

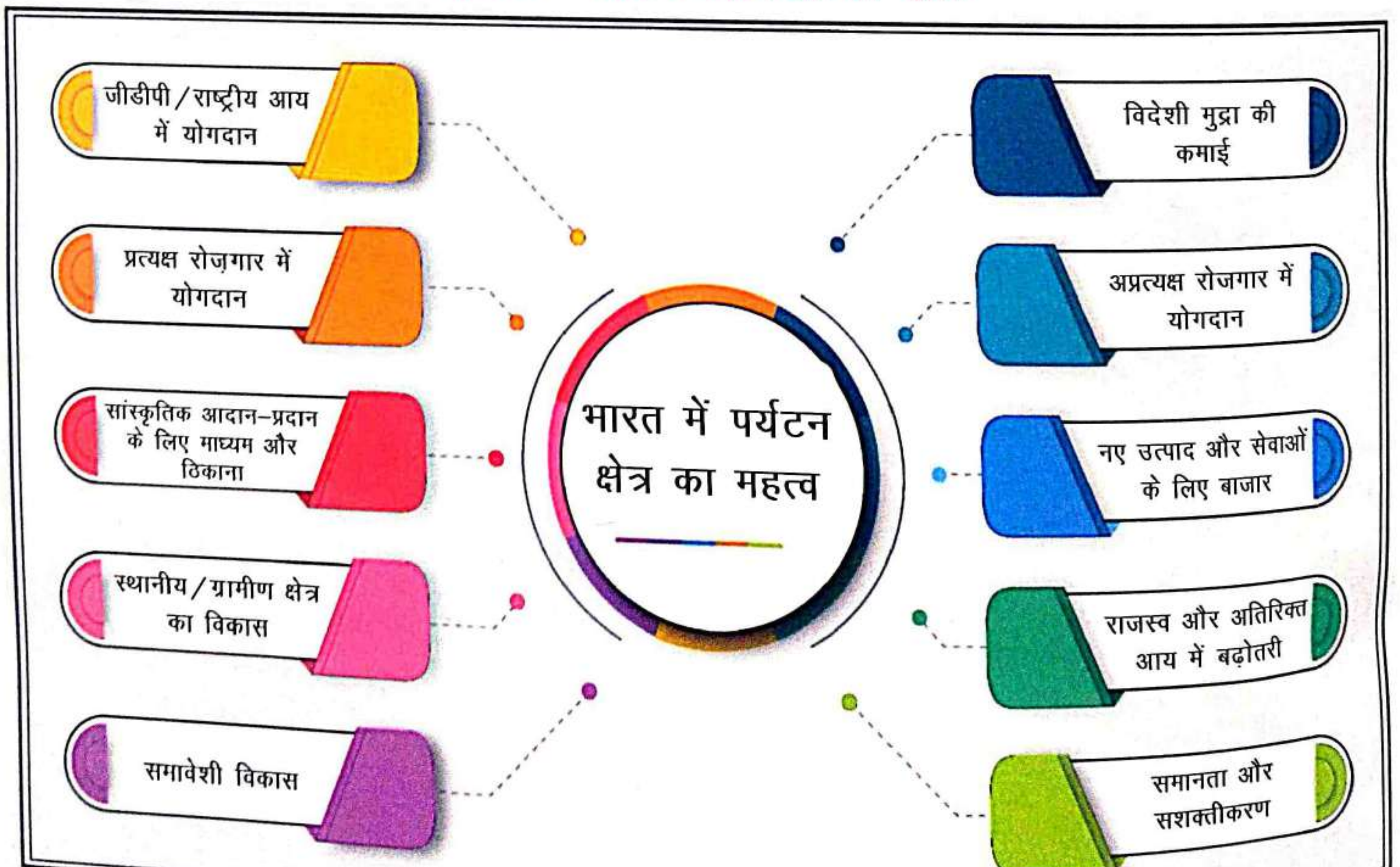

रेखाचित्र 1 : महापात्रा और हिरेमठ द्वारा तैयार डिज़ाइन (2021)।

भारत में पर्यटन क्षेत्र का विश्लेषण

ताकत

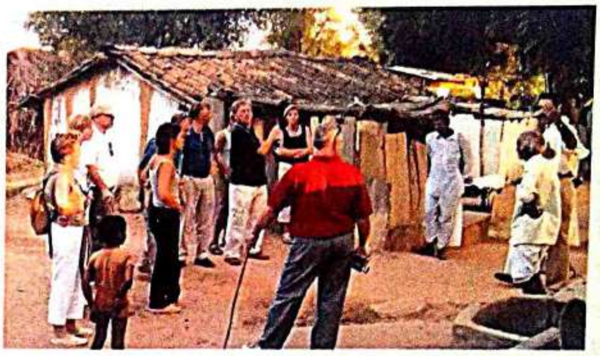

- केंद्र और राज्य सरकारों ने इस क्षेत्र को बढ़ावा देने के लिए पर्यटन से जुड़ी कई योजनाएं तैयार की हैं या इन्हें बढ़ावा दे रही है।
- पर्यटन केंद्रों के मामले में विविधता की समृद्ध विरासत मौजूद है, जैसेकि प्राकृतिक जगहें, रिसॉर्ट, ऐतिहासिक जगहें, प्राचीन स्थल, स्थानीय/क्षेत्रीय त्यौहार, बहु–सांस्कृतिक आदान–प्रदान आदि।
- सभी श्रेणी के ग्राहकों (घरेलू और विदेशी) के लिए अलग–अलग कीमतों पर सुविधाओं की उपलब्धता।
- देश के ज़्यादातर पर्यटन केंद्रों पर परिवहन, ठहराव, इलाज और खरीदारी आदि की अच्छी सुविधाएं मौजूद हैं।
- कुछ पर्यटक केंद्र अनोखे अनुभवों और खूबियों के लिए मशहूर हैं, जैसे कि पूर्वोत्तर राज्यों में प्राकृतिक पर्यटन (इको–टूरिज़्म), केरल में स्वास्थ्य पर्यटन, गोवा में मनोरंजन पर्यटन, दक्षिण भारत के राज्यों में मंदिर पर्यटन आदि।

कमज़ोरियां

- रखरखाव, स्वच्छता आदि कुछ चुनौतियां अब भी बरकरार हैं।
- पर्यटन केंद्रों के लिए सुरक्षा से जुड़े पहलू अब भी चिंता का विषय हैं।
- तकनीक की उपलब्धता और मोबाइल इंटरनेट की पहुंच की वजह से सूचना उपलब्ध है। हालांकि कुछ पर्यटन केंद्रों पर भरोसेमंद/ताज़ा सूचना नहीं मिल पाती है। खासतौर पर ऐसे पर्यटन केंद्रों पर यह दिक्कत है, जो ज़्यादा लोकप्रिय नहीं हैं।
- कुछ पर्यटन केंद्रों पर विदेशी पर्यटकों के लिए गैर–मसालेदार खाने की उपलब्धता अब भी चुनौती बनी हुई है।
- कभी–कभी पर्यटन केंद्रों पर स्थानीय लोगों द्वारा पर्यटकों का शोषण किया जाता है (मसलन ठगना, ज़्यादा पैसे वसूलना, गलत व्यवहार करना), जिससे भारत में पर्यटन की छवि पर खराब असर होता है।

उपलब्धियां

- भारत में अलग–अलग तरह के मौसम/जलवायु और सभी तरह के पर्यटन केंद्र हैं, जहां हर मौसम में जाया जा सकता है (बाकी देशों में किसी खास मौसम में ही पर्यटन के लिए गुंजाइश होती है)।
- कुछ पर्यटन केंद्रों पर पर्यटकों को आकर्षित करने और पर्यटन को बढ़ावा देने में ज़बर्दस्त प्रगति देखने को मिली है। इन इलाकों में स्थानीय लोगों की आय बढ़ी है, रोज़गार में बढ़ोत्तरी हुई है, स्थानीय एमएसएमई और कारीगरी से संबंधित कारोबार का प्रदर्शन बेहतर हुआ है (जैसे कि गोवा, पूर्वोत्तर के राज्य, केरल आदि)।
- सुनियोजित पर्यटन को आकर्षित और प्रोत्साहित करने के लिए संभावनाएं बेहतर हुई हैं, खासतौर पर काफी विदेशी पर्यटकों को इस तरह के बेहतर अनुभव मिल रहे हैं।
- केरल, पूर्वोत्तर राज्यों, पहाड़ी इलाकों आदि जगहों पर प्राकृतिक पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए पर्याप्त अवसरों का इस्तेमाल किया गया है।
- प्रसाद, स्वदेश दर्शन और खास तरह के पर्यटन जैसी योजनाओं का प्रदर्शन बेहतर रहा है, ई–वीज़ा जैसी पर्यटन सेवाओं में बढ़ोत्तरी हुई है और मदद संबंधी सेवाएं बेहतर हुई हैं।

आगे की राह

- पर्यटन को महज़ जगह घूमने, खाने–पीने, खरीदारी आदि की तरह नहीं, बल्कि बेहतर 'अनुभव' के तौर पर पेश करने की ज़रूरत है।
- कुछ पर्यटन केंद्रों की मार्केटिंग, ब्रांडिंग और रणनीति तैयार करने के लिए पीपीपी (सार्वजनिक निजी भागीदारी) मॉडल पर काम करना होगा और स्थानीय लोगों की शोषणकारी प्रवृत्ति पर भी अंकुश लगाना होगा।
- कभी–कभी मानव निर्मित पर्यटन केंद्रों की वजह से स्थानीय/क्षेत्रीय विरासत के गुम होने का खतरा पैदा हो जाता है। इस तरह की चुनौती से निपटने के लिए इन विरासतों को राष्ट्रीय विरासत के तौर पर स्वीकार करना चाहिए। साथ ही, इस क्षेत्र में और काफी कुछ किया जा सकता है।
- कुछ जगहों पर (हालांकि काफी कम) स्थानीय राजनीतिक तनाव या/और आतंकवादी गतिविधियों/सांप्रदायिक दंगों के कारण पर्यटकों पर नकारात्मक असर होता है और वे इन जगहों पर आने से बचते हैं, ऐसे में मीडिया और जनसंपर्क प्रबंधन अहम हो जाता है।
- केंद्र और राज्य सरकारों द्वारा निजी क्षेत्र के खिलाड़ियों के साथ मिलकर समग्र तरीके से काम करने की ज़रूरत है, ताकि समृद्ध विरासत और विविधतापूर्ण संस्कृति का संरक्षण और पोषण किया जा सके।

बढ़ाने में भी पर्यटन क्षेत्र योगदान कर रहा है। रोज़गार सृजन और अतिरिक्त आय के अलावा यह क्षेत्र नए उत्पाद और सेवाओं के लिए भी अवसर उपलब्ध कराता है, जो किसी क्षेत्र/राज्य के सर्वांगीण विकास के लिहाज से काफी अहम हैं। यह क्षेत्र रोज़गार के अलग-अलग माध्यमों को व्यापक-स्तर पर आर्थिक रूप से प्रभावित करता है। इससे कार्यबल में महिलाओं की भागीदारी को बढ़ाने में भी मदद मिलती है। यह ऐसा क्षेत्र है जो अतिथियों और मेज़बान, दोनों के लिए तमाम तरह की खुशियां लाता है और वैश्विक-स्तर पर शांति और खुशी का माहौल बनाता है। दूसरे शब्दों में कहा जाए, तो 'पर्यटन क्षेत्र अलग-अलग तरह के पर्यटकों/घुमंतुओं के लिए बेहतर और यादगार अनुभव उपलब्ध कराने का कारोबार है जिसका सर्वांगीण विकास में प्रमुख योगदान है।

भारत में पर्यटन क्षेत्र के विकास की स्थिति

कोरोना महामारी ने वैश्विक-स्तर पर पर्यटन क्षेत्र को नुकसान पहुंचाया है और भारत भी इसका अपवाद नहीं है। भारत में इससे बड़े पैमाने पर लोगों की आजीविका प्रभावित हुई। मार्च 2020 के बाद से लगभग 15-18 महीने तक पर्यटन गतिविधियों में ज़बर्दस्त गिरावट देखने को मिली। हालांकि, अगर हम कोरोना के पहले की अवधि (2009-2019) का विश्लेषण करें, तो पता चलता है कि इस दौरान पर्यटन क्षेत्र तेज़ी से फल-फूल रहा था और जीडीपी,

सारणी-1: पर्यटन क्षेत्र के विकास और रुझानों से जुड़ा विश्लेषण (2009-2019)

वर्ष	भारत आने वाले विदेशी पर्यटकों की संख्या (मिलियन में)	घरेलू पर्यटकों की संख्या (मिलियन में)	विदेशी मुद्रा की कमाई (अमेरिकी डॉलर और मिलियन में)
2009	5.17	668.80	11136
2010	5.78	747.70	14490
2011	6.31	864.53	17707
2012	6.58	1045.05	17971
2013	6.97	1142.53	18397
2014	7.68	1282.80	19700
2015	8.03	1431.97	21013
2016	8.80	1615.39	#22923
2017	10.04	1657.55	# 27310
2018	10.56	1853.79	# 28586
2019	10.93	2321.98	# 30058
2020	2.74	610.22	# 6958

नोट#: संशोधित अनुमान

स्रोत : (i) ब्यूरो ऑफ इमिग्रेशन, भारत सरकार, 2020 (ii) रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया (iii) पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार, 2016-2020 (iv) राज्य/केंद्रशासित पर्यटन विभाग से लेखकों द्वारा संग्रहित।

रोज़गार और विदेशी मुद्रा की कमाई में इसका योगदान लगातार बढ़ रहा था (सारणी-1)। साथ ही, कोरोना के बाद के दौर में अगर चीज़ें बेहतर होती हैं, तो पर्यटन क्षेत्र पिछले दशक के रुझानों को दोहरा सकता है। अतः पर्यटन क्षेत्र को बढ़ावा देने के लिए सरकार कई तरह के कदम उठा रही है और यह सिलसिला आगे भी जारी रहेगा, ताकि इस क्षेत्र को पटरी पर लाया जा सके। यह क्षेत्र लाखों-करोड़ों लोगों की आजीविका का माध्यम है, खासतौर पर गरीब और हाशिए पर मौजूद लोगों को इससे सहारा मिलता है।

'अतिथि देवो भव' जागरूकता की मिसाल

पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार ने 2005 में 'अतिथि देवो भव' नाम से सामाजिक जागरुकता अभियान शुरू किया। इस अभियान का मकसद पर्यटकों से बेहतर व्यवहार सुनिश्चित करना और उनकी यात्रा के अनुभव को बेहतर बनाना है। साथ ही, लोगों को पर्यटकों से बेहतर व्यवहार के लिए प्रेरित करना है। अतः, 'अतिथि देवो भव' वास्तविक अर्थ में पर्यटकों के लिए बेहतर अनुभव मुहैया कराता है और इससे मेज़बान और पर्यटकों के संबंधों को बेहतर बनाने में मदद मिलती है। अभियान के तहत आम लोगों को ध्यान में रखते हुए पर्यटन उद्योग से जुड़े पक्षों पर फोकस किया गया है। इसके तहत पुलिस, आव्रजन अधिकारियों, ड्राइवरों, गाइड और अन्य कर्मियों को प्रशिक्षण मुहैया कराया जाता है। ये तमाम कर्मी सीधे तौर पर पर्यटकों से संवाद करते हैं। इस अभियान का मुख्य मकसद भारत को पर्यटन का पसंदीदा गंतव्य बनाना है।

पर्यटन का बेहतर अनुभव काफी हद तक इस बात पर निर्भर करता है कि पर्यटकों की यात्रा और उनके ठहराव के दौरान स्थानीय लोग उनके साथ कितना सहयोग करते हैं। इस अभियान का मकसद नागरिकों को जवाबदेह बनाना है, ताकि हमारे देश की छवि पर आंच नहीं आए। हमारा बेहतर व्यवहार और ज़िम्मेदार तरीके से काम करने का अंदाज़ पर्यटन क्षेत्र को आगे बढ़ाएगा। पर्यटकों को बेहतर माहौल उपलब्ध कराने के लिए सरकार और अन्य पक्षों को ज़िम्मेदार तरीके से काम करना चाहिए।

भारत में पर्यटन क्षेत्र का विश्लेषण

रोज़गार और आजीविका के विकास में पर्यटन क्षेत्र के योगदान को देखते हुए कहा जा सकता है कि विकास के एजेंडे में इस क्षेत्र की अहम भूमिका है। अर्थव्यवस्था में पर्यटन क्षेत्र के बहुआयामी असर और भूमिका को देखते हुए सरकार इस क्षेत्र को बढ़ावा देने के लिए प्रतिबद्ध है।

कोरोना महामारी और पर्यटन क्षेत्र

कोरोना महामारी की वजह से पर्यटन क्षेत्र को तगड़ा झटका लगा। इस वजह से विश्व पर्यटन उद्योग को 2020 और 2021 के दौरान 4 खरब डॉलर का नुकसान हुआ। जहां तक भारतीय पर्यटन क्षेत्र का सवाल है, तो यहां भी कोरोना की वजह से कई स्तरों पर नुकसान देखने को मिला है, मसलन जीडीपी में इस क्षेत्र की हिस्सेदारी कम हुई और इससे जुड़े प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रोज़गार में भी गिरावट हुई। इसका असर लाखों लोगों की आजीविका पर पड़ा।

महामारी के कारण पूरी दुनिया मंदी के सबसे बुरे दौर से गुजर रही है। हालांकि, भारत के पास फिर से उठ खड़ा होने की क्षमता है, जैसा कि अगस्त 2021 के बाद से देखने को मिल रहा है। कोरोना का प्रकोप बढ़ने के बाद ज़्यादातर सामाजिक–आर्थिक गतिविधियां सुस्त पड़ गई थीं, लेकिन अब धीरे–धीरे ये फिर से पटरी पर लौट रही हैं। खासतौर पर पर्यटन क्षेत्र में यह रुझान देखने को मिल रहा है। यह निश्चित तौर पर एक सकारात्मक घटनाक्रम है। परिणामस्वरूप, कोरोना के प्रकोप के दौरान (मार्च 2020 से अगस्त 2021 के दौरान) फैली गरीबी, असमानता और बेरोज़गारी में अब धीरे–धीरे कमी देखने को मिल रही है।

पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए सरकार की पहल

कोरोना के दौरान हुए नुकसान से निपटने और पर्यटन क्षेत्र को बढ़ावा देने के लिए केंद्र सरकार और कई राज्य सरकारों ने कुछ योजनाओं की शुरुआत की है। इसके अलावा, मौजूदा अभियान 'आज़ादी का अमृत महोत्सव : आज़ादी के 75 साल बाद भारत' के तहत कोरोना के प्रतिकूल प्रभावों से निपटने के लिए भी कई कदम उठाए गए हैं। सरकार ने 'आत्मनिर्भर भारत' अभियान के तहत कई योजनाओं की शुरुआत की जिनका मकसद पर्यटन का विकास है। इनमें 'प्रसाद' और 'स्वदेश दर्शन' जैसी योजनाएं शामिल हैं। ये योजनाएं खासतौर पर पर्यटकों की ज़रूरतों को पूरा करने और पर्यटन को बढ़ावा देने के मकसद से शुरू की गई हैं। 'स्वदेश दर्शन' योजना का मकसद पर्यटकों के अनुभव को बेहतर बनाना, अवसरों की उपलब्धता बढ़ाना और कम चर्चित ठिकानों का प्रचार करना शामिल हैं। पर्यटन मंत्रालय की 'प्रसाद'* (तीर्थयात्रा कायाकल्प एवं आध्यात्मिक संवर्धन अभियान) योजना का मकसद तीर्थस्थलों और अन्य प्राचीन गंतव्यों को बढ़ावा देना है। इस अभियान के ज़रिए 29 राज्यों/केंद्रशासित प्रदेशों में 57 स्थलों की पहचान की गई है। साथ ही, 24 राज्यों में मंजूर की गई 36 परियोजनाओं पर पहले ही 622.08 करोड़ रुपये खर्च किए जा चुके हैं। पर्यटन विकास से जुड़ी अन्य योजनाएं इस तरह हैं– केंद्रीय एजेंसियों के लिए पर्यटन आधारभूत संरचना विकास, आय पैदा करने वाली पर्यटन परियोजनाओं के लिए गैप योजना, सेवाप्रदात्ता के लिए क्षमता निर्माण, घरेलू प्रचार और विज्ञापन (हॉस्पिटैलिटी समेत), विदेशों में प्रचार और विज्ञापन (मार्केटिंग विकास सहायता समेत), चैम्पियन सेवा क्षेत्र योजना, महिलाओं के लिए पर्यटन हेतु सुरक्षित स्थान आदि।

पर्यावरण पर पर्यटन के प्रतिकूल प्रभावों को कम करने के लिए 'सतत पर्यटन' की अवधारणा शुरू की गई है। सरकार पहले ही नए दौर के पर्यटन की शुरुआत कर चुकी है, जिसमें घरेलू पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए खास तरह का पर्यटन शामिल है। 'सतत पर्यटन' का मकसद 'मौसमी पर्यटन' को '365 दिनों के पर्यटन' में बदलना और विशेष अनुभवों के साथ नई श्रेणी के ग्राहकों की ज़रूरतों को पूरा करना है।

यह सर्वविदित तथ्य है कि पर्यटन से जुड़ी गतिविधियों का संबंधित स्थलों के पर्यावरण और सामाजिक–सांस्कृतिक पहलू पर असर होता है। यह भी कहा जाता है कि हर गतिविधि के लिए कीमत चुकानी पड़ती है। यह बात पर्यटन पर भी लागू होती है। अतः पर्यावरण पर पर्यटन के प्रतिकूल प्रभावों को कम करने के लिए 'सतत पर्यटन' की अवधारणा शुरू की गई है। सरकार पहले ही नए दौर के पर्यटन की शुरुआत कर चुकी है, जिसमें घरेलू पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए खास तरह का पर्यटन शामिल है। 'सतत पर्यटन' का मकसद 'मौसमी पर्यटन' को '365 दिनों के पर्यटन' में बदलना और विशेष अनुभवों के साथ नई श्रेणी के ग्राहकों की ज़रूरतों को पूरा करना है। खास तरह के पर्यटन में ये सब शामिल हैं– समुद्री पर्यटन, जोखिमपूर्ण पर्यटन, फिल्मी पर्यटन, स्वास्थ्य पर्यटन, विरासती पर्यटन, ग्रामीण पर्यटन और सतत पर्यटन।

आगे की राह

पर्यटक चाहे घरेलू हों या अंतर्राष्ट्रीय शानदार आधारभूत संरचना और बेहतर अतिथि सेवाएं चाहते हैं। वे ऐसा अनुभव चाहते हैं, जो उन्हें वर्षों तक याद रहे। इस क्षेत्र का विकास करने के लिए सरकार हर तरह के उपाय कर रही है। हालांकि, पर्यटन नीति के ढांचे में बदलाव करने की ज़रूरत है, ताकि कोरोना के बाद के माहौल में पर्यटकों के लिए प्राथमिकताओं में बदलाव किया जा सके। हवाई सुविधा, रेलवे, सड़क और जल मार्ग जैसी आधारभूत संरचनाओं को और मज़बूत बनाने की ज़रूरत है। साथ ही, पर्यटन क्षेत्र से जुड़े सुरक्षा पहलुओं को भी और बेहतर बनाना होगा।

इस क्षेत्र में लोगों की भागीदारी को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए और स्थानीय स्तर पर इसे अंजाम दिया जाना चाहिए, ताकि ज़्यादा से ज़्यादा लोगों को इससे जोड़ा जा सके। सुरक्षा चुनौतियों से निपटने और पर्यटकों को बेहतर अनुभव प्रदान करने के लिए डिजिटल और कनेक्टिविटी नेटवर्क को भी मज़बूत बनाना होगा। कोरोना महामारी की वजह से पिछले 15–18 महीनों से पर्यटन क्षेत्र को कड़ी चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। हालांकि, अब स्थिति में सुधार हो रहा है। अगर केंद्र और राज्य सरकारें निजी पर्यटन उद्योग से जुड़े पक्षों के साथ मिलकर पर्यटन के विकास के लिए बेहतर रणनीति तैयार करती हैं, तो इससे निश्चित तौर पर भारत में सतत पर्यटन का मार्ग प्रशस्त हो सकेगा।

(अमिय कुमार महापात्रा एफओएसटीआईआईएमए बिज़नेस स्कूल, द्वारका, नई दिल्ली में उपनिदेशक हैं; नंदीश वी. हिरेमठ इंड्स बिजनेस एकेडमी (आईबीए), बेंगलुरु में प्रोफेसर हैं। लेख में व्यक्त विचार निजी हैं।)

ई–मेल : amiyacademics@gmail.com

*PRASAD - Pilgrimage Rejuvenation & Spirituality Augmentation Drive

गांधी साहित्य
के अग्रणी प्रकाशक

आज़ादी का अमृत महोत्सव

चुनिंदा ई-बुक
एमेज़ॉन और गूगल प्ले
पर उपलब्ध

प्रकाशन विभाग
सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार

हमारी पुस्तकें ऑनलाइन खरीदने के लिए कृपया www.bharatkosh.gov.in पर जाएं।

ऑर्डर के लिए कृपया संपर्क करें : फोन : 011-24365609, ई-मेल : businesswng@gmail.com

वेबसाइट : www.publicationsdivision.nic.in

/dpd_india @DPD_India /publicationsdivision

आर. एन. आई./708/57
डाक-तार पंजीकरण संख्या : डी.एल. (एस)-05/3164/2021-23
आई.एस.एस.एन. 0971-8451, पूर्व भुगतान के बिना आर.एम.एस.
दिल्ली में डाक में डालने के लिए लाइसेंस : यू (डी.एन.)-54/2021-23
01 नवंबर, 2021 को प्रकाशित एवं 5-6 नवंबर, 2021 को डाक द्वारा जारी

R.N.I/708/57
P&T Regd. No. DL (S)-05/3164/2021-23
ISSN 0971-8451, Licenced under U (DN)-54/2021-23
to Post without pre-payment at R.M.S. Delhi.

प्रकाशन विभाग
सूचना और प्रसारण मंत्रालय
भारत सरकार

देश के सबसे बड़े सरकारी प्रकाशन समूह संग व्यापार का अवसर

हमारी लोकप्रिय पत्रिकाओं और साप्ताहिक रोज़गार समाचार की विपणन एजेंसी लेकर सुनिश्चित करें आकर्षक नियमित आय

विपणन एजेंसी मिलना... मतलब

- ✓ असीमित लाभ
- ✓ निवेश की 100% सुरक्षा
- ✓ स्थापित ब्रांड का साथ
- ✓ पहले दिन से आमदनी
- ✓ न्यूनतम निवेश-अधिकतम लाभ

रोज़गार समाचार के एजेंसी धारकों के लिए लाभ

प्रतियों की संख्या	खुदरा मूल्य में छूट
20-1000	25%
1001-2000	35%
2001-अधिक	40%

मासिक पत्रिकाओं के एजेंसी धारकों के लिए लाभ

प्रतियों की संख्या	खुदरा मूल्य में छूट
20-250	25%
251-1000	40%
1001-अधिक	45%

विपणन एजेंसी पाना बेहद आसान

- किसी शैक्षणिक योग्यता की बाध्यता नहीं
- कोई व्यावसायिक अनुभव जरूरी नहीं
- खरीद का न्यूनतम तीन गुना निवेश (पत्रिकाओं हेतु) अपेक्षित

रु. 12/-

रु. 22/-

रु. 15/-

सम्पर्क

रोज़गार समाचार
फोन: 011-24365610
ई-मेल: sec-circulation-moib@gov.in

पत्रिका एकक
ई-मेल: pdjucir@gmail.com
फोन: 011-24367453

पत्र भेजें : रोज़गार समाचार, कक्ष संख्या-779, 7वां तल, सूचना भवन, लोधी रोड, नई दिल्ली-110003

प्रकाशक और मुद्रक: मोनीदीपा मुखर्जी, महानिदेशक, प्रकाशन विभाग, सूचना भवन, सीजीओ कॉम्पलेक्स, लोधी रोड, नई दिल्ली-110003.
मुद्रक : जे.के. ऑफसेट, बी-278, ओखला इंडस्ट्रीयल एरिया, फेस-1, नई दिल्ली-110020, वरिष्ठ संपादक: ललिता खुराना